राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

क्रांति समय

कार्यालय ऑफिस

क्रांति समय दैनिक समाचार में
प्रेसनोट, नोटिस, वेपार संबंधित संपर्क करें
पता:- एस.टी.पी.आई-सुरत-395023
संपर्क नं.-7490923915
ईमेल:-info.krantisamay@gmail.com

सुरत गुजरात से प्रकाशित, मुंबई, उत्तरप्रदेश, बिहार, राजस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तरांचल, उत्तराखंड, दिल्ली, हरियाणा में प्रकाशित

सुरत-गुजरात, संस्करण रविवार 18 जनवरी 2026 वर्ष-8,अंक-322 पृष्ठ-08 मूल्य-01 रूपये

Website : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

बरखी (प्रथम पुण्यतिथि)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

अशांति के कोलाहल में शांति का शंखनाद है मौन

मौनी अमावस्या पर मौन धारण करना मन को एकाग्र करने का सशक्त साधन है। मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष अपने ही मन से है। वाणी जब निरंतर सक्रिय रहती है, तो मन भी बाहर की ओर दौड़ता रहता है। मौन उसे भीतर लौटने का अवसर देता है। इस दिन यदि व्यक्ति कुछ समय के लिए पूर्ण मौन रखे, ध्यान करे, जप करे या केवल श्वास के आवागमन को साक्षी भाव से देखे, तो आत्मा पर जमी धूल स्वतः झड़ने लगती है। यही आत्मशुद्धि है, यही साधना का सार है। मौन जीवन को सुंदर बनाता है क्योंकि वह अनावश्यक को हटाता है। जहाँ मौन है, वहाँ क्रोध, ईर्ष्या और द्वेष स्वतः क्षीण हो जाते हैं। मौन शक्ति का केंद्र इसलिए है क्योंकि वह ऊर्जा को व्यर्थ बिखरने नहीं देता।

(लेखक - ललित गर्ग)

मौनी अमावस्या- 18 जनवरी, 2026)

मौन केवल शब्दों का अभाव नहीं है, वह आत्मा की सबसे सघन भाषा है। 18 जनवरी 2026 को आने वाली मौनी अमावस्या इसी मौन की महत्ता को जीवन के केंद्र में प्रतिष्ठित करने का पावन, सिद्ध एवं पवित्र अवसर है। भारतीय आध्यात्मिक परंपरा में मौन को जितना ऊँचा स्थान दिया गया है, उतना शायद किसी अन्य साधना को नहीं। ऋषियों ने कहा है कि जहाँ शब्द समाप्त होते हैं, वहीं से सत्य आरंभ होता है। मौन वही बिंदु है जहाँ मन की चंचल तरंगें थमती हैं और चेतना का निर्मल सरोवर प्रकट होता है। यह जीवन का सौंदर्य भी है और ऊर्जा का अक्षय भंडार भी। मौन में शक्ति संचित होती है, दिशा मिलती है और अध्यात्म को गति प्राप्त होती है। मौनी अमावस्या का संबंध केवल कैलेंडर की एक तिथि से नहीं, बल्कि जीवन के गहरे अनुशासन से है। यह दिन मनुष्य को बाहरी कोलाहल से हटाकर अंतर्मुखी होने का निमंत्रण देता है। मौन का अर्थ यह नहीं कि व्यक्ति निष्क्रिय हो जाए, बल्कि यह कि उसकी चेतना जाग्रत हो जाए। जब वाणी विश्राम करती है, तब विवेक बोलने लगता है। मनुष्य का मन, जो सामान्यतः अतीत और भविष्य के बीच भटकता रहता है, मौन में वर्तमान में टिकना सीखता है। यही एकाग्रता आत्मशुद्धि का द्वार खोलती है। मौन साधना है, तप है और जीवन की आध्यात्मिक ऊँचाई है।

मौनी अमावस्या को अमावस्या का भी विशेष महत्व है। अमावस्या का अंधकार बाहरी रूप से भले ही रिक्तता का संकेत दे, परंतु आध्यात्मिक दृष्टि से यह भीतर की यात्रा का प्रतीक है। जब चंद्रमा अदृश्य होता है, तब मनुष्य के भीतर का चंद्र प्रकट होने की संभावना बनती है। मौन और अमावस्या का यह संयोग आत्मचिंतन को अत्यंत प्रभावशाली बना देता है। इस दिन किया गया मौन-व्रत केवल वाणी का संयम नहीं, बल्कि विचारों का परिष्कार भी है। विचारों की शुद्धि से ही कर्म शुद्ध होते हैं और कर्मों की शुद्धि से जीवन पवित्र बनता है। मौनी अमावस्या का एक अत्यंत महत्वपूर्ण पक्ष पितृ तर्पण और पिंडदान से जुड़ा है। भारतीय संस्कृति में पितरों को केवल अतीत की स्मृति नहीं माना गया, बल्कि वे हमारी चेतना की जड़ें हैं। जिनसे हमें जीवन मिला, जिनके संस्कार हमारे रक्त में प्रवाहित हैं, उनके प्रति कृतज्ञता व्यक्त करना आध्यात्मिक दायित्व है। इस दिन पवित्र नदियों के तट पर या श्रद्धा के साथ घर में किया गया तर्पण और पिंडदान पितरों की आत्मा को शांति प्रदान करता है। ऐसा माना जाता है कि मौनी अमावस्या के दिन किए गए तर्पण से पितृलोक में विशेष संतोष और तृप्ति का संचार होता है।

तर्पण केवल जल अर्पण की क्रिया नहीं है, वह स्मरण की साधना है। जब संतति अपने पूर्वजों को श्रद्धा से याद करती है, तो एक अदृश्य सेतु बनता है जो पीढ़ियों को जोड़ता है। पिंडदान के माध्यम से पितरों की अधूरी कामनाओं को पूर्णता की दिशा मिलती है और उन्हें मोक्ष की ओर अग्रसर होने में सहायता प्राप्त होती है। शास्त्रों में कहा गया है कि मौनी अमावस्या के दिन किया गया पिंडदान अनेक अमावस्याओं के फल के बराबर होता है, क्योंकि इस दिन मौन की ऊर्जा कर्म को कई गुना प्रभावशाली बना देती है। इस दिन मौन के साथ किया गया तर्पण साधक के भीतर भी गहरा परिवर्तन लाता है। जब व्यक्ति मौन रहकर पितरों का स्मरण करता है, तो उसका अहंकार स्वतः झुक जाता है। उसे यह बोध होता है कि वह अकेला नहीं है, बल्कि एक लंबी परंपरा की कड़ी है। यह बोध जीवन में विनम्रता, करुणा और संतुलन को जन्म देता है। मौन की शांति में किया गया स्मरण केवल पितरों को ही नहीं, स्वयं साधक को भी मुक्त करता है। वह अपने भीतर जमी अनेक ग्रंथियों को खोल पाता है।

मौनी अमावस्या पर मौन धारण करना मन को एकाग्र करने का सशक्त साधन है। मनुष्य का सबसे बड़ा संघर्ष अपने ही मन से है। वाणी जब निरंतर सक्रिय रहती है, तो मन भी बाहर की ओर दौड़ता रहता है। मौन उसे भीतर लौटने का अवसर देता है। इस दिन यदि व्यक्ति कुछ समय के लिए पूर्ण मौन रखे, ध्यान करे, जप करे या केवल श्वास के आवागमन को साक्षी भाव से देखे, तो आत्मा पर जमी धूल स्वतः झड़ने लगती है। यही आत्मशुद्धि है, यही साधना का सार है। मौन जीवन को सुंदर बनाता है क्योंकि वह अनावश्यक को हटाता है। जहाँ मौन है, वहाँ क्रोध, ईर्ष्या और द्वेष स्वतः क्षीण हो जाते हैं। मौन शक्ति का केंद्र इसलिए है क्योंकि वह ऊर्जा को व्यर्थ बिखरने नहीं देता। जो ऊर्जा शब्दों में नष्ट होती है, वही मौन में संचित होकर साधना बन जाती है। इसी संचित ऊर्जा से व्यक्ति अपने जीवन को ऊँचाई देता है। मौन अध्यात्म की गति है क्योंकि यह सीधे आत्मा से जुड़ता है, किसी माध्यम की आवश्यकता नहीं होती।

वस्तुतः आध्यात्मिक क्षेत्र में मौन का एक विशिष्ट और अपरिहार्य स्थान है। यह कोई साधारण चुप्पी नहीं, बल्कि एक अत्यंत व्यवस्थित और वैज्ञानिक साधना है, जिसे अपनाकर साधक अपनी चित्त-वृत्तियों को विक्षेप से बचा लेता है। मौन के अभ्यास से जीवनी शक्ति और प्राण शक्ति परिपुष्ट होती है। व्यक्ति अपने भीतर एक नई स्फूर्ति, नई ताजगी और आंतरिक ऊर्जा का अनुभव करता है। निरंतर बोलते रहने से न केवल वाणी की प्रभावशीलता क्षीण होती है, बल्कि उससे मस्तिष्क की सूक्ष्म शक्तियों का भी अनावश्यक क्षय होता है। मौन के द्वारा वाणी सुरक्षित होती है, परिष्कृत होती है और उसमें गहन प्रभाव उत्पन्न होता है। अध्यात्म क्षेत्र में जिस वाक्-सिद्धि की चर्चा की जाती है, उसका मूल आधार भी मौन-साधना ही है। कम बोलने वाला व्यक्ति जब बोलता है, तो उसके शब्दों में स्वतः ही वजन और प्रभाव आ जाता है।

महात्मा गांधी अपने जीवन में मौन को विशेष महत्व देते थे। उनकी आत्मकथा से ज्ञात होता है कि वे प्रति सप्ताह एक दिन मौन रखते थे। उनका अनुभव था कि मौन से उन्हें गहरा विश्राम मिलता है और कार्य करने के लिए नई शक्ति का संचार होता है। इसी प्रकार आचार्य तुलसी भी प्रायः प्रतिदिन नियमित रूप से मौन-साधना करते थे। वे कहा करते थे कि मौन से उन्हें अपूर्व आंतरिक आनंद की अनुभूति होती है। यह एक सुनिश्चित तथ्य है कि यदि मौन-साधना के साथ मनोवृत्तियों को आत्मचिंतन में लगा दिया जाए, तो आध्यात्मिक आनंद का निर्झर स्वतः प्रवाहित होने लगता है। महान संत महर्षि रमण के विषय में प्रसिद्ध है कि वे प्रायः मौन ही रहते थे, किंतु उस मौन में इतनी गहन संप्रेषण शक्ति थी कि उनके समीप आने वाले जिज्ञासुओं की जटिलतम समस्याओं का समाधान बिना शब्दों के ही हो जाता था। वस्तुतः मौन एक अंतर्भाषा है-ऐसी भाषा जो शब्दों से परे होकर सीधे आत्मा से संवाद करती है। प्राचीन ऋषि-मुनि अपने शिष्यों को मौन के माध्यम से ही उपदेश देते थे। मौन-साधना से वे सभी सिद्धियाँ प्राप्त की जा सकती हैं, जिनकी प्राप्ति के लिए अन्य कठिन योग-साधनाओं का सहारा लेना पड़ता है। मौन, साधना का शिखर भी है और साधना का आधार भी।

मौनी अमावस्या हमें यह सिखाती है कि जीवन की वास्तविक प्रगति बाहरी उपलब्धियों से नहीं, भीतर की शांति से मापी जाती है। इस दिन का संदेश स्पष्ट है कि कुछ क्षण रुकिए, मौन में उतरिए और अपने मूल से जुड़िए। पितरों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त कर, उनके लिए तर्पण और पिंडदान कर, और स्वयं के लिए मौन साधना अपनाकर मनुष्य अपने जीवन को संतुलित और सार्थक बना सकता है। यह दिन हमें स्मरण कराता है कि मौन कोई रिक्तता नहीं, बल्कि पूर्णता है, कोई कमजोरी नहीं, बल्कि अपार शक्ति है। अंततः मौनी अमावस्या आत्मा का पर्व है। यह न केवल पितरों को मोक्ष की दिशा में ले जाने वाला अवसर है, बल्कि जीवित मनुष्य के लिए भी आंतरिक मुक्ति का द्वार है। मौन के माध्यम से मनुष्य अपने भीतर के शोर से मुक्त होता है, और जब भीतर शांति स्थापित होती है, तभी जीवन में सत्य, करुणा और चेतना का प्रकाश फैलता है। मौनी अमावस्या हमें इसी प्रकाश की ओर अग्रसर होने का मौन आमंत्रण देती है। अशांति के कोलाहल में शांति का शंखनाद है मौन।

(लेखक, पत्रकार, स्तंभकार)

(यह लेखक के व्य क्तिगत विचार हैं इससे संपादक का सहमत होना अ निवार्य नहीं है)

संपादकीय

महायुति की महासफलता

महाराष्ट्र में हाल ही में संपन्न स्थानीय निकाय चुनावों में भाजपा के नेतृत्व में महायुति गठबंधन की महत्वपूर्ण सफलता ने राज्य में बड़े राजनीतिक बदलाव का संकेत दे दिया है, जो आने वाले दशकों में राज्य की भगवा राजनीति की विरासत पर वर्चस्व की दिशा भी तय करेगा। राज्य के विधानसभा चुनावों में भाजपा नीत महायुति गठबंधन द्वारा विपक्ष को करारी शिकस्त देने के एक साल से कुछ अधिक समय के बाद अब सत्तारूढ़ गठबंधन ने राज्यव्यापी स्थानीय निकाय चुनावों में अपना दबदबा कायम कर लिया है। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दशकों तक शिवसेना के वर्चस्व वाले बहुचर्चित बृहन्मुंबई नगर निगम यानी बीएमसी के चुनावों में भाजपा सबसे बड़ी पार्टी बनकर उभरी है। निश्चित रूप से इस हालिया परिणाम से आने वाले सालों में मुंबई की सत्ता में निर्णायक बदलाव आएगा। अविभाजित पार्टी के रूप में, बाल ठाकरे द्वारा स्थापित शिवसेना ने दशकों तक भारत की वित्तीय राजधानी पर शासन किया। लेकिन अब भाजपा की अगुवाई में शिवसेना से अलग हुए एकनाथ शिंदे के नेतृत्व वाला गुट बीएमसी में अहम भूमिका निभाएगा। जैसे महाराष्ट्र सरकार में एकनाथ शिंदे उप मुख्यमंत्री की भूमिका निभा रहे हैं, वैसी बीएमसी में पार्टी की भूमिका रहेगी। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि दो दशक बाद ठाकरे भाइयों की पार्टियों के एकजुट होकर लड़ने के बावजूद राज्य में महायुति की लहर रुकी नहीं। यही वजह है कि पूर्व मुख्यमंत्री उद्धव ठाकरे की शिवसेना और राज ठाकरे की महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना की हाल ही में सामने आई प्रतीकात्मक एकता चुनावी सफलता में बदलने में कामयाब नहीं हो सकी। वहीं दूसरी ओर शरद पवार और उनके भतीजे अजीत पवार के नेतृत्व वाले राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के गुटों के बीच गठबंधन पूणे में बुरी तरह विफल हो गया। उल्लेखनीय है कि महाराष्ट्र की राजनीति में बीएमसी चुनाव परिणामों के गहरे निहितार्थ रहे हैं। बहुचर्चित बृहन्मुंबई नगर निगम यानी बीएमसी को देश का सबसे धनी नगर निगम होने का गौरव हासिल है। जिसके चलते इसका राजनीतिक महत्व बहुत अधिक है। महाराष्ट्र की राजनीति में बीएमसी के महत्व का अंदाजा इसके बजट से लगाया जा सकता है। इसका बजट वर्ष 2025-26 के लिये 74,427 करोड़ रुपये का है, जो हिमाचल प्रदेश और गोवा जैसे राज्यों के बजट से भी अधिक है। ऐसे में हालिया स्थानीय निकाय चुनाव में भाजपा नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन के वर्चस्व के बाद स्थानीय निकाय की नई संरचना का मुंबई के शासन, नीतिगत प्राथमिकताओं और महाराष्ट्र की राजनीतिक गतिशीलता पर दूरगामी प्रभाव पड़ेगा। यहां सकारात्मक पहलू यह भी है कि जनता ने विकास की आकांक्षा को तरजीह दी और क्षेत्रीय संकीर्णता के नारे को खारिज किया। चुनाव परिणाम मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस के विकास के वादे का समर्थन करते हैं। हालांकि, ठाकरे परिवार का 'मराठी मानुष' कार्ड ज्यादा मतदाताओं को आकर्षित नहीं कर पाया। एक बार फिर महाराष्ट्र के स्थानीय निकाय चुनाव परिणामों में कांग्रेस हाशिये पर नजर आई। ऐसे में यह कांग्रेस को फिर से आत्ममंथन का मौका देता है। निर्विवाद रूप से महाराष्ट्र में स्थानीय निकाय चुनाव परिणामों ने विपक्ष के महा विकास अघाड़ी गठबंधन के भविष्य पर प्रश्नचिन्ह लगा दिया है, जिसके घटक दल पहले ही महाराष्ट्र की राजनीति में प्रासंगिक बने रहने के लिये संघर्ष कर रहे हैं। राजनीतिक पंडित कह रहे हैं कि महाराष्ट्र की राजनीति में बरसों तक वर्चस्व रखने वाले ठाकरे और पवार के राजनीतिक परिवार को राज्य में अपनी प्रासंगिकता बनाये रखने के लिये नये सिरे से प्रयास करने होंगे।

विकास की रफ्तार और विश्वास की पटरी- भारतीय रेल

(लेखक- विनोद कुमार सिंह)

आदिशक्ति माँ काली से माँ कामाख्या तक,आधुनिक भारत की रेल-यात्रा की स्वर्णिम गाथा मालदा की धरती पर उस दिन केवल उद्घाटन और शिलान्यास का औपचारिक दृश्य नहीं रचा गया, बल्कि भविष्य की ओर बढ़ते भारत की एक सशक्त तस्वीर उकेरी गई*

पश्चिम बंगाल और उत्तर-पूर्वी भारत को जोड़ने वाला यह क्षण उस दृष्टि का प्रतीक बना,जिसमें संपर्क को ही समृद्धि की पहली शर्त माना गया है। भारत की विकास यात्रा में रेलवे की भूमिका सदैव केंद्रीय रही है।यह केवल आवागमन का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक गतिशीलता, आर्थिक विस्तार और राष्ट्रीय एकता की सबसे मजबूत कड़ी है।आज पं0 बंगाल की ऐतिहासिक घरती मालदा से प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी ने ₹3,250 करोड़ से अधिक की रेल और सड़क अवसंरचना परियोजनाओं के लोकार्पण व शिलान्यास किया।जिससे यह स्पष्ट हो गया कि विकास अब केवल योजनाओं की भाषा नहीं,बल्कि धरातल पर उतरती हुई वास्तविकता है।प्रधानमंत्री द्वारा इस अवसर पर दिया गया औजस्वी उद्बोधन में महज़ घोषणाओं का संग्रह नहीं था।उसमें यह भाव स्पष्ट झलकता था कि पश्चिम बंगाल की प्रगति को अब टुकड़ों में नहीं,बल्कि समग्र दृष्टि से आगे बढ़ाया जा रहा है।नई रेल सेवाएँ,उन्नत रखरखाव सुविधाएँ और आधुनिक अवसंरचना—ये सभी प्रयास उस विश्वास को मजबूत करते हैं कि विकास का लाभ अंतिम पंक्ति में खड़े व्यक्ति तक पहुँचना चाहिए।

नई रेल सेवाओं के आरंभ से आम नागरिक की यात्रा सुगम होगी, व्यापार और वाणिज्य को गति मिलेगी तथा युवाओं के लिए रोजगार और कौशल विकास के अवसर सृजित होंगे।रेल अब केवल दूरी घटाने का माध्यम नहीं,बल्कि संभावनाओं को जोड़ने का सेतु बनती जा रही है।आज के इस पूरे कार्यक्रम का सबसे भावनात्मक और प्रतीकात्मक पक्ष देश की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का शुभारंभ रहा।आदिशक्ति माँ काली की धरती से माँ कामाख्या की धरती तक दौड़ती यह ट्रेन केवल दो भौगोलिक बिंदुओं को नहीं जोड़ती, बल्कि आस्था, संस्कृति और आधुनिकता को एक सूत्र में पिरोती है।जो भारतीय रेल के इतिहास में एक नया अध्याय है,जहाँ तकनीक और परंपरा एक साथ यात्रा कर रही हैं। वंदे भारत स्लीपर ट्रेन लंबी दूरी की यात्रा की परिभाषा बदलने जा रही है।

आराम,सुरक्षा और आधुनिक सुविधाओं से युक्त यह ट्रेन उस भारत की झलक देती है,जो विकसित राष्ट्र के रूप में अपने परिवहन मानकों को नए स्तर पर ले जा रहा है। प्रधानमंत्री के उद्बोधन में यह भाव उभरकर सामने आया कि आज का भारत अब दूसरों की ओर देखकर आकांक्षा नहीं करता,बल्कि स्वयं उदाहरण गढ़ रहा है।कभी विदेशी ट्रेनों की तस्वीरें देखकर मन में उठने वाली चाह अब आत्मविश्वास में बदल चुकी है। 'मेक इन इंडिया' की भावना से निर्मित वंदे भारत ट्रेनें इस आत्मनिर्भरता का ठोस प्रमाण हैं। विदेशी पर्यटकों द्वारा भारतीय रेल के बदलते स्वरूप को कैमरे में कैद किया जाना इस परिवर्तन की वैश्विक स्वीकार्यता को दर्शाता है।

भारतीय रेल आज व्यापक परिवर्तन के दौर से गुजर रही है। विद्युतीकरण,स्टेशन पुनर्विकास,तेज़ रफ्तार ट्रेनों का विस्तार और आधुनिक तकनीक का समावेश—ये सभी प्रयास रेल को अधिक सुरक्षित, स्वच्छ और पर्यावरण-अनुकूल बना रहे हैं।देशभर में 150 से अधिक वंदे भारत ट्रेनों का संचालन इस बदलाव की ठोस तस्वीर प्रस्तुत करता है।

इसी क्रम में पश्चिम बंगाल को मिली चार नई अमृत भारत एक्सप्रेस ट्रेनें—न्यू जलपाईगुड़ी-नागरकोइल, न्यू जलपाईगुड़ी-तिरुच्चिरापल्ली, अलीपुरद्वार-बेंगलुरु और अलीपुरद्वार-मुंबई—उत्तर बंगाल की कनेक्टिविटी को ऐतिहासिक मजबूती देंगी। ये ट्रेनें केवल यात्रियों को नहीं, बल्कि संभावनाओं को दक्षिण और पश्चिम भारत तक पहुँचाएँगी।गंगासागर, दक्षिणेश्वर और कालीघाट जैसे तीर्थस्थलों की यात्रा अब और सहज होगी,वहीं तमिलनाडु और महाराष्ट्र जैसे राज्यों से संपर्क मजबूत होने से व्यापार, शिक्षा और रोजगार के नए द्वार खुलेंगे।यह संपर्क ही वह आधार है, जिस पर आर्थिक विकास की स्थायी इमारत खड़ी होती है।

मोदी के उद्बोधन में यह बात विशेष रूप से रेखांकित हुई कि भारतीय रेल अब केवल आधुनिक नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भी बन चुकी है। आज भारत अमेरिका और यूरोप से अधिक लोकोमोटिव का निर्माण कर रहा है और यात्री ट्रेन व मेट्रो कोच अनेक देशों को निर्यात कर रहा है। यह उपलब्धि देश की तकनीकी क्षमता,औद्योगिक आत्मविश्वास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा में उसकी सशक्त उपस्थिति को दर्शाती है।

मालदा कार्यक्रम के अंतर्गत जिन चार प्रमुख रेल परियोजनाओं की आधारशिला रखी गई—बलुरघाट- हिली नई रेल लाइन,न्यू जलपाईगुड़ी में अत्याधुनिक फ्रेट रखरखाव सुविधा,सिलीगुड़ी लोको शेड का उन्नयन और जलपाईगुड़ी जिले में वंदे भारत ट्रेन रखरखाव सुविधाओं का आधुनिकीकरण—वे उत्तर बंगाल के भविष्य को नई दिशा देंगी।यात्री और माल परिवहन की क्षमता बढ़ेगी, लॉजिस्टिक्स अधिक दक्ष होगी और स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर सृजित होंगे।इसके साथ ही न्यू कूचबिहार- बमनहाट और न्यू कूचबिहार- बॉक्सीरहाट रेल खंडों का विद्युतीकरण राष्ट्र को समर्पित किया जाना इस बात का संकेत है कि स्वच्छ और ऊर्जा-कुशल परिवहन अब विकास नीति का अभिन्न अंग बन चुका है।

समग्र रूप से देखें तो मालदा से शुरू हुई यह पहल केवल एक दिन का आयोजन नहीं,बल्कि आने वाले दशकों की विकास यात्रा का संकेत है। प्रधानमंत्री का उद्बोधन इस तथ्य को बार-बार रेखांकित करता है कि भारत को जोड़ना प्राथमिकता है और दूरियों को कम करना ही नही वह तो एक राष्ट्रीय मिशन है - जो माँ काली से माँ कामाख्या तक दौड़ती वंदे भारत स्लीपर ट्रेन इसी मिशन की सबसे सशक्त प्रतीक बनकर सामने आती है—जहाँ आस्था, आधुनिकता और विकास एक साथ आगे बढ़ रहे हैं।यही वह भारत है,जो अपनी जड़ों से जुड़ा रहकर,भविष्य की ओर पूरे आत्मविश्वास के साथ बढ़ रहा है।आदिशक्ति माँ काली से माँ कामाख्या तक,आधुनिक भारत की रेल-यात्रा की स्वर्णिम गाथा मालदा की धरती पर उस दिन केवल उद्घाटन और शिलान्यास का औपचारिक दृश्य नहीं रचा गया, बल्कि भविष्य की ओर बढ़ते भारत की एक सशक्त तस्वीर उकेरी गई।

अपूर्णता से पूर्णता की ओर

मनुष्य का बाह्य जीवन वस्तुतः उसके आंतरिक स्वरूप का प्रतिबिम्ब मात्र होता है। जैसे ड्राइवर मोटर की दिशा में मनचाहा बदलाव कर सकता है। उसी प्रकार, जीवन के बाहरी ढर्रे में भारी और आश्चर्यकारी परिवर्तन हो सकता है। वाल्मीकि और अंगुलिमाल जैसे भयंकर डाकू क्षण भर में परिवर्तित होकर इतिहास प्रसिद्ध संत बन गये। गणिका और आम्रपाली जैसी वीरांगनाओं को सती-साध्वी का प्रातः स्मरणीय स्वरूप ग्रहण करते देर न लगी। वामित्र और भतृहरि जैसे विलासी राजा उच्च कोटि के योगी बन गये। नृशंस अशोक बौद्ध धर्म का महान प्रचारक बना। तुलसीदास की कामुकता का भक्ति भावना में परिणत हो जाना प्रसिद्ध है। ऐसे असंख्य चरित्र इतिहास में पढ़े जा सकते हैं। छोटी श्रेणी में छोटे-मोटे आश्चर्यजनक परिवर्तन नित्य ही देखने को मिल सकते हैं। इससे स्पष्ट है कि जीवन का बाहरी ढर्रा जो चिर प्रयत्न से बना हुआ होता है, विचारों में भावनाओं में परिवर्तन आते ही बदल जाता है। मित्र को शत्रु बनते, शत्रु को मित्र रूप में परिणत होते, दुष्ट को संत बनते, संत को दुष्टता पर उतरते, कंजूस को उदार, उदार को कंजूस, विषयी को तपस्वी, तपस्वी को विषयी बनते देर नहीं लगती। आलसी उद्योगी बनते हैं और उद्योगी आलस्यग्रस्त होकर दिन बिताते हैं। दुगरुणियों में सद्गुण बढ़ते और सद्गुणी में दुगरुण उपजते देर नहीं लगती। इसका एकमात्र कारण इतना ही है कि उनकी विचारधारा बदल गई, भावनाओं में परिवर्तन हो गया। संसार का जो भी भला-बुरा स्वरूप हमें दृष्टिगोचर हो रहा है, समाज में जो कुछ भी शुभ-अशुभ दिखाई पड़ रहा है, व्यक्ति के जीवन में जो कुछ उत्कृष्ट-निकृष्ट है, उसका मूल कारण उसकी अंतःस्थिति ही होती है। धनी-निर्धन, रोग-नीरोग, अकाल मृत्यु-दीर्घ जीवन, मूर्ख-विद्वान, घृणित-प्रतिष्ठत और सफल-असफल का बाहरी अंतर देखकर उसके व्यक्तित्व का मूल्यांकन किया जाता है। यह बाहरी भली-बुरी परिस्थितियां मनुष्य के मनोबल, आस्था और अंतःप्रेरणाओं की प्रतीक हैं। भाग्य यदि कभी कुछ करता होगा तो निश्चय ही उसे पहले मनुष्य की मनोरुचि में ही प्रवेश करना पड़ता होगा, जिसकी अंतःगतिविधियां सही दिशा में चलने लगीं हैं। किंतु जिसका मानसिक स्तर चंचलता, अवसाद, अवास, आलस्य, आवेश, दैन्य आदि से दूषित हो रहा है, उसके लिए अच्छी परिस्थितियां और अच्छे साधन उपलब्ध होने पर भी दुर्गति का ही सामना करना पड़ेगा।

विचार मंथन

मनरेगा के बाद खाद्य सुरक्षा कानून में सुधार?

(लेखक - सनत जैन)

भारत में मनरेगा (महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम) को गरीबी उन्मूलन और आजीविका सुरक्षा की रीढ़ माना जाता है। इस कानून ने ग्रामीण भारत में न्यूनतम आय, पलायन पर नियंत्रण और संकट के समय गरीबों को सहारा देने में एक ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। लेकिन रोजगार देकर भूख और कुपोषण की समस्या का स्थायी समाधान संभव नहीं था। यही कारण है, मनरेगा के बाद राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम, 2013 को एक बड़े सामाजिक अधिकार के रूप में भारत में संविधान अधिकार के रूप में इसे लागू किया गया। केंद्र सरकार बदलती आर्थिक-सामाजिक परिस्थितियों में इस कानून में सुधार करते हुए इसे नए स्वरूप में लाना चाहती है। खाद्य सुरक्षा कानून का उद्देश्य देश की दो-तिहाई आबादी को सस्ती दरों पर अनाज उपलब्ध कराना था। इसने भूख के खिलाफ कानूनी अधिकार की अवधारणा के संवैधानिक स्वरूप को मजबूत किया था। बीते एक दशक में जनसंख्या की बढ़ती संरचना, शहरीकरण, प्रवासी श्रमिकों की संख्या और महँगाई मे बड़ा बदलाव आया है। आम आदमियों के जीवन यापन के तरीके बदल गए हैं। लेकिन इस कानून में कोई सुधार नहीं हुआ है। इस योजना में लाभार्थियों की संख्या 2011 की जनगणना के आधार पर तय है। जिसके कारण करोड़ों गरीब और ज़रूरतमंद वर्तमान समय में इस योजना के दायरे से बाहर हैं। मनरेगा और खाद्य सुरक्षा कानून के बीच तालमेल नहीं होने से इन दोनों योजनाओं का सामा जिक और आ र्थिक विकास में बड़ा प रिवर्तन देखने को नहीं मिला। मनरेगा मजदूरी कई राज्यों में न्यूनतम मजदूरी से भी कम है। मजदूर के भुगतान में देरी बड़ी आम बात है। 100 दिन का रोजगार भी इस योजना में नहीं मिल पा रहा था। इसके बाद भी केंद्र सरकार ने जो नया संशोधन किया है। उसके अनुसार 125 दिन रोजगार देने का प्रावधान किया गया है। जब मजदूरी ही समय पर नहीं मिलती है। ऐसी स्थिति में केंद्र सरकार ने 40 फ़ीसदी राशि देने का भार राज्यों पर डाल दिया है। ऐसी स्थिति में मनरेगा की पुरानी योजना तथा जी राम जी की नई योजना दोनों सवालों के घेरे में बनी हुई है। ऐसी स्थिति में खाद्य सुरक्षा प्रणाली पर गरीबों की निर्भरता ओर भी बढ़ जाती है।जरूरी है कि दोनों कानूनों को अलग-अलग नहीं, बल्कि सामाजिक सुरक्षा के लिए संयुक्त रूप से दोनों योजनाओं को एक स्वरूप में देखा जाए। 2027 में जनगणना के आंकड़े मिलेंगे, उसके आधार पर योजना का दायरा बढ़ाया जाए। नई जनगणना के आधार पर लाभार्थियों की संख्या बढ़ाई जाए। शहरी गरीबों को भी प्रभावी रूप से इस योजना में शामिल किया जाए। खाद्य सुरक्षा कानून को केवल गेहूं-चावल तक सीमित ना रखकर दाल, तेल और पौष्टिक आहार को सार्वजनिक वितरण प्रणाली को संवैधानिक अधिकार में शामिल किया जाए। कुपोषण की समस्या भारत में दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। 'वन नेशन वन राशन कार्ड' की योजना को ज़मीनी स्तर पर बेहतर ढंग से लागू कर प्रवासी श्रमिकों को वास्तविक राहत दी जाए। जी राम जी की नई योजना और खाद्य सुरक्षा कानून की पारदर्शिता और जवाबदेही को तय किया जाए। तकनीक के नाम पर आधारित गड़बड़ियों को रोका जाए। रोजगार और वितरण की व्यवस्था को कानूनी अधिकार से जोड़ा जाए। यदि इसमें किसी व्यक्ति द्वारा कोई गड़बड़ी की जाती है। उसके लिए कड़ी सजा का प्रावधान हो। शिकायत निवारण के तंत्र को मजबूत किया जाए। ताकि गरीबों के न्यूनतम अधिकार को संवैधानिक रूप से सुनिश्चित किया जा सके। मनरेगा ने ग्रामीण अंचलों के लोगों को काम का अधिकार देकर ग्रामीण अर्थ-व्यवस्थ और स्थानीय रोजगार बढ़ाने की दिशा में योगदान दिया। दिया। इसके लिए पंचायती राज व्यवस्था से इसे जोड़ा गया था। अभी जो नया कानून लागू किया गया है, उसमें यह प्रावधान नहीं है। केंद्र सरकार ने अपने हाथ में सारे अधिकार ले लिए हैं। इसमें सुधार की जरूरत है। इसी तरह से खाद्य सुरक्षा कानून मे जीवन यापन के लिए न्यूनतम राशन अथवा भोजन का अधिकार दिया जाना आवश्यक है। आवश्यकता है, दोनों कानून 2027 की जनगणना के आधार पर आर्थिक सामाजिक स्थिति पर समयानुकूल सुधारों को मजबूती के साथ कानूनी अ धिकार में शामिल किया जाए। भारत कल्याणकारी योजनाओं वाला देश' ही नहीं, बल्कि सम्मान जनक जीवन की गारंटी देने वाला लोकतांत्रिक देश के रूप में सारी दुनिया में यह जाना जाए। भारत सबसे बड़ी युवा आबादी वाला देश है। ऐसी स्थिति में भारत को युवाओं के लिए ज्यादा से ज्यादा श्रम और रोजगार से जोड़ने के प्रयास मैं दोनों ही कानूनों में बदलाव की आवश्यकता है, इससे इनकार नहीं किया जा सकता है। दोनों योजनाओं का लाभ वास्तविक रूप से गरीबों को मिले। इसके लिए सरकार को सभी पक्षों के साथ बेहतर विचार विमर्श करते हुए जनसंख्या के आधार पर प्राप्त आंकड़ों के अनुसार सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए परिवर्तन करने की जरूरत है। इसके लिए कुछ समय इंतजार भी करना पड़े, तो सरकार को करना चाहिए। ताकि भ विष्य में बेहतर और दीर्घकालीन परिणाम प्राप्त हों।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

भारत-यूरोपीय संघ एफटीए महत्त्वपूर्ण, देशहित से कोई समझौता नहीं : गोयल

- 27 जनवरी को व्यापार वार्ता पूरी होने की घोषणा संभव

नई दिल्ली ।

वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने कहा है कि भारत और यूरोपीय संघ (ईयू) के बीच प्रस्तावित मुक्त व्यापार समझौता (एफटीए) अब तक किए गए सभी व्यापार समझौतों में सबसे महत्त्वपूर्ण होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि इस समझौते में देश के हितों से कोई समझौता नहीं किया जाएगा और सभी संवेदनशील मुद्दों का समाधान भारत की संतुष्टि के अनुरूप किया जाएगा। स्टार्टअप इंडिया कार्यक्रम के अवसर पर गोयल ने कहा कि उन्होंने अब तक सात मुक्त व्यापार समझौते किए हैं और ये सभी विकसित देशों के साथ हुए हैं। भारत-ईयू एफटीए को उन्होंने इसलिए भी खास बताया क्योंकि दोनों अर्थव्यवस्थाओं के बीच सीधी प्रतिस्पर्धा बहुत कम है। उनके अनुसार यह समझौता भारत और यूरोपीय संघ, दोनों के लिए फायदे का सौदा साबित होगा। इससे एक दिन पहले वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल ने संकेत दिया था कि भारत और ईयू के बीच चल रही व्यापार वार्ता के संपन्न होने की घोषणा 27 जनवरी को की जा सकती है। एक वरिष्ठ सरकारी अधिकारी के अनुसार, प्रस्तावित समझौते में व्यापार से जुड़े सभी प्रमुख पहलुओं को शामिल किया जाएगा, हालांकि कृषि से जुड़े कुछ संवेदनशील विषयों को बातचीत से बाहर रखा गया है। गोयल ने कार्बन बॉर्डर समायोजन प्रणाली (सीबीएएम) और डेरी जैसे मुद्दों पर सरकार के रुख को स्पष्ट करते हुए कहा कि इन सभी विषयों पर भारत के हितों की पूरी रक्षा की जाएगी। उन्होंने पूर्ववर्ती सरकारों की व्यापार नीति की आलोचना करते हुए कहा कि पहले कमजोर स्थिति में समझौते किए गए, जिनसे घरेलू उद्योगों और किसानों को नुकसान हुआ। उन्होंने यह भी कहा कि आरसीईपी जैसे समझौतों में शामिल होने का अर्थ चीन के साथ एफटीए होता, जो 'मेक इन इंडिया', लघु उद्योगों और किसानों के लिए नुकसानदेह होता। गौरतलब है कि 25 से 27 जनवरी तक यूरोपीय परिषद के अध्यक्ष एंटोनियो लुइस सैंटोस दा कोस्टा और यूरोपीय आयोग की अध्यक्ष उर्सुला वॉन डेर लेयेन भारत की राजकीय यात्रा पर रहेंगे। इस दौरान वे प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ 16वें भारत-ईयू शिखर सम्मेलन की सह-अध्यक्षता करेंगे और गणतंत्र दिवस परेड में मुख्य अतिथि भी होंगे।

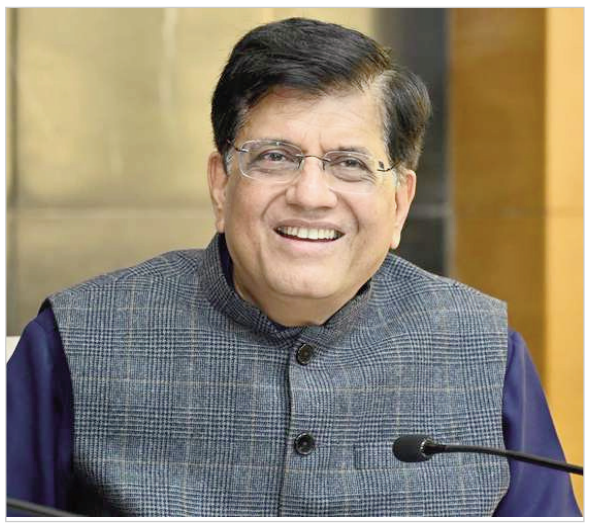

गौतमबुद्ध नगर में पेट्रोल 26 पैसे और डीजल 30 पैसे सस्ता

नई दिल्ली ।

सरकारी तेल कंपनियों के अनुसार उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर जिले में पेट्रोल 26 पैसे सस्ता होकर 94.90 रुपए प्रति लीटर और डीजल 30 पैसे गिरकर 88.01 रुपए प्रति लीटर बिक रहा है। पहाड़ी राज्य उत्तराखंड की राजधानी देहरादून में भी पेट्रोल 26 पैसे घटकर 93.43 रुपए और डीजल 31 पैसे घटकर 88.33 रुपए प्रति लीटर हो गया। बिहार की राजधानी पटना में पेट्रोल 35 पैसे बढ़कर 105.58 रुपए और डीजल 33 पैसे बढ़कर 91.82 रुपए प्रति लीटर पहुंच गया है। देश के प्रमुख शहरों में दिल्ली में पेट्रोल 94.77 रुपए और डीजल 87.67 रुपए, मुंबई में पेट्रोल 103.44 रुपए और डीजल 89.97 रुपए, कोलकाता में पेट्रोल 104.95 रुपए और डीजल 91.76 रुपए तथा चेन्नई में पेट्रोल 101.03 रुपए और डीजल 92.61 रुपए प्रति लीटर बिक रहे हैं।

आरबीआई की संशोधित लोकपाल योजना जारी, शिकायतों का होगा त्वरित निवारण

नई दिल्ली ।

भारतीय रिज़र्व बैंक (आरबीआई) ने संशोधित रिज़र्व बैंक- एकीकृत लोकपाल (ओंबड्समैन) योजना, 2026 जारी कर दी है। यह योजना 1 जुलाई, 2026 से लागू होगी और इसका उद्देश्य ग्राहकों की शिकायतों का तेज़, सरल और कम लागत वाला निवारण सुनिश्चित करना है। आरबीआई ने स्पष्ट किया है कि योजना के तहत शिकायतों की प्रक्रिया संक्षिप्त होगी और यह साक्ष्य के नियमों से बाध्य नहीं होगी। योजना का लक्ष्य ग्राहकों को तुरंत राहत और न्याय दिलाना है। आरबीआई अपने अधिकारियों को लोकपाल और उप-लोकपाल के रूप में नियुक्त करेगा। नियुक्ति अवधि सामान्यतः तीन साल होगी। लोकपाल और उप-लोकपाल बैंकिंग कानून, आरबीआई के नियम और दिशा-निर्देश ध्यान में रखते हुए शिकायतों का निवारण करेंगे। ग्राहक अपनी शिकायतें ऑनलाइन दर्ज करा सकते हैं। इसके अलावा, आरबीआई सेंट्रलाइज्ड रिसीप्ट एंड प्रोसेसिंग सेंटर के माध्यम से शिकायतों को प्राप्त और जांचेगा। लोकपाल के पास विवाद की राशि पर कोई सीमा नहीं है। वह समझौते की सुविधा दे सकता है या निर्णय पारित कर सकता है। सीधे हुए नुकसान के लिए 30 लाख रुपये तक और समय, खर्च या मानसिक पीड़ा के लिए 3 लाख रुपये तक क्षतिपूर्ति का प्रावधान है।

कच्चे जूट की बढ़ती कीमतों पर आजेएमए ने की सरकार से हस्तक्षेप की मांग

- दक्षिण बंगाल के टीडीएन-3 ग्रेड जूट की कीमतें अब तक का उच्चतम स्तर पर

कोलकाता ।

इंडियन जूट मिल्स एसोसिएशन (आईजेएमए) ने केंद्र सरकार से कच्चे जूट की बढ़ती कीमतों को नियंत्रित करने और फाइबर की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए तत्काल हस्तक्षेप की मांग की है। एसोसिएशन ने जूट आयुक्त अमृत राज को लिखे पत्र में कहा कि मिलों के पास कच्चे जूट की आपूर्ति में गंभीर कमी आ गई है। दिसंबर 2025 में भंडार में लगभग 1.25 लाख गांठों की गिरावट दर्ज की गई। वहीं, दक्षिण बंगाल के टीडीएन-3 ग्रेड जूट की कीमतें 13,000 रुपये प्रति क्विंटल तक पहुंच गई हैं, जो अब तक का उच्चतम स्तर है। आईजेएमए का कहना है कि इस आपूर्ति संकट और कीमतों में तेजी के कारण कई जूट मिलें उत्पादन बंद करने या इसे घटाने पर मजबूर हुई हैं। इसके परिणामस्वरूप लगभग 75,000 श्रमिक बेरोजगार हो चुके हैं। मिलों की यह स्थिति उद्योग की स्थिरता और जूट उत्पादक क्षेत्र के रोजगार पर गंभीर असर डाल रही है। कीमतों में वृद्धि को रोकने और जूट फाइबर की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए आईजेएमए ने सुझाव दिया है कि व्यापारियों, डीलरों, स्टॉकिस्टों और एजेंसियों को अपने कच्चे जूट के भंडार को 31 मार्च तक बेचने की अनुमति दी जाए। इसके बाद निजी स्तर पर किसी भी प्रकार का जूट व्यापार अवैध माना जाएगा। एसोसिएशन का मानना है कि इससे मिलों को आवश्यक कच्चा माल मिलेगा और श्रमिकों की रोज़गार सुरक्षा बनी रहेगी।

अप्रैल से यपूीआई के जरिए ईपीएफ निकासी संभव

- ईपीएफ खाते की पूरी राशि निकालने की अनुमति नहीं होगी

नई दिल्ली ।

कर्मचारी भविष्य निधि संगठन (ईपीएफओ) के करोड़ों अंशधारकों के लिए एक बड़ी राहत भरी खबर है। आधिकारिक सूत्रों के अनुसार ईपीएफओ इस साल अप्रैल तक ऐसी व्यवस्था लागू करने की तैयारी कर रहा है, जिसके तहत सदस्य यूनिफाइड पेमेंट इंटरफेस (यूपीआई) के माध्यम से अपनी कर्मचारी भविष्य निधि (ईपीएफ) से आंशिक निकासी कर सकेंगे। इस नई प्रणाली के जरिए निकाली गई राशि सीधे संबंधित सदस्य के बैंक खाते में जमा होगी। सूत्रों ने बताया कि इस सुविधा के अंतर्गत ईपीएफ खाते की पूरी राशि निकालने की अनुमति नहीं होगी। सदस्य अपनी पात्र राशि में से अधिकांश हिस्सा निकाल सकेंगे, जबकि न्यूनतम 25 प्रतिशत राशि भविष्य निधि खाते में सुरक्षित रखी जाएगी। इसका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि अंशधारकों को ईपीएफ पर मिलने वाले उच्च ब्याज और चक्रवृद्धि लाभ का फायदा लगातार मिलता रहे। वर्तमान में ईपीएफ पर 8.25 प्रतिशत ब्याज दर लागू है। नई व्यवस्था के तहत ईपीएफओ सदस्य अपने यूपीआई पिन का उपयोग कर सुरक्षित लेनदेन कर सकेंगे। बैंक खाते में पैसा आने के बाद उसका उपयोग यूपीआई भुगतान, एटीएम निकासी या डेबिट कार्ड के जरिए किया जा सकेगा। ईपीएफओ इस प्रणाली के सुचारू क्रियान्वयन के लिए सॉफ्टवेयर से जुड़ी तकनीकी खामियों को दूर करने में जुटा हुआ है।

सेंसेक्स और निफ्टी में वैश्विक अनिश्चितताओं के बीच सप्ताहभर उतार-चढ़ाव रहा

- सेंसेक्स 187 अंक बढ़कर 83,570 पर और निफ्टी 28 अंक बढ़कर 25,694.35 पर बंद हुआ

मुंबई ।

बीते सप्ताह भारतीय शेयर बाजार ने मिश्रित संकेत दिखाए, जिसमें ग्लोबल अनिश्चितताओं, जियोपॉलिटिकल तनाव और विदेशी निवेशकों के लगातार आउटफ्लो के दबाव के बीच सेंसेक्स और निफ्टी लगभग सपाट स्तर पर बंद हुए। हफ्ते की शुरुआत सोमवार को बाजार में कमजोरी के साथ हुई। विदेशी निवेशकों की लगातार निकासी, अमेरिकी टैरिफ बढ़ाने की आशंकाएँ और वैश्विक जियोपॉलिटिकल अनिश्चितताओं के कारण सेंसेक्स शुरुआती कारोबार में 455.35 अंक गिरकर 83,120.89 पर आ गया। निफ्टी भी 135.35 अंक की गिरावट के साथ 25,547.95 पर पहुंचा। हालांकि दिन के अंत तक सेंसेक्स और निफ्टी में सुधार देखा गया और दोनों इंडेक्स मजबूत बढ़त के साथ बंद हुए। मंगलवार को बाजार ने शुरुआती तेजी दिखाई, लेकिन विदेशी निधियों की निरंतर निकासी और ब्लू-चिप शेयरों में बिकवाली के कारण दिन के अंत में सेंसेक्स 250.48 अंक गिरकर 85,627.69 पर और निफ्टी 57.95 अंक गिरकर 26,732.30 पर बंद हुआ। बुधवार को भी शुरुआती कारोबार में उतार-चढ़ाव जारी रहा, और सेंसेक्स 244.98 अंक गिरकर 83,382.71 पर, निफ्टी 66.70 अंक गिरकर 25,665.60 पर बंद हुआ। गुरुवार को मुंबई महानगरपालिका चुनाव के कारण बाजार बंद रहा। शुक्रवार को बाजार ने सप्ताह के समापन पर हल्की बढ़त दर्ज की। सेंसेक्स 187.64 अंक बढ़कर 83,570.35 पर और निफ्टी 28.75 अंक बढ़कर 25,694.35 पर बंद हुआ। साप्ताहिक समीक्षा के मुताबिक विदेशी निधियों की निकासी और वैश्विक बाजारों की अनिश्चितताओं के बावजूद भारतीय शेयर बाजार ने हफ्ते भर उतार-चढ़ाव के बीच स्थिरता बनाए रखी। निवेशक सतर्क रहे, लेकिन सप्ताह के अंत में बाजार ने मामूली सुधार दिखाया, जिससे संकेत मिलता है

शैडोफैक्स टेक्नोलॉजी का आईपीओ 20 जनवरी को आएगा

नई दिल्ली ।

शैडोफैक्स टेक्नोलॉजी मेनबोर्ड आईपीओ के जरिए 1,907.27 करोड़ जुटाने जा रही है। कंपनी 8.06 करोड़ फ्रेश शेयर और 7.32 करोड़ ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) शेयर जारी करेगी। आईपीओ का प्राइस बैंड 118 से 124 रुपए प्रति शेयर तय किया गया है। एक लॉट में 120 शेयर हैं, इसलिए रिटेल निवेशकों को न्यूनतम 14,880 रुपए का निवेश करना होगा। क्वालीफाइड इंस्टीट्यूशनल बायर्स (क्यूआईबी) के लिए 75 फीसदी शेयर आरक्षित हैं। रिटेल निवेशकों के लिए 10 फीसदी और नॉन-इंस्टिट्यूशनल निवेशकों (एनआईआई) के लिए 15 फीसदी रिजर्व रखा गया है। ग्रे मार्केट में आईपीओ मजबूती से ट्रेड कर रहा है। वर्तमान में 15 रुपए के प्रीमियम पर चल रहा है, जिससे अनुमानित लिस्टिंग गेन 12.10 फीसदी है। सबसे अधिक जीएमपी 16 रुपए दर्ज किया गया। ओएफएस में फ्लिपकार्ट, नोकिया ग्रोथ पार्टनर, इंटरनेशनल फाइनेंस कॉर्पोरेशन समेत अन्य प्रमोटर्स शेयर बेच रहे हैं। आईसीआईसीआई सिक्योरिटीज लीड मैनेजर और केफिन टेक्नोलॉजी रजिस्ट्रार के रूप में काम कर रहे हैं। आईपीओ 20 जनवरी से 22 जनवरी तक खुला रहेगा।

टाटा टेक्नोलॉजीज का मुनाफा 96 फीसदी गिरा

दिसंबर 2025 तिमाही में एकमुश्त ग्रेच्युटी प्रावधान से मुनाफे पर दबाव

नई दिल्ली ।

टाटा ग्रुप की कंपनी टाटा टेक्नोलॉजीज लिमिटेड ने दिसंबर 2025 को समाप्त तिमाही के नतीजे जारी कर दिए हैं। चालू वित्त वर्ष 2025-26 की तीसरी तिमाही में कंपनी का शुद्ध मुनाफा सालाना आधार पर 96 प्रतिशत घटकर 6.64 करोड़ रुपये रह गया। पिछले वित्त वर्ष की इसी तिमाही में कंपनी ने 168.64 करोड़ रुपये का मुनाफा कमाया था। कंपनी ने बताया कि मुनाफे में भारी गिरावट की मुख्य वजह नए लेबर कोड का सांविधिक असर है। टाटा टेक्नोलॉजीज ने विशिष्ट मद के तहत 114 करोड़ रुपये की ग्रेच्युटी का प्रावधान किया है। यह असर 21 नवंबर 2025 को सरकार द्वारा अधिसूचित चार नए लेबर कोड में वेतन की परिभाषा में बदलाव के कारण पड़ा। दिसंबर 2025 तिमाही में कंपनी कापरिचालन राजस्व 1,365.73 करोड़ रुपये रहा, जो पिछले साल की समान तिमाही में 1,317.38 करोड़ रुपये था। वहीं, कंपनी का कुल खर्च बढ़कर 1,217.99 करोड़ रुपये हो गया, जो एक साल पहले 1,119.31 करोड़ रुपये था। कंपनी के एक वे रिष्ठ अे धिकारी ने कहा कि तीसरी तिमाही ने व्यवसाय की मजबूती को दर्शाया है। मौसमी नरमी और अल्पकालिक चुनौतियों के बावजूद कंपनी ने वृद्धि दर्ज की है।

इंडिगो ने दिसंबर में रद्द हुई उड़ानों के लिए यात्रियों के पैसे वापस किए- डीजीसीए

- एयरलाइन ने या त्रियों को 5,000 के दो यात्रा वाउचर भी दिए

नई दिल्ली ।

केन्द्रीय नागर विमानन मंत्री के राममोहन नायडू ने संसद में जानकारी दी कि घरेलू एयरलाइन इंडिगो को तुरंत रिफंड जारी करने का आदेश दिया गया था। मंत्री ने बताया कि 750 करोड़ रुपये से अधिक राशि प्रभावित यात्रियों तक पहले ही पहुंच चुकी है। नागर विमानन महानिदेशालय (डीजीसीए) ने भी कहा कि इंडिगो ने 3 से 5 दिसंबर के बीच रद्द हुई उड़ानों के यात्रियों का पैसा वापस कर दिया है। इंडिगो ने प्रभावित यात्रियों की मदद के लिए एक और कदम उठाया है। एयरलाइन ने उन्हें 5,000 रुपये के दो यात्रा वाउचर दिए हैं, जिनकी मान्यता 12 महीने तक है। यह कदम यात्रियों को भविष्य में यात्रा में मदद करने के लिए उठाया गया है।

डीजीसीए के नियमों के अनुसार, एयरलाइंस को उन सुविधाओं और मुआवजे का भुगतान करना आवश्यक है, जो बोर्डिंग से मना करने, उड़ान रद्द करने या देरी होने पर यात्रियों को प्रदान की जाती हैं। नियामक ने कहा कि वह इंडिगो के साथ लगातार बातचीत कर रहे हैं ताकि सभी यात्रियों को उचित रिफंड और मुआवजा सुनिश्चित किया जा सके। हालांकि, कुछ यात्रियों ने सोशल मीडिया पर शिकायत की है कि 2 से 9 दिसंबर के बीच अचानक रद्द हुई सैकड़ों उड़ानों का रिफंड उन्हें अभी तक नहीं मिला*। डीजीसीए ने इन मामलों पर भी ध्यान देने का आश्वासन दिया है।

एसबीआई ने एटीएम ट्रांजेक्शन शुल्क बढ़ाया

- फ्री लिमिट के बाद महंगा होगा कैश और बैलेंस चेक

नई दिल्ली ।

स्टेट बैंक ऑफ इंडिया (एसबीआई) ने एटीएम से पैसे निकालने के शुल्क में वृद्धि की है।

अब फ्री ट्रांजैक्शन लिमिट खत्म होने के बाद दूसरे बैंक के एटीएम से कैश निकालना और नॉन-फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन करना पहले से महंगा हो गया है।

नए नियमों के अनुसार कैश विदड्रॉल पर प्रति ट्रांजैक्शन 23 रुपए जीएसटी से हित और बैलेंस चेक या मिनी स्टेटमेंट जैसे नॉन-फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन पर 11 रुपए जीएसटी से हित चार्ज देना होगा। इस बढ़ोतरी का असर सभी ग्राहकों पर नहीं होगा। बीएसबीडी अकाउंट एसबीआई एटीएम का इस्तेमाल करने वाले एसबीआई डेबिट कार्ड होल्डर्स और किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) अकाउंट पर नए चार्ज लागू नहीं होंगे। एसबीआई सेविंग्स अकाउंट धारकों को पहले की तरह दूसरे बैंक के एटीएम पर हर महीने 5 फ्री ट्रांजैक्शन मिलते रहेंगे।

इसके बाद कैश विदड्रॉल पर 23 रुपए और बैलेंस चेक/मिनी स्टेटमेंट पर 11 रुपए चार्ज लगेगा।

बैंक ने इंटरचेंज फीस में हालिया बढ़ोतरी और ऑपरेशनल लागत में इजाफे को ध्यान में रखते हुए यह फैसला लिया है। एसबीआई का कहना है

कि एटीएम ट्रांजैक्शन से जुड़े खर्चों में वृद्धि के कारण चार्ज बढ़ाना जरूरी था।

बजट के दिन रविवार को भी खुलेगा शेयर बाजार

1 फरवरी को सामान्य दिनों की तरह ट्रेडिंग होगी, 9 साल बाद बनेगा वर्किंग संडे

मुंबई ।

1 फरवरी को रविवार होने के बावजूद बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज में सामान्य दिनों की तरह कामकाज होगा। एक्सचेंजों ने शनिवार को सर्कुलर जारी कर इसकी आधिकारिक घोषणा की है। सरकार के निर्देशों के बाद यह फैसला लिया गया है ताकि बजट घोषणाओं पर निवेशक रियल-टाइम में रिएक्ट कर सकें।

यह पिछले 9 सालों में पहला मौका होगा जब केंद्रीय बजट के लिए शेयर बाजार रविवार को खुलेगा। इससे पहले साल 2017 में भी 1 फरवरी को रविवार था और तब भी मार्केट में ट्रेडिंग हुई थी। आमतौर पर शनिवार और रविवार को बाजार बंद रहता है, लेकिन बजट जैसी बड़ी आर्थिक घटनाओं के लिए एक्सचेंज स्पेशल ट्रेडिंग डे घोषित करते हैं।

समय में कोई बदलाव नहीं

बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज और नेशनल स्टॉक एक्सचेंज की ओर से जारी जानकारी के मुताबिक, 1 फरवरी को इक्विटी, इक्विटी डेरिवेटिव्स, करेंसी और कमोडिटी समेत सभी सेगमेंट्स में ट्रेडिंग होगी। जानकारों का कहना है कि रविवार को शेयर मार्केट खोलने का फैसला इसलिए लिया गया है कि बजट में टैक्स स्लैब, कैपिटल एक्सपेंडिचर और सेक्टर से जुड़ी बड़ी घोषणाएं होती हैं। अगर रविवार को बाजार बंद रहता, तो निवेशकों को सोमवार का इंतजार करना पड़ता। इससे सोमवार को बाजार में भारी उतार-चढ़ाव होने का डर रहता है। रविवार को मार्केट खुला रहने से निवेशक बजट के हर पॉइंट पर तुरंत अपनी रणनीति बना सकेंगे।

सेटलमेंट साइकिल में कोई बदलाव नहीं

एक्सचेंजों ने साफ किया है कि भले ही रविवार को ट्रेडिंग हो रही है, लेकिन क्लियरिंग और सेटलमेंट की प्रक्रिया में कोई बदलाव नहीं होगा। यह विशेष ट्रेडिंग डे फरवरी 2026 के हॉलिडे कैलेंडर का इकलौता अपवाद होगा। ट्रेडर्स को सलाह दी गई है कि वे रविवार के सत्र के लिए अपने सिस्टम और फंड की तैयारी पहले से कर लें।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

इंदौर में निर्णायक जंग, भारत-न्यूजीलैंड वनडे सीरीज का फाइनल मुकाबला आज

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और न्यूजीलैंड के बीच खेली जा रही तीन मैचों की वनडे सीरीज अब निर्णायक मोड़ पर पहुंच गई है। पहले दो मुकाबलों में दोनों टीमों ने एक-एक मैच जीतकर सीरीज 1-1 से बराबर कर ली है। अब तीसरा और अंतिम वनडे रविवार को इंदौर के होलकर स्टेडियम में खेला जाएगा, जहां सीरीज का विजेता तय होगा। दोनों ही टीमें मुकाबले के लिए इंदौर पहुंच चुकी हैं और अहम मैच से पहले तैयारियों में जुट गई हैं।

सीरीज का पहला वनडे वडोदरा में खेला गया था, जहां भारत ने 4 विकेट से जीत दर्ज कर मजबूत शुरुआत की। हालांकि दूसरे वनडे में न्यूजीलैंड ने शानदार वापसी करते हुए राजकोट में 7 विकेट से मुकाबला अपने नाम कर लिया। इस जीत के साथ कीवी टीम ने सीरीज को बराबरी पर ला दिया और निर्णायक मुकाबले की जमीन तैयार कर दी। दूसरे मैच में डैरिल मिशेल का प्रदर्शन न्यूजीलैंड की जीत का सबसे बड़ा आधार रहा। उन्होंने नाबाद 131 रन की बेहतरीन पारी खेली और विल यंग के साथ 162 रनों की अहम साझेदारी की, जिससे 285 रन के लक्ष्य का पीछा करना आसान हो गया। भारतीय टीम के लिए अब सबसे बड़ी चिंता बल्लेबाजों का निरंतर प्रदर्शन रहा है। अब तक बल्लेबाजी उम्मीदों पर पूरी तरह खरी नहीं उतर सकी है, ऐसे में निर्णायक मुकाबले में टॉप और मिडिल ऑर्डर से बेहतर प्रदर्शन की अपेक्षा होगी। दूसरी ओर गेंदबाजी, खासकर स्पिन विभाग, भी सवालों के घेरे में है। घरेलू मैदान पर भारतीय स्पिन गेंदबाज प्रभाव छोड़ने में नाकाम रहे हैं। दूसरे वनडे में कुलदीप यादव और रविंद्र जडेजा महंगे साबित हुए। कुलदीप ने 10 ओवर में 82 रन देकर एक विकेट लिया, जबकि जडेजा ने आठ ओवर में 44 रन खर्च किए। दोनों ने मिलकर 18 ओवर में 126 रन लुटाए, जो टीम के लिए भारी पड़ा। इसके विपरीत न्यूजीलैंड के डेब्यू स्पिनर जेडन लेनॉक्स ने भारतीय बल्लेबाजों पर अच्छा नियंत्रण दिखाया। उन्होंने 10 ओवर में 42 रन देकर एक विकेट लिया और मध्यक्रम को बांधे रखा। न्यूजीलैंड की इस जीत ने एक बार फिर उस समस्या को उजागर किया है, जिससे भारत पिछले कुछ समय से घरेलू क्रिकेट में जूझ रहा है, जहां मेहमान टीम के स्पिनर भारतीय स्पिन आक्रमण के मुकाबले अधिक प्रभावी नजर आ रहे हैं। इंदौर का होलकर स्टेडियम बल्लेबाजों के लिए जाना जाता है। छोटी बाउंड्री और सपाट पिच के कारण यहां बड़े स्कोर देखने को मिलते हैं। ऐसे में दोनों टीमों के बल्लेबाजों पर एक बार फिर निगाहें रहेंगी। शुक्रवार को दोनों टीमों ने नेट अभ्यास किया, जहां खिलाड़ियों ने पिच और परिस्थितियों को परखा। अब देखना दिलचस्प होगा कि निर्णायक मुकाबले में कौन सी टीम दबाव में बेहतर प्रदर्शन कर सीरीज अपने नाम करती है।

टीम इस प्रकार है

भारत की वनडे टीम

शुभमन गिल (कप्तान), रोहित शर्मा, विराट कोहली, केएल राहुल (विकेटकीपर), श्रेयस अय्यर (उपकप्तान), वॉशिंगटन सुंदर, रवींद्र जडेजा, मोहम्मद सिराज, हर्षित राणा, प्रसिद्ध कृष्णा, कुलदीप यादव, ऋषभ पंत (विकेटकीपर), नितीश कुमार रेड्डी, अर्शदीप सिंह, यशस्वी जायसवाल

न्यूजीलैंड की वनडे टीम

माइकल ब्रेसवेल (कप्तान), आदि अशोक, क्रिस्टियन क्लार्क, जोश क्लार्कसन, डेवोन कॉनवे, जैक फॉल्क्स, मिच हे, काइल जैमीसन, निक केली, जेडन लेनॉक्स, डेरिल मिचेल, हेनरी निकोल्स, ग्लेन फिलिप्स, माइकल रे, विल यंग।

ओलंपिक हीरो विजेंदर एशियाई मुक्केबाजी परिषद के सदस्य बने

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय मुक्केबाजी के दिग्गज विजेंदर सिंह को एशियाई मुक्केबाजी परिषद (एशियन बॉक्सिंग काउंसिल) का सदस्य नियुक्त किया गया है। यह उपलब्धि एक शीर्ष खिलाड़ी से वैश्विक खेल प्रशासक बनने की दिशा में उनके सफर का एक और अहम पड़ाव मानी जा रही है।

विजेंदर भारत के पहले ओलंपिक मुक्केबाज हैं और उनके पास एमेच्योर व पेशेवर मुक्केबाजी–दोनों स्तरों पर करीब दो दशकों का अनुभव है। एशियाई मुक्केबाजी परिषद में उनकी नियुक्ति खेल की गहरी समझ और पूरे एशियाई महाद्वीप में मुक्केबाजी के विकास के प्रति उनकी निरंतर प्रतिबद्धता को दर्शाती है।

विजेंदर बोले - यह मेरे लिए सम्मान की बात

अपनी नियुक्ति पर प्रतिक्रिया देते हुए विजेंदर सिंह ने कहा, 'एशियाई मुक्केबाजी परिषद के सदस्य के रूप में नियुक्त होना मेरे लिए गर्व और सम्मान की बात है। यह जिम्मेदारी मुझे सौंपने के लिए मैं भारतीय मुक्केबाजी महासंघ और उसके नेतृत्व का आभार व्यक्त करता हूं।'

उन्होंने आगे कहा, 'मुझे उम्मीद है कि मैं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पूरी क्षमता से इस भूमिका को निभाऊंगा। जिस तरह हमने बीजिंग ओलंपिक में इतिहास रचा, उसी तरह मैं एशिया में मुक्केबाजी के विकास के लिए पूरी तरह प्रतिबद्ध हूं। मेरा विशेष फोकस भारतीय मुक्केबाजों पर रहेगा, ताकि भविष्य में हमारे खिलाड़ी और अधिक सफलता हासिल कर सकें।'

एशियाई मुक्केबाजी परिषद की अहम भूमिका

एशियाई मुक्केबाजी परिषद पूरे क्षेत्र में खेल के प्रतिस्पर्धी ढांचे और विकासात्मक योजनाओं को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ऐसे में विजेंदर जैसे अनुभवी खिलाड़ी की मौजूदगी परिषद को तकनीकी और रणनीतिक रूप से मजबूत करने में मदद करेगी।

विजेंदर का सुनहरा खेल करियर

विजेंदर सिंह भारत की सबसे चर्चित और सफल खेल हस्तियों में से एक हैं। 2008 बीजिंग ओलंपिक में ऐतिहासिक कांस्य पदक, राष्ट्रमंडल खेलों और एशियाई खेलों में कई पदक, इसके बाद पेशेवर मुक्केबाजी में भी प्रभावशाली सफलता, उनकी यह नई भूमिका भारतीय मुक्केबाजी के लिए अंतरराष्ट्रीय मंच पर नई संभावनाओं के द्वार खोल सकती है।

महिला क्रिकेट में कई सुधारों की जरुरत : सोफी डिवाइन

नवी मुम्बई (एजेंसी)। महिला प्रीमियर लीग क्रिकेट (डब्लयूपीएल) के लिए भारत आयीं न्यूजीलैंड की कप्तान सोफी डिवाइन ने कहा है कि आजकज जिस तेजी से महिला क्रिकेट बदल रहा है। उसको देखते हुए उसमें कई सुधार किये जाने की जरुरत है। सोफी के अनुसार फील्डिंग नियमों और बाउंड्री के आकार में बदलाव किये जाने की जरुरत है। इस ऑलराउंडर का मानना है कि वर्तमान नियमों से खेल में बल्लेबाज हावी हो रहे हैं। वहीं गेंदबाजों को परेशानी हो रही है। ऐसे में खेल में गेंद और बल्ले के बीच बराबरी के लिए इनमें संतुलन बनाना जरुरी है। अभी महिला क्रिकेट में नॉन-पावरप्ले ओवरों के दौरान अंदरुनी घेरे के बाहर केवल चार फील्डर रखने का नियम है। यह इसलिए लगाया गया है जिससे की अधिक बाउंड्री लगें और रन बने पर सोफी का मानना है कि खेल अब उस स्तर तक पहुंच चुका है जहां इस नियम की समीक्षा जरूरी हो गई है। डिवाइन के अनुसार, बल्लेबाजों की बड़े शॉट खेलने की क्षमता जिस तेजी से बढ़ी है। उसे देखते हुए घेरे के बाहर बाहर पांच फील्डर रखने की दिया जाना चाहिये।

साथ ही उन्होंने छोटी बाउंड्री पर भी सवाल उठाये और कहा कि लीग में बाउंड्री की अधिकतम लंबाई 60 मीटर तय की गई है। इस छोटी बाउंड्री और सीमित फील्डिंग विकल्पों से गेंदबाजों के लिए रन रोकान कठिन हो गया है। उन्होंने कहा कि खासकर सपाट पिचों पर गेंदबाजों के पास अवसर कम हो जाते है और हल्की सी गलत से भी आसानी से बाउंड्री लग जाती है। डिवाइन ने स्वीकार किया कि आज के खेल में बल्लेबाजों की ताकत और आक्रामकता बढ़ी है पर इससे खेल एकतरफा हो रहा है। उनके अनुसार अगर गेंदबाजों को मुकाबले में बनाए रखना है तो फील्डिंग सेटअप और बाउंड्री के आकार पर फिर से विचार करना होगा। गुजरात टाइटंस से खेल रही सोफी ने इस सत्र में जबरदस्त खेल दिखाया है। वह टूर्नामेंट में सबसे अधिक रन और विकेट लेने वालों में शामिल हैं।

टी20 में डेविड वॉर्नर का नया कीर्तिमान, शतकों के मामले में विराट कोहली को छोड़ा पीछे

नई दिल्ली (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया के आक्रामक सलामी बल्लेबाज डेविड वॉर्नर ने टी20 क्रिकेट में एक और बड़ी उपलब्धि अपने नाम कर ली है। बिग बैश लीग (बीबीएल) में सिडनी थंडर्स की ओर से खेलते हुए उन्होंने सिडनी सिक्सर्स के खिलाफ धमाकेदार शतक जड़कर टी20 क्रिकेट में अपने शतकों की संख्या 10 तक पहुंचा दी। इसके साथ ही वॉर्नर ने इस फॉर्मेट में भारतीय स्टार विराट कोहली को पीछे छोड़ दिया और सबसे ज्यादा टी20 शतक लगाने वाले बल्लेबाजों की सूची में तीसरा स्थान हासिल कर लिया। इस मुकाबले में डेविड वॉर्नर ने दबाव भरी स्थिति में बेहतरीन बल्लेबाजी का नमूना पेश किया। टीम के लगातार विकेट गिरने के बावजूद उन्होंने एक छोर संभाले रखा और रनों की गति को भी बनाए रखा। वॉर्नर ने सिर्फ 65 गेंदों में 110 रन की शानदार पारी खेली, जिसमें दमदार शॉट्स के साथ अनुभव और संयम का बेहतरीन संतुलन देखने को मिला। उनकी इस शतकीय पारी की बदौलत सिडनी थंडर्स ने 20 ओवर में 6 विकेट के नुकसान पर 189 रन का मजबूत स्कोर खड़ा किया।

टी20 क्रिकेट में यह डेविड वॉर्नर का 10वां शतक रहा। इस आंकड़े के साथ उन्होंने विराट कोहली के 9 टी20 शतकों को पीछे छोड़ दिया। टी20 क्रिकेट में सबसे ज्यादा शतक लगाने का रिकॉर्ड वेस्टइंडीज के दिग्गज बल्लेबाज क्रिस गेल के नाम है, जिन्होंने इस फॉर्मेट में 22 शतक लगाए हैं। इस सूची में दूसरे स्थान पर पाकिस्तान के कप्तान बाबर आजम हैं, जिनके नाम 11 शतक दर्ज हैं। वॉर्नर अब 10 शतकों के साथ तीसरे, जबकि कोहली 9 शतकों के साथ चौथे स्थान पर हैं। बिग बैश लीग की बात करें तो वॉर्नर के नाम अब तीन शतक दर्ज हो चुके हैं। इसके साथ ही वह बीबीएल के इतिहास में सबसे ज्यादा शतक लगाने के मामले में बेन मैकडरमॉट और स्टीव स्मिथ के साथ संयुक्त रूप से शीर्ष स्थान पर पहुंच गए हैं। खास बात यह भी है कि वॉर्नर का यह शतक बीबीएल के मौजूदा सीजन का आठवां शतक था। इससे पहले किसी एक सीजन में बल्लेबाजों द्वारा इतने शतक नहीं लगाए गए थे, जिससे यह सीजन रिकॉर्डतोड़ साबित हो रहा है।

अगर टी20 करियर के आंकड़ों की तुलना की जाए तो विराट कोहली और डेविड वॉर्नर दोनों ही इस फॉर्मेट के सबसे सफल बल्लेबाजों में गिने जाते हैं। कोहली ने 414 टी20 मैचों में 41.92 की औसत से 13,543 रन बनाए हैं, जिसमें 9 शतक और 105 अर्धशतक शामिल हैं। वहीं वॉर्नर ने 431 टी20 मैचों में 36.82 की औसत से 13,918 रन बनाए हैं और उनके नाम 10 शतक तथा 115 अर्धशतक दर्ज हैं।

कोच को नेमार के विश्वकप फुटबॉल तक फिट होने की उम्मीद

साओ पाउलो । ब्राजील के स्टार स्ट्राइकर नेमार आजकल घुटने की सर्जरी से उबर रहे हैं। टीम प्रबंधन और कोच कार्लो एंसेलोटी को उनके अमेरिका, कनाडा और मैक्सिको में होने वाले फुटबॉल विश्व कप में खेलने की उम्मीद जतायी जा रही है। नेमार के क्लब सैंटोस ने ककहा है कि उनकी सर्जरी गंभीर नहीं थी। साथ ही उम्मीद जतायी कि ये स्टार खिलाड़ी अब जल्द ही फिटनेस हासिल करने में सफल रहेगा। वहीं नेमार ने कहा, मुझे अब भी उम्मीद है कि मैं विश्व कप में खेलूंगा और ब्राजील की तरफ से फाइनल में गोल करूंगा। उन्होंने अपनी टीम और देश के लिए खेलने के सभी प्रयास करने की भी बात कही। वहीं ब्राजील के कोच कार्लो एंसेलोटी को भी उम्मीद है कि नेमार विश्वकप से पहले फिट हो जाएंगे। उन्होंने कहा कि अभी नेमार का नाम टीम में शामिल नहीं है पर फिट होते ही उन्हें शामिल कर लिया जाएगा। जिस प्रकार से वह उत्साह से भरे हैं उससे साफ है कि वह खेलना चाहते हैं। वहीं नेमार ने कहा, हम इस बार कप को ब्राजील लाने के लिए पूरी ताकत लगा देंगे। कोच इसमें हमारी सहायता करेंगे। वहीं माना जा रहा है कि नेमार की वापसी टीम के लिए बेहद जरुरी है। इसी कारण सभी की नजरें उनकी फिटनेस पर लगी हैं।

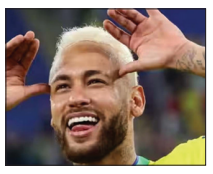

एशेज चयन पर रिकी पोंटिंग ने उठाए सवाल,ब्यू वेबस्टर को नजरअंदाज करने पर जताई हैरानी

नई दिल्ली । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान और दिग्गज बल्लेबाज रिकी पोंटिंग ने एशेज सीरीज के दौरान टीम चयन को लेकर राष्ट्रीय चयनकर्ताओं की रणनीति पर सवाल खड़े किए हैं। पोंटिंग का कहना है कि वह अब तक यह समझ नहीं पाए हैं कि शानदार फॉर्म में चल रहे ऑलराउंडर ब्यू वेबस्टर को नजरअंदाज कर विकेटकीपर बल्लेबाज जोश इंग्लिस को प्राथमिकता क्यों दी गई। उनके मुताबिक यह फैसला न सिर्फ चौंकाने वाला था, बल्कि टीम संतुलन के लिहाज से भी पूरी तरह तार्किक नहीं लगता। पोंटिंग ने कहा कि ब्यू वेबस्टर ने अपने छोटे से टेस्ट करियर में ही यह साबित कर दिया है कि वह बड़े मंच पर प्रदर्शन करने की क्षमता रखते हैं। उन्होंने पिछले साल बॉर्डर-गावस्कर ट्रॉफी के फाइनल में टेस्ट डेब्यू करते हुए मैच जिताने वाला योगदान दिया था। इसके बावजूद नवंबर में पर्थ में खेले गए एशेज के पहले टेस्ट में उन्हें अंतिम एकादश में शामिल नहीं किया गया। उनकी जगह कैमरन ग्रीन को खिलाया गया, जबकि ब्रिस्बेन और एडिलेड में हुए अगले दो टेस्ट मैचों में भी वेबस्टर को बाहर ही रखा गया। इन मुकाबलों में चयनकर्ताओं ने विकेटकीपर जोश इंग्लिस को टीम में शामिल किया, जिन्होंने नंबर सात पर बल्लेबाजी करते हुए क्रमशः 23, 32 और 10 रन बनाए। पोंटिंग के अनुसार यह चयन कई मायनों में हैरान करने वाला था, क्योंकि वेबस्टर न केवल बल्लेबाजी में भरोसेमंद विकल्प हैं, बल्कि जरूरत पड़ने पर गेंदबाजी से भी टीम को संतुलन प्रदान कर सकते हैं। एक बातचीत में पोंटिंग ने कहा कि वह जानते हैं कि चयनकर्ता आज के दौर में आंकड़ों और डेटा को काफी महत्व देते हैं और संभव है कि कुछ मेट्रिक्स में इंग्लिस आगे रहे हों, लेकिन फिर भी यह फैसला उन्हें समझ से परे लगता है। पोंटिंग का मानना है कि वेबस्टर भले ही बहुत आकर्षक या स्टाइलिश खिलाड़ी न हों, लेकिन वे हालात को बखूबी समझते हैं और टीम की जरूरत के अनुसार योगदान देते हैं। उन्होंने यह भी संकेत दिया कि उस्मान ख्वाजा की अनुपस्थिति में भविष्य में नंबर पांच पर वेबस्टर के लिए एक मजबूत अवसर बन सकता है। उधर, ब्यू वेबस्टर ने भी एशेज के शुरुआती चार टेस्ट मैचों में मौका न मिलने पर अपनी निराशा जाहिर की थी। हालांकि नए साल में सिडनी क्रिकेट ग्राउंड पर उन्हें आखिरकार खेलने का मौका मिला, जहां उन्होंने नाबाद 71 रन की अहम पारी खेली।

अजिंक्य रहाणे निजी कारणों से रणजी ट्रॉफी के बाकी मैचों से बाहर

नई दिल्ली (एजेंसी)। मुंबई के अनुभवी बल्लेबाज अजिंक्य रहाणे इस सीजन की रणजी ट्रॉफी में मुंबई के लिए खेलते नहीं नजर आएंगे। रहाणे ने मुंबई क्रिकेट एसोसिएशन (एमसीए) को जानकारी दी है कि वे निजी कारणों से इस सीजन के बचे हुए दो लीग मैचों में हिस्सा नहीं लेंगे। मुंबई अपनी अगली दो लीग मुकाबलों में पहला हैदराबाद के खिलाफ 22 से 25 जनवरी तक और दूसरा दिल्ली के खिलाफ 29 जनवरी से 1 फरवरी तक एमसीए-बीकेसी ग्राउंड पर खेलेगी।

एक अंग्रेजी अखबार की रिपोर्ट के अनुसार, रहाणे ने स्पष्ट किया है कि वे इस सीजन के बाकी रेड-बॉल मैचों के लिए उपलब्ध नहीं रहेंगे। टीम का हैदराबाद मैच के लिए ऐलान किया जाना हैं। रहाणे पिछले दो सीज़न से मुंबई का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं, लेकिन जुलाई 2023 के बाद से भारत के लिए खेलते नहीं दिखे। इस रणजी सीजन में उनका प्रदर्शन औसत रहा है, उन्होंने चार मैचों में केवल एक शतक बनाया। 37 वर्षीय रहाणे आगामी आईपीएल सीजन में कोलकाता नाइट राइडर्स की टीम का हिस्सा होंगे। इससे पहले उन्होंने मुंबई की कप्तानी भी छोड़ दी थी और शार्दुल ठाकुर को नया कप्तान बनाया गया था। कप्तानी छोड़ने के बावजूद रहाणे ने बतौर खिलाड़ी टीम में योगदान देने की प्रतिबद्धता जताई थी।

रणजी ट्रॉफी की वर्तमान पॉइंट्स टेबल में मुंबई ग्रुप डी में पांच मैचों में तीन जीत और दो ड्रॉ के साथ 24 अंकों के साथ शीर्ष पर है। अब टीम के दो लीग मैच बाकी हैं, जिनमें रहाणे की अनुपस्थिति को ध्यान में रखा जाएगा। अजिंक्य रहाणे ने भारत के लिए आखिरी टेस्ट मैच 2023 में वेस्टइंडीज के खिलाफ खेला था। उन्होंने 85 टेस्ट में कुल 5077 रन बनाए हैं, जिसमें 12 शतक और 26 अर्धशतक शामिल हैं। रहाणे वर्ल्ड टेस्ट चैंपियनशिप (डब्ल्यूटीसी) 2023 के फाइनल में भी खेले थे, जिसमें उन्होंने दो पारियों में कुल 135 रन बनाए थे। हालांकि, उस मैच में ऑस्ट्रेलिया ने भारत को 209 रन से हराकर जीत हासिल की थी। रहाणे की अनुपस्थिति में मुंबई की टीम के लिए युवा खिलाड़ियों को मौके मिल सकते हैं और टीम प्रबंधन को बचे हुए लीग मैचों में रणनीति बदलने की आवश्यकता पड़ सकती है।

विश्व कप हॉकी में भारतीय टीम से मिलेगी कड़ी टक्कर : डोरेन

कोपनहेगन । बेल्जियम के अनुभवी हॉकी खिलाड़ी आर्थर वैन डोरेन ने कहा है कि भारतीय टीम का प्रदर्शन पिछले कुछ समय में लगातार बेहतर हुआ है ओर वह 2026 में होने वाले विश्व कप में विरोधी टीमों को कड़ी टक्कर देगी। डोरेन का मानना है कि भारतीय टीम को किसी भी प्रकार से कमजोर नहीं माना जा सकता है। डोरेन ने कहा, 'भारत को जीत बड़ा दावेदार न मानना बड़ी भूल होगी। इसका कारण है कि भारतीय टीम ने पिछले कुछ समय में लगातार सफलता हासिल की है। उसने ओलंपिक में भी पिछली बार कांस्य पदक जीता था। इससे साफ है कि टीम का स्तर पहले से बेहतर हुआ है। डोरेन के अनुसार भारतीय टीम का संतुलन अच्छा है। उन्होंने कहा, ''उनके पास हर विभाग में अच्छे खिलाड़ी हैं। उनके पास एक अच्छा कोच है, युवा वह अनुभवी खिलाड़ी हैं। भारतीय टीम को पिछले कुछ समय में किसे प्रयासों का लाभ मिला है। डोरेन ने कहा कि विश्व कप में किसी भी टीम को हल्के में नहीं लिया सकता है और खिताबी दौड़ बेहद कड़ी होने की संभावना है। उन्होंने कहा, 'भारत और बेल्जियम जैसी टीमों के लिए राह आसान नहीं होगी क्योंकि पांच, छह या सात और टीमें हैं जो हमारी तरह ही बढ़े हुए मनोबल से उतरेंगी हैं। इससे साफ है कि मुकाबला आसान नहीं रहेगा। डोरेन ने भारत के उभरते खिलाड़ियों की तकनीकी क्षमता की भी जमकर प्रशंसा की। उन्होंने कहा, 'भारतीय हॉकी टीम विश्व की किसी भी अन्य टीम की तुलना में अधिक व्यस्त हैं। वे सीखना चाहते हैं, खेलना चाहते हैं और प्रगति करना चाहते हैं। उसके पास कई युवा प्रतिभाशाली खिलाड़ी हैं। उनके खिलाड़ी कम उम्र में ही अपने कौशल को अगले स्तर पर पहुंचा देते हैं।

टी20 टीम में श्रेयस अय्यर की अचानक वापसी: बीसीसीआई के फैसले के पीछे ये तीन बड़ी वजहें

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने भारत और न्यूजीलैंड के बीच होने वाली पांच मैचों की टी20 सीरीज के लिए टीम में कुछ अहम बदलावों का ऐलान किया। चोट के कारण वॉशिंगटन सुंदर पूरे सीरीज से बाहर हो गए हैं, उनकी जगह लेग स्पिनर रवि बिश्नोई को टीम में शामिल किया गया है। इसके अलावा तिलक वर्मा सर्जरी के चलते शुरुआती तीन टी20 मुकाबले नहीं खेल पाएंगे, जिसके बाद चयनकर्ताओं ने उनकी जगह श्रेयस अय्यर को पहले तीन मैचों के लिए स्क्वॉड में शामिल करने का फैसला किया है। श्रेयस अय्यर की यह वापसी कई लोगों के लिए चौंकाने वाली रही, क्योंकि उन्होंने भारत के लिए आखिरी टी20 मैच साल 2023 में खेला था।

दरअसल, श्रेयस अय्यर की वापसी के पीछे पहला बड़ा कारण उनका नेतृत्व कौशल माना जा रहा है। चयनकर्ता और टीम मैनेजमेंट अब अय्यर को भविष्य के लीडर के तौर पर देख रहे हैं। उन्हें हाल ही में वनडे टीम का उप-कप्तान बनाया गया है और आईपीएल व घरेलू क्रिकेट में कप्तान के रूप में उनका रिकॉर्ड काफी प्रभावशाली रहा है। मौजूदा समय में टी20 टीम की कमान सूर्यकुमार यादव के हाथों में है, जबकि उप-कप्तान अक्षर पटेल हैं। सूर्यकुमार यादव की उम्र 35 साल है और आगामी टी20 वर्ल्ड कप के बाद भारत नए नेतृत्व विकल्पों की ओर बढ़ सकता है। ऐसे में श्रेयस अय्यर एक मजबूत और भरोसेमंद विकल्प के रूप में उभरते नजर आ रहे हैं।

दूसरा अहम कारण तिलक वर्मा की गैरमौजूदगी से मिडिल ऑर्डर में पैदा हुआ खालीपन है। तिलक के बाहर होने से भारत के मध्यक्रम पर असर पड़ सकता था, जिसे संतुलित करने के लिए श्रेयस अय्यर को चुना गया। अय्यर मिडिल ऑर्डर में बल्लेबाजी के अनुभवी खिलाड़ी हैं और नंबर तीन व चार पर खेलने का उन्हें लंबा अनुभव है। वह तिलक वर्मा के लाइक-टू-लाइक रिप्लेसमेंट साबित हो सकते हैं। इसके अलावा, यदि किसी वजह से तिलक वर्मा टी20 वर्ल्ड कप तक पूरी तरह फिट नहीं हो पाते, तो अय्यर को उनके बैकअप के तौर पर तैयार किया जा सकता है।

तीसरा और सबसे अहम कारण श्रेयस अय्यर की मौजूदा शानदार फॉर्म है। चाहे वनडे हो या टी20, वह लगातार रन बना रहे हैं। घरेलू क्रिकेट से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक उनका प्रदर्शन प्रभावशाली रहा है। आईपीएल 2025 में भी अय्यर बेहतरीन लय में नजर आए थे, जहां उनकी कप्तानी में पंजाब किंग्स फाइनल तक पहुंची थी। उन्होंने उस सीजन में 50 से अधिक की औसत से 604 रन बनाए थे।

छह साल बाद रॉड लेवर एरिना में लौटे रोजर फेडरर, कैस्पर रूड के साथ किया अभ्यास

मेलबर्न । ऑस्ट्रेलियन ओपन में अपनी आखिरी प्रतिस्पर्धी उपस्थिति के करीब छह साल बाद स्विस टेनिस लीजेंड रोजर फेडरर एक बार फिर मेलबर्न के प्रतिष्ठित कोर्ट पर नजर आए। फेडरर ने रॉड लेवर एरिना में नॉर्वे के स्टार खिलाड़ी कैस्पर रूड के साथ प्रैक्टिस सेशन किया। यह 2020 के बाद पहली बार था, जब फेडरर ऑस्ट्रेलियन ओपन के दौरान इस ऐतिहासिक कोर्ट पर उतरे। हालांकि उन्होंने 2022 में प्रोफेशनल टेनिस से संन्यास ले लिया था, लेकिन उनकी मौजूदगी ने दर्शकों और टेनिस प्रेमियों में जबरदस्त उत्साह भर दिया। फेडरर और कैस्पर रूड का आमना-सामना करियर में सिर्फ एक बार हुआ है। दोनों के बीच एकमात्र मुकाबला 2019 में फ्रेंच ओपन के चौथे राउंड में खेला गया था, जहां फेडरर ने सीधे सेटों में जीत दर्ज की थी। अब वर्षों बाद दोनों खिलाड़ियों का साथ अभ्यास करना टेनिस जगत के लिए एक खास पल बन गया। 44 वर्षीय फेडरर ऑस्ट्रेलियन ओपन के सबसे सफल खिलाड़ियों में शामिल रहे हैं। उन्होंने अपने करियर के 20 ग्रैंड स्लैम खिताबों में से छह खिताब मेलबर्न में ही जीते हैं। इस टूर्नामेंट में उनका जीत-हार का रिकॉर्ड 102-15 का शानदार रहा है। फेडरर ने आखिरी बार 2020 में ऑस्ट्रेलियन ओपन खेला था, जहां सेमीफाइनल में उन्हें अंततः चैंपियन बने नोवाक जोकोविच के हाथों हार का सामना करना पड़ा था। इसके बाद चोटों और फिटनेस समस्याओं के चलते वह धीरे-धीरे प्रतिस्पर्धी टेनिस से दूर होते चले गए। फेडरर रॉड लेवर एरिना में एक विशेष प्रदर्शनी मैच का भी हिस्सा बनेंगे, जो टूर्नामेंट के पहले उद्घाटन समारोह में आयोजित किया जा रहा है। इस प्रदर्शनी मुकाबले में उनके साथ आंद्रे अगासी, पैट्रिक राफ्टर और लेटन हेविट जैसे पूर्व एटीपी नंबर-1 खिलाड़ी भी शामिल होंगे। फेडरर की यह वापसी भले ही प्रतिस्पर्धी न हो, लेकिन टेनिस प्रेमियों के लिए यह यादगार पल साबित हो रहा है।

आईपीएल विवाद के बाद अब अंडर 19 विश्व कप में तल्खी, भारत - बांग्लादेश के कप्तानों ने नहीं मिलाया हाथ

बेंगलुरु (एजेंसी)। शनिवार को आईसीसी अंडर 19 विश्व कप 2026 के ग्रुप स्टेज मैच में भारत और बांग्लादेश के बीच टॉस के दौरान पारंपरिक हाथ मिलाने की रस्म नहीं हुई। भारतीय कप्तान आयुष म्हात्रे टॉस के लिए आए और बांग्लादेश की ओर से उप-कप्तान ज़ावाद अबरार उपस्थित थे। आईसीसी अंडर 19 विश्व कप में भारत का यह दूसरा मैच है, जबकि बांग्लादेश का यह पहला मैच है। बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा की घटनाओं को लेकर भारत और बांग्लादेश के संबंधों में कुछ तनाव है।

बांग्लादेश क्रिकेट बोर्ड ने खिलाड़ियों की सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद (आईसीसी) से अपने मैच भारत से बाहर आयोजित करने का आग्रह किया है। यह अनुरोध तब आया जब भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड (बीसीसीआई) ने कोलकाता नाइट राइडर्स (केकेआर) से तेज गेंदबाज मुस्तफिजुर को इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल) 2026 की टीम से बाहर करने को कहा था, और यह कदम बांग्लादेश में हिंदुओं के खिलाफ अत्याचारों के बीच उठाया गया था।

आईसीसी सूत्रों ने सोमवार को कहा कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त सुरक्षा विशेषज्ञों द्वारा किए गए स्वतंत्र जोखिम आकलन से यह निष्कर्ष नहीं निकलता कि बांग्लादेश भारत में अपने निर्धारित टी20 विश्व कप मैच नहीं खेल सकता। सूत्रों ने बताया कि भारत में टूर्नामेंट के लिए समग्र सुरक्षा जोखिम को निम्न से मध्यम श्रेणी का माना गया है, जो कई प्रमुख वैश्विक खेल आयोजनों के अनुरूप है।

सूत्रों ने कहा कि स्वतंत्र जोखिम आकलन में बांग्लादेश टीम, उसके अधिकारियों या भारत में मैच स्थलों के लिए किसी विशिष्ट या प्रत्यक्ष खतरे की पहचान नहीं की गई है।

उन्होंने कहा कि प्राप्त पेशेवर सलाह के आधार पर, कोलकाता और मुंबई में बांग्लादेश के निर्धारित मैचों से जुड़ा जोखिम निम्न से मध्यम श्रेणी का है, और ऐसे किसी जोखिम का कोई संकेत नहीं है जिसे स्थापित सुरक्षा योजना और शमन उपायों के माध्यम से प्रभावी ढंग से प्रबंधित नहीं किया जा सकता है। सूत्रों ने कहा कि आईसीसी हाल के दिनों में आईसीसी पुरुष टी20 विश्व कप 2026 में बांग्लादेश की भागीदारी के संबंध में की गई सार्वजनिक टिप्पणियों से अवगत है, जिसमें आईसीसी के सुरक्षा जोखिम आकलन का चुनिंदा उल्लेख भी शामिल है।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

आपकी दी हुई टॉफी-चिप्स बदल रहे हैं बच्चे का स्वभाव

आज के समय में बच्चों का जिद्दी होना, एकाग्रता की कमी और छोटी-छोटी बात पर चिड़चिड़ाना आम समस्या बनता जा रहा है। लोग अकसर इस समस्या को बच्चों की बढ़ती उम्र या अनुशासन की कमी से जोड़कर देखने लगते हैं। लेकिन क्या आप जानते हैं इसका असली दोषी बच्चों का स्वभाव नहीं बल्कि आपकी रसोई में छिपा हुआ हो सकता है। कई शोध बताते हैं कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड और शुगर का बढ़ता सेवन बच्चों के मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन पैदा करता है। रंग-बिरंगे पैकेटों में बंद ये खाद्य पदार्थ न केवल शरीर को बीमार कर रहे हैं, बल्कि बच्चों के व्यवहार को भी अनियंत्रित बना रहे हैं।

बाल चिकित्सकों का कहना है कि अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड जैसे चिप्स, पैकेज्ड नमकीन, इंस्टेंट नूडल्स, मीठे सीरियल्स, टॉफी-कैंडी और मीठे ड्रिंक्स देखने में भले ही आकर्षक लगते हैं लेकिन इनका बच्चों के मूड, व्यवहार और सीखने की क्षमता पर गहरा असर पड़ सकता है।

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड के अधिक सेवन से बच्चों में दिखते हैं ये बदलाव

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड में आर्टिफिशियल रंग, प्रिजर्वेटिव्स, नमक की अधिकता, अनहेल्दी फैट और रिफाइंड शुगर मौजूद होती है। इसके अलावा तेजी से पचने वाली शुगर ब्लड शुगर को अचानक बढ़ा देती है और फिर तेजी से गिरा देती है। इस उतार-चढ़ाव के कारण शरीर में स्ट्रेस हार्मोन रिलीज होते हैं, जिससे बच्चों में चिड़चिड़ापन, जरूरत से ज्यादा उछल-कूद, ध्यान की कमी, मूड स्विंग्स, जल्दी थकान, घबराहट और बिना सोचे-समझे प्रतिक्रिया देने की आदत बढ़ जाती है। लंबे समय तक क्स्नह्य खाने से गट-ब्रेन एक्सिस भी प्रभावित होता है। ये खाद्य पदार्थ आंतों में मौजूद अच्छे बैक्टीरिया को नुकसान पहुंचाते हैं, जिससे ऐसे फैटी एसिड्स कम बनते हैं जो दिमाग की सेहत और भावनाओं को संतुलित रखने के लिए जरूरी होते हैं। कई शोध बताते हैं कि जो बच्चे नियमित रूप से क्स्नह्य खाते हैं, उनमें एंग्जायटी, आक्रामक व्यवहार और भावनात्मक असंतुलन का खतरा ज्यादा होता है।

अल्ट्रा-प्रोसेस्ड फूड के सेहत को नुकसान

ये खाद्य पदार्थ बच्चों की आंतों की सेहत को भी नुकसान पहुंचाते हैं। गट हमारे दिमाग से सीधा जुड़ा हुआ होता है। यहीं से सेरोटोनिन जैसे 'फील-गुड हार्मोन' बनते हैं। जब गट हेल्थ बिगड़ती है, तो बच्चों की भावनात्मक स्थिरता और व्यवहार पर भी असर पड़ता है। इसके अलावा, यूपीएफएस पौष्टिक भोजन की जगह ले लेते हैं, जिससे बच्चों को प्रोटीन, हेल्दी फैट, आयरन, जिंक और जरूरी विटामिन नहीं मिल पाते-जो दिमाग के विकास के लिए बेहद जरूरी होते हैं।

पेरेंट्स उठाएं जरूरी कदम

माता-पिता घर का फ्रेश और संतुलित भोजन बच्चों की डाइट में शामिल करके उनके स्वभाव में बड़ा बदलाव ला सकते हैं। बाहर से कुछ भी खरीदते समय फूड लेबल पढ़ना, मीठे स्नैक्स कम करना और फलों से बने हेल्दी ट्रीट्स बच्चों के लिए फायदेमंद हो सकती है। बच्चों के स्कूल टिफिन को थोड़ा हेल्दी बनाएं, मीठे ड्रिंक्स की जगह पानी या घर का बना पेय देना जैसे छोटे-छोटे बदलाव भी बच्चों के व्यवहार को शांत, ध्यान को बेहतर और भावनाओं को संतुलित बना सकते हैं।

क्या आपका बच्चा तनाव में है ?

इन 15 शुरुआती लक्षणों को भूलकर भी न करें नजरअंदाज

आज के दौर में बच्चों का बचपन खेल-कूद से ज्यादा 'चिंता' (एंग्जायटी) की गिरफ्त में है। कभी पढ़ाई का भारी बोझ, तो कभी सोशल मीडिया पर खुद को दूसरों से बेहतर दिखाने की होड़- इन सब बातों ने आज के दौर में बच्चों की मासूमियत को तनाव में बदलकर रख दिया है। लेकिन क्या आप जानते हैं कि कभी-कभी हमारी 'ओवर-पैरेंटिंग' भी उनके लिए मुश्किलें खड़ी कर देती है? बाल रोग विशेषज्ञ कहती हैं कि जब हम बच्चों को हर छोटी समस्या से बचाने की कोशिश करते हैं, तो उसे खुद से मुश्किलें संभालने और सीखने का अवसर नहीं मिलता, जिससे उनके भीतर मुकाबला करने की क्षमता, आत्मनिर्भरता और भावनात्मक मजबूती विकसित नहीं हो पाती। इसके अलावा, बच्चे माता-पिता के तनाव और समाज में फैली अस्थिरता को भी बहुत गहराई से महसूस करते हैं, जिससे उनकी चिंता और बढ़ जाती है।

बच्चों में चिंता के शुरुआती लक्षण

बच्चों में चिंता के शुरुआती लक्षण हमेशा सीधे डर या घबराहट के रूप में सामने नहीं आते। कई मामलों में पहले कुछ संकेत दिखाई देते हैं जैसे-

शारीरिक लक्षण

-बार-बार पेट दर्द होना
-बिना किसी स्पष्ट कारण के सिरदर्द
-लगातार थकान
-नींद में परेशानी
-डरावने सपने आना
-दोबारा बिस्तर गीला करने जैसी समस्या

व्यवहार में बदलाव

-बार-बार आश्वासन मांगना
-जरूरत से ज्यादा चिपकना
-चिड़चिड़ापन
-अचानक तेज भावनात्मक प्रतिक्रियाएं
-स्कूल और सामाजिक गतिविधियों में शामिल होने से इंकार करना।
-उन गतिविधियों से दूरी बना लेना जो उन्हें पहले पसंद थीं।
-छोटी उम्र के बच्चों जैसा व्यवहार करना

एकाग्रता में कमी

-पढ़ाई में ध्यान न लगा पाना
-स्कूल के प्रदर्शन में अचानक गिरावट आना।

माता-पिता क्या कर सकते हैं?

बाल रोग विशेषज्ञों का कहना है कि बच्चों में नजर आने वाले इन बदलावों को पहचानने के लिए सिर्फ निगरानी ही नहीं, बल्कि बच्चे से जुड़ाव भी जरूरी है। माता-पिता को चाहिए कि भले ही कुछ देर के लिए लेकिन रोजाना कुछ समय मिलकर बच्चे को दें। इस दौरान बिना टोके, बिना जज किए बच्चे की बात सुनना उसे भावनात्मक रूप से सुरक्षित महसूस कराता है। कई बार बच्चे खुद यह नहीं बता पाते कि वे किसी परेशानी से गुजर रहे हैं। ऐसी स्थिति में आप बच्चे के शिक्षक, दोस्त या अन्य अभिभावक से मिल सकते हैं। माता-पिता का अपने बच्चे के सामाजिक दायरे से जुड़े रहना भी बेहद जरूरी है।

सिर्फ निगरानी नहीं भावनात्मक जुड़ाव भी है जरूरी

चाहे माता-पिता हों, दादा-दादी हों या कोई और भरोसेमंद देखभाल करने वाला व्यक्ति, बच्चे को उसके साथ यह महसूस होना चाहिए कि कोई हमेशा उसकी बात सुनने और उसका साथ देने के लिए मौजूद है। बच्चे के भीतर यह भरोसा होना चाहिए कि अगर वह असफल भी हो जाए, गलती भी कर दे या किसी कठिन दौर से गुजरे, तब भी उसके माता-पिता उसे प्यार करना और उसका साथ देना नहीं छोड़ेंगे। बिना शर्त और गैर-आलोचनात्मक समर्थन बच्चों को लंबे समय तक चिंता से बचाने में सबसे बड़ी भूमिका निभाता है।

सलाह- जब माता-पिता शुरुआती संकेतों को समय पर पहचानते हैं, बच्चे की भावनाओं को महत्व देते हैं और घर में खुला व संवेदनशील संवाद बनाए रखते हैं, तो बच्चे को सही समय पर मदद मिल पाती है और उसका भावनात्मक विकास बेहतर होता है। माता-पिता बच्चों की मदद खुली बातचीत करके, तुलना से बचकर, बिना संरचना वाले खेल (द्वह्वद्ग श्चद्यड्ड4) को बढ़ावा देकर और स्क्रीन टाइम सीमित करके कर सकते हैं। गहरी सांस लेने का अभ्यास, चित्रकारी, कहानी सुनाना और आउटडोर खेल बच्चों को तनाव से प्राकृतिक रूप से बाहर निकलने में मदद करते हैं। यदि चिंता बच्चे की रोजमर्रा की जिंदगी, पढ़ाई, दोस्ती या नींद को प्रभावित करने लगे, तो किसी बाल मनोवैज्ञानिक से सलाह लेना बेहद फायदेमंद हो सकता है। समय पर पहचान से बच्चे भावनात्मक रूप से संतुलित व आत्मनिर्भर वयस्क बनते हैं।

बच्चे को भूख नहीं लगती तो इसके लिए जिम्मेदार हो सकते हैं ये कारण

क्या आप उन मांओं में से हैं जो अपने बच्चे को बैठकर खाना खिलाना चाहती हैं लेकिन बच्चा मात्र एक से दो कौर खाकर ही भाग जाता है। उसका खाने का मन नहीं होता या फिर जब वो चार से पांच साल का हो जाता है तो अक्सर बोलता है कि उसे भूख नही है। अगर आप भी बच्चे के भूख ना लगने की वजह से परेशान रहती हैं तो केवल भूख बढ़ाने की लेने से पहले उसके कारण को जानना जरूरी है। जैसे बच्चों के डॉक्टर ने बच्चों के भूख ना लगने के लिए जिम्मेदार ये 5 कारण शेयर किए हैं।

बच्चे के पेट में कीड़े

बच्चे के पेट में कीड़े होंगे तो बच्चे को भूख नहीं लगेगी। एक साल से ऊपर के बच्चों को हर 6 महीने पर डिवॉर्मिंग करानी जरूरी होती है। जिससे बच्चे के पेट में कीड़े ना पनपने पाएं।

बच्चे को कब्ज है

बच्चे को कब्ज है और उसका पेट ठीक से साफ नहीं हो रहा। तो भी बच्चा खाना कम खाएगा या उसे भूख महसूस नहीं होगी। ऐसे में बच्चे को पानी ज्यादा से ज्यादा पिलाएं और फाइबर रिच फूड्स खिलाएं। जिससे बच्चे की कब्ज की समस्या हल हो और उसको भूख लगे। डॉक्टर बताते हैं कि बच्चे को पीच, प्लम, प्रून्स और पियर जैसे फ्रूट खाने को दें।

बच्चे को अगर डायरिया हुआ

बच्चे को अगर डायरिया हुआ है या फिर हो चुका है। तो थोड़े दिन तक बच्चे को भूख कम लगती है। ऐसे में दूध की बजाय बच्चे को दही खिलाएं। ओआरएस का घोल पिलाएं क्योंकि डायरिया होने के बाद बच्चे की भूख को वापस लौटने में कम से कम 10-15 दिन का समय लग जाता है।

मुंह में छाले

कई बार बच्चे के खाना ना खाने की वजह मुंह में छाले होते हैं। अगर मुंह में छाले हैं तो उसे विटामिन बी काम्प्लेक्स की कमी होती है। वहीं अगर बच्चे की जीभ सफेद दिख रही है तो ऐसा मुंह में फंगल इंफेक्शन की वजह से होता है।

बच्चों में एनीमिया

बच्चों में भूख ना लगने की वजह कई बार खून की कमी होती है। आयरन की कमी पूरी करने से बच्चे को भूख लगती है, इम्यूनिटी डेवलप होती है और साथ ही ब्रेन डेवलपमेंट भी होता है। इसलिए बच्चे को छह महीने के बाद जब फूड्स खिलाना हो तो आयरन रिच फूड्स को जरूर शामिल करें और साथ ही आयरन के सप्लीमेंट्स भी जरूर दें।

गैजेट्स की लत और बिगड़ता स्कूल शेड्यूल छीन रहा है आपके बच्चे की नींद

बच्चों के शारीरिक और दिमागी विकास के लिए अच्छा भोजन ही नहीं बल्कि अच्छी नींद भी बेहद जरूरी होती है। लेकिन आजकल स्कूल के अनियमित समय, लंबे स्टडी ऑवर्स और मोबाइल, टैबलेट व गेमिंग डिवाइसेज पर बढ़ती निर्भरता के कारण बच्चों में नींद से जुड़ी समस्याएं तेजी से बढ़ रही हैं। मधुकर रेनबो चिल्ड्रेन हॉस्पिटल की बाल रोग विशेषज्ञ डॉ. मेधा कहती हैं कि आज बच्चों में अनिद्रा और बेचैन नींद जैसी स्लीप डिसऑर्डर्स आम देखे जा रहे हैं, जिनके पीछे दो बड़े आधुनिक कारण हैं-स्कूल का अनियमित समय और गैजेट्स का अत्यधिक इस्तेमाल। खासकर किशोर उम्र के बच्चों में बॉडी क्लॉक स्वाभाविक रूप से थोड़ा देर से सोने की होती है, लेकिन जल्दी स्कूल शुरू होने के कारण उन्हें पर्याप्त आराम मिलने से पहले ही उठना पड़ता है। जिससे पूरे हफ्ते बच्चे की नींद पूरी नहीं हो पाती है। विशेषज्ञों का कहना है कि वीकेंड पर बच्चे देर तक जागते हैं और नींद पूरी करने के लिए फिर देर से उठते हैं, जिससे 'सोशल जेटलैग' नाम की स्थिति बनती है। यह शरीर की प्राकृतिक सर्केडियन रिदम को और बिगाड़ देती है। इस समस्या को और बढ़ाने में सोने से ठीक पहले मोबाइल और टैबलेट जैसे गैजेट्स का इस्तेमाल मदद करता है। इनसे निकलने वाली ब्लू लाइट मेलाटोनिन हार्मोन के स्राव को रोक देती है, जो नींद शुरू होने का संकेत देता है।

बच्चे की नींद की गुणवत्ता खराब करते हैं ये 2 कारण

देर तक स्क्रीन देखने की लत

स्क्रीन से निकलने वाली ब्लू लाइट मेलाटोनिन नाम के हार्मोन को दबा देती है, जो शरीर को सोने के लिए तैयार करता है। जो बच्चे रात में देर तक स्क्रीन देखते हैं, उन्हें नींद आने में ज्यादा समय लगता है और उनकी नींद की गुणवत्ता भी खराब होती है। इसके अलावा अगर स्कूल का समय बहुत जल्दी हो, तो बच्चों को लगातार नींद की कमी का सामना करना पड़ता है।

अनियमित दिनचर्या

बच्चे की नींद पूरी ना होने के पीछे अनियमित दिनचर्या भी एक बड़ा कारण है। जब बच्चे हर दिन अलग-अलग समय पर सोते और उठते हैं, तो उनकी बॉडी क्लॉक कन्फ्यूज हो जाती है, जिससे हेल्दी स्लीप पैटर्न नहीं बन पाता है।

बच्चे की नींद पूरी ना होने के नुकसान

नींद पूरी ना होने के पीछे कारण चाहे जो भी हो, लेकिन बच्चों की याददाश्त, ध्यान लगाने की क्षमता, सीखने की शक्ति, भावनात्मक संतुलन और इम्यूनिटी पर बुरा असर डालता है। नतीजा, बच्चे ज्यादा चिड़चिड़े, बेचैन, घबराए हुए या हाइपरएक्टिव दिखाई दे सकते हैं। लंबे समय तक नींद की कमी मोटापा, हार्मोनल गड़बड़ी और पढ़ाई में कमजोर प्रदर्शन का कारण भी बन सकती है।

डॉक्टर की सलाह

डॉक्टर सलाह देते है कि कुछ आसान आदतें बच्चों की नींद में सुधार कर सकती हैं जैसे रोजाना एक तय समय पर ही सोने की आदत डालना, सोने से कम से कम एक घंटे पहले स्क्रीन बंद करना, शाम के समय तेज लाइट से बचना, कैफीन और मीठे ड्रिंक्स का सीमित सेवन और सोने से पहले किताब पढ़ने जैसी शांत गतिविधियां अपनाना। अच्छी नींद लेने वाला बच्चा ज्यादा ध्यान केंद्रित कर पाता है, भावनात्मक रूप से संतुलित रहता है और कुल मिलाकर ज्यादा स्वस्थ होता है।

बच्चे ने नींद में उल्टी कर दी तो फौरन क्या करना चाहिए?

छोटे बच्चे जो कुछ महीने पहले ही पैदा हुए हैं। कई बार नींद में या फिर लेटे रहकर उल्टी कर देते हैं। ऐसे में पैरेंट्स को पता होना चाहिए कि फौरन क्या किया जाए? कई बार बच्चे के उल्टी कर देने पर अगर सही तरीके से साफ-सफाई ना की जाए। बच्चे पर पूरी तरह से ध्यान ना दिया जाए तो उल्टी बच्चे की नाक में फंस जाती है। जिसकी वजह से बच्चे को सांस लेने में तकलीफ हो सकती है। चाइल्ड स्पेशलिस्ट डॉक्टर दीपा अग्रवाल ने नवजात बेबी के आफ्टर वोमिट केयर को शेयर किया है। जिसमे बताया है कि आखिर किस तरह की देखभाल बच्चे के उल्टी करने के बाद जरूरी है।

बच्चे ने नींद में उल्टी कर दी तो पहले क्या करें?

बच्चा छोटा है और नींद में या सोते वक्त उल्टी कर दे तो सबसे पहले बच्चे को करवट करना जरूरी है। जिससे बच्चे के नाक में उल्टी के अंश ना फंस जाएं। बच्चा अगर बिल्कुल सीधा लेटा होगा तो उल्टी के अंश उसकी सांस की नली में जाकर ब्लॉकेज बना सकते हैं। जिससे बच्चे को सांस लेने मे परेशानी हो सकती है।

नाक को करें साफ

बच्चे ने सोते वक्त या लेटे रहने के दौरान उल्टी कर दी है और बच्चा काफी छोटा है तो सबसे पहले उसकी नाक को साफ करें। जो भी गंदगी लगी है उसे किसी साफ कपड़े या टिशू से साफ कर दें।

मुंह से उल्टी साफ करने का तरीका

छोटे बच्चे अक्सर उल्टी तो कर देते हैं लेकिन कुछ उल्टी के अंश मुंह में ही रह जाता है। जिसे साफ करना जरूरी होता है। इसलिए डॉक्टर ने बताया कि हाथ अगर साफ हो तो मुंह में उंगली को डालकर मुंह से उल्टी के अंश को बाहर निकाल देना चाहिए। और, अगर लग रहा है कि हाथ साफ नही है तो उंगली पर एक छोटा कपड़ा फंसा लें। जिससे पूरा मुंह साफ हो जाए।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

करनाल नेशनल हाइवे पर घने कोहरे के चलते टकराए कई वाहन, ट्रैफिक हुआ जाम

करनाल (एजेंसी)। हरियाणा के करनाल में नेशनल हाइवे पर घने कोहरे के चलते बड़ा सड़क हादसा हो गया। मधुबन से लेकर बसताडा टोल प्लाजा के बीच अलग-अलग स्थानों पर कई बड़े और छोटे वाहन आपस में टकरा गए, जिससे हाइवे पर अफरा-तफरी मच गई। दुर्घटना के बाद नेशनल हाइवे पर लंबा जाम लग गया, जिसके चलते वाहनों को सर्विस लेन से निकाला गया। हादसे की सूचना मिलते ही पुलिस की टीमें मौके पर पहुंचीं और क्षतिग्रस्त वाहनों को हाइड्रा की मदद से हाईवे से हटाया गया। पुलिस के मुताबिक यह हादसा सुबह के वक्त हुआ जब इलाके में घना कोहरा छाया हुआ था और विजिबिलिटी बेहद कम थी। इस कारण वाहन चालकों को आगे का रास्ता साफ नजर नहीं आया और एक के बाद एक कई वाहन टकराते चले गए। थाना मधुबन के इंचार्ज ने बताया कि सुबह सूचना मिली थी कि नेशनल हाईवे पर तीन-चार अलग-अलग जगहों पर वाहन आपस में टकरा गए हैं। शुरुआती जांच में सामने आया है कि सभी हादसे कोहरे के कारण हुए हैं। उन्होंने कहा कि हादसे में जो लोग घायल हुए थे, उन्हें इलाज के लिए अस्पताल में भर्ती कराया है। क्षतिग्रस्त वाहनों को हाइड्रा की मदद से सड़क से हटाकर ट्रैफिक को सुचारू कराया गया। हादसे में फंसे वाहन चालकों ने भी कोहरे को हादसे की वजह बताया है। एक वाहन चालक ने कहा कि जैसे ही वह नेशनल हाइवे पर चढ़े, कोहरा इतना घना था कि कुछ भी नजर नहीं आ रहा था। अचानक एक बस ने ब्रेक लगा दिए और उसके पीछे चल रहे वाहन एक के बाद एक टकराते चले गए। करीब एक दर्जन से ज्यादा गाड़ियां टकरा गईं। चालक ने बताया कि वह यमुनानगर से दिल्ली जा रहे थे, तभी यह हादसा हुआ। निजी बस में सवार कुछ यात्रियों को मामूली चोटें आई हैं।

पंजाब में दो किशोरों की संदिग्ध मौत, परिवार ने जताई हत्या की आशंका

जालंधर (एजेंसी)। जालंधर के भोगपुर क्षेत्र में 17 वर्षीय अर्शप्रीत सिंह और उसके मित्र गोपेश की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत का मामला सामने आया है। दोनों किशोर 13 जनवरी (लोहड़ी की रात) घर से बाइक पर निकले थे और अचानक लापता हो गए। उनके शव बहराम श्रेष्ठा रोड के पास एक लिंक सड़क पर पड़े हुए पाए गए। पुलिस ने उन्हें अस्पताल ले जाने पर मृत घोषित किया। अर्शप्रीत के चाचा का कहना है कि ह केवल सड़क हादसा नहीं बल्कि सोची-समझी साजिश हो सकती है। भोगपुर पुलिस ने प्रारंभिक तौर पर सड़क हादसा दर्ज किया था। हालांकि परिजनों की आपत्ति और हत्या के संदेह के चलते पुलिस अब सीडीआर और पोस्टमार्टम रिपोर्ट की मदद से मामले की गहन जांच कर रही है। अर्शप्रीत के पिता वर्तमान में लेबनान में कार्यरत हैं, इसलिए अंतिम संस्कार उनके आने के बाद किया जाएगा। घर में माता मंजीत कौर और भाई-बहन अत्यंत दु:खी हैं। दोनों किशोर पड़ोसी गांवों गिलड़ा और पुदिया के रहने वाले थे और गहरे दोस्त थे।

पंजाबी सिंगर बी प्राक को जान से मारने की धमकी

जालंधर (एजेंसी)। पंजाबी सिंगर बी प्राक को जानलेवा धमकी मिली है। धमकी देने वाले ने 10 करोड़ रुपए की भारी भरकम फिरौती की मांग की और कहा कि अगर एक हफ्ते में पैसे नहीं दिए गए तो बी प्राक को मिट्टी में मिला दिया जाएगा। यह धमकी सीधे बी प्राक को नहीं बल्कि उनके करीबी दोस्त और पंजाबी सिंगर दिलनूर बबलू के माध्यम से दी गई। दिलनूर बबलू ने हाल ही में मोहाली की वन राइज सोसाइटी, सेक्टर 99 से पुलिस में शिकायत दर्ज कराई। शिकायत के अनुसार उन्हें एक विदेशी नंबर से दो मिस्ड कॉल आए। अगले दिन उसी नंबर से कॉल आई, जिसे उन्होंने उठाया नहीं। इसके बाद एक वॉयस मैसेज आया, जिसमें धमकी देने वाले ने खुद को आरजू बिश्नोई बताया। वॉयस मैसेज में कहा गया कि बी प्राक को 10 करोड़ रुपए का इंतजाम करना होगा। धमकी देने वाले ने चेतावनी दी कि चाहे वे किसी भी देश में जाएं, अगर उनके साथ नहीं चले तो उन्हें मिट्टी में मिला दिया जाएगा। दिलनूर ने बताया कि वे और बी प्राक अक्सर शोज और शूटिंग के लिए बाहर जाते हैं, इसलिए उनकी सुरक्षा खतरे में है। आरजू बिश्नोई को लॉरेंस बिश्नोई गैंग का सदस्य माना जाता है। इस गैंग पर पहले भी सेलिब्रिटीज और कारोबारियों को निशाना बनाने का आरोप है। पुलिस ने मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच शुरू कर दी है। दिलनूर ने स्क्रीनशॉट और वॉयस रिकॉर्डिंग पुलिस को सौंपकर सुरक्षा की मांग की है।

कुपवाड़ा पुलिस ने महिला ड्रग पेडलर को 2.3 किलो हेरोइन के साथ पकड़ा

कुपवाड़ा (एजेंसी)। कुपवाड़ा पुलिस ने वार ऑन ड्रग्स अभियान के तहत बड़ी सफलता हासिल की है। शुक्रवार को गुलगाम क्षेत्र के मगराय मोहल्ला के पास नाका, चेकिंग के दौरान वाहन संख्या जेके09सी-1178 को रोका गया। पुलिस टीम ने वाहन में सवार एक महिला यात्री के हाव-भाव संदिग्ध पाए। इसी दौरान वाहन चालक और दो अन्य सवार मौके से फरार हो गए। पुलिस ने महिला की तलाशी लेने पर उसके कब्जे से 2.3 किलोग्राम हेरोइन जैसी मादक पदार्थ बरामद की। मौके पर ही महिला को हिरासत में ले लिया गया और पूछताछ शुरू कर दी गई है। अधिकारियों के अनुसार, यह मादक पदार्थ तस्करी के बड़े नेटवर्क से जुड़ा हो सकता है। इस संबंध में कुपवाड़ा पुलिस थाना में एफआईआर संख्या 13/2026 दर्ज की गई है, जिसमें एनडीपीएस एक्ट की धारा 8/21/29 शामिल है। पुलिस ने बताया कि फरार आरोपियों की तलाश के लिए विशेष टीमें गठित की गई हैं और मामले की गहन जांच जारी है। जम्मू-कश्मीर पुलिस पूरे राज्य में ड्रग तस्करों और ड्रग पेडलर्स के खिलाफ आक्रामक अभियान चला रही है। इसके तहत पुलिस गैर-कानूनी गतिविधियों से उत्पन्न धन से बनाई गई संपत्तियों को भी अटैच करती है। ऐसी संपत्तियों को अटैच करने के लिए अदालत से आवश्यक अनुमति प्राप्त की जाती है।

सिलेंडर विस्फोट से झुलसे पांच मजदूरों की इलाज के दौरान मौत, सभी यूपी के रहने वाले

दौंड (एजेंसी)। महाराष्ट्र के दौंड में 7 जनवरी को हुए गैस सिलेंडर विस्फोट मामले में पांच की मौत हुई है। बता दें दौंड पाट्स रोड पर गिरिम की सीमा में स्थित एक होटल में हुए इस भीषण हादसे में 12 मजदूर गंभीर रूप से झुलस गए थे। इनमें से छह मजदूरों को गंभीर हालत में पुणे के अस्पताल में भर्ती कराया था, जहां इलाज के दौरान पांच मजदूरों ने दम तोड़ दिया। मीडिया रिपोर्ट में पुलिस सब-इंस्पेक्टर ने मृतकों के नामों की आधिकारिक पुष्टि की है।

भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र का नाम नहीं, बल्कि देश का चरित्र है: भागवत

भारत में कुछ भी अच्छा या बुरा होगा, तो हिंदुओं से पूछा जाएगा

नागपुर (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि भारत में कुछ भी अच्छा या बुरा होगा, तो हिंदुओं से इसके बारे में पूछा जाएगा। क्योंकि भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र का नाम नहीं, बल्कि देश का चरित्र है। उन्होंने कहा कि हिंदू समाज पारंपरिक रूप से समावेशी और सभी को स्वीकार करने वाला रहा है जो रीति-रिवाजों, पहनावे, खान-पान, भाषा, जाति और उपजाति में विविधता को अपनाता है। इन मतभेदों को संघर्ष का कारण नहीं बनने देता। भागवत ने यह बात गंगापुर में आयोजित हिंदू सम्मेलन में कही।

उन्होंने कहा कि युवाओं का योगदान देश की प्रगति और भविष्य निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण है। संघ न तो किसी का विरोध करता है और न ही किसी से प्रतिस्पर्धा में है। इसका उद्देश्य केवल एक मजबूत और सामंजस्यपूर्ण समाज का निर्माण करना है। उन्होंने युवाओं से इस सामूहिक प्रयास में सक्रिय रूप से भाग लेने की अपील की।

आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि हमें जाति, संप्रदाय, भाषा या व्यवसाय की परवाह किए बिना हिंदू मित्र बनाने चाहिए। इससे समानता स्थापित होगी। संघ पहल करेगा, लेकिन समुदाय को इसका नेतृत्व करना होगा।' उन्होंने कहा, 'भगवान राम ने भी रावण से बातचीत के जरिए युद्ध टालने की कोशिश की थी, लेकिन बाद में हथियार उठाए। हमें भी अन्याय के खिलाफ कदम-दर-कदम लड़ना चाहिए।' आरएसएस के शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में आयोजित युवा सम्मेलन में भागवत ने युवाओं से अपील की कि वे ज्ञान और कौशल प्राप्त करने के लिए विदेश जाएं, लेकिन इसे भारत के विकास में उपयोग करें। आरएसएस प्रमुख भागवत ने कहा कि जो लोग एकीकरण और सद्भावपूर्ण सह-अस्तित्व में विश्वास रखते हैं, वे हिंदू समाज और देश के सच्चे चरित्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह परंपरा सदियों से आक्रमणों और विनाश के बावजूद संरक्षित रही। ऐसे लोग हिंदू कहलाते हैं और उनकी भूमि भारत कहलाती है। उन्होंने कहा कि अगर लोग अच्छे, दृढ़ और ईमानदार बनने का प्रयास करें तो देश भी वैश्विक मंच पर इन गुणों को प्रदर्शित करेगा। उन्होंने कहा कि विश्व भारत से कुछ अपेक्षा रखता है और पर्याप्त शक्ति व प्रभाव होने पर देश सार्थक योगदान देने में सक्षम होगा। भागवत ने कहा कि शक्ति में केवल सशस्त्र बल ही नहीं, बल्कि बुद्धि, सिद्धांत और नैतिक मूल्य भी शामिल होते हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक भागवत ने आत्मनिर्भरता और स्थानीय उत्पादों के इस्तेमाल पर जोर देते हुए कहा कि हमें स्थानीय वस्तुएं खरीदनी चाहिए। जो चीज यहां नहीं बन सकती, उसे अन्य देशों से खरीदा जा सकता है। भारतीय नीति निर्माता अंतरराष्ट्रीय व्यापार कर रहे हैं, लेकिन किसी के दबाव में नहीं। हमने आत्मनिर्भरता का मार्ग चुना है और हमें इसी मार्ग पर चलना चाहिए। उन्होंने कहा कि हमें विदेशों में रोजगार सृजन की चिंता नहीं करनी चाहिए, यह उन्हें करना है। जब वैश्वीकरण की बात करते हैं, तो वे वैश्विक बाजार की अपेक्षा रखते हैं। हम वैश्विक परिवार की अपेक्षा रखते हैं।

कनाडा पुलिस की बिश्नोई गैंग को लेकर कौन सी रिपोर्ट... जो भारत और कनाडा में सुर्खियों में आई

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत और कनाडा के बीच पटरी पर लौट रहे रिश्तों के बीच बिश्नोई गैंग को लेकर रिपोर्ट चर्चा में आ गई है। यह रिपोर्ट रॉयल कैनेडियन माउंटेड पुलिस की ओर से आई है। रिपोर्ट में दावा है कि कनाडा में लॉरेंस गैंग भारत सरकार की तरफ से काम कर रही थी। अब रिपोर्ट पर

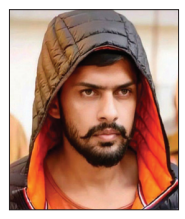

कनाडा के ब्रिटिश कोलंबिया प्रांत के नेता की ओर से सफाई आई है। कनाडाई नेता ने इस रिपोर्ट को सिरे से खारिज कर दिया है। इसके बाद सवाल है कि एक तरफ जहां दोनों देशों रिश्तों को फिर से पटरी पर लाने की कोशिश में जुटे हैं। तब इसतरह की रिपोर्ट को पेश करना कह तक उचित है। कनाडाई प्रांत ब्रिटिश कोलंबिया के प्रीमियर डेविड एबी ने कहा कि यह तीन पेज का ब्रीफिंग नोट निकला, और जिस पैराग्राफ का जिक्र शुरुआती रिपोर्ट में किया था, वह अक्टूबर 2024 के समय के पब्लिकली मौजूद थी। इसके बाद आरोप जिनके बारे में हमें पता था और जिनकी उस समय पूरी तरह से जांच की गई थी। एबी ने कहा कि रिपोर्ट सामने आने के बाद उनका डेलिगेशन बहुत अधिक चिंतित था और जब तक उन्हें पूरा डॉक्यूमेंट नहीं मिल गया, तब तक उन्होंने भारत में बैठक लगभग कैंसिल कर दी थीं। इस घटनाक्रम पर अपनी निराशा जाहिर करते हुए, एबी ने कहा कि भारत में ट्रेड मिशन पर आने से पहले वे बहुत अधिक सावधान थे। एबी ने बताया कि उन्होंने कनाडा के नेशनल डिफेंस मिनिस्ट्री, कैनेडियन सिक्योरिटी इंटेलिजेंस सर्विस से ब्रीफिंग ली थी। दोनों देशों के बीच संबंधों की मौजूदा स्थिति को समझने के लिए फेडरल गवर्नमेंट के साथ कई बार बातचीत की थी।

77वें गणतंत्र दिवस की तैयारियों को लेकर सुरक्षा एजेंसी अलर्ट... आंतकियों के पोस्टर चस्पा

नई दिल्ली (एजेंसी)। नई दिल्ली में 77वें गणतंत्र दिवस की तैयारियों के बीच सुरक्षा अलर्ट जारी किया है। दिल्ली पुलिस और अन्य सुरक्षा एजेंसियों ने मेट्रो स्टेशनों, बस अड्डों, व्यस्त बाजारों और भीड़भाड़ वाले इलाकों में खालिस्तान और अलकायदा से जुड़े संदिग्धों के पोस्टर चस्पा कर दिए हैं। इन पोस्टरों का उद्देश्य जनता को इन आतंकवादियों की पहचान कराने और सतर्क रहने के लिए प्रेरित करना है। अगर कोई संदिग्ध कहीं दिखाई देता है, तब तुरंत पुलिस को सूचित करने की अपील की गई है।

सुरक्षा एजेंसियों के अनुसार, खालिस्तान टाइगर फोर्स (केटीएस) के प्रमुख अर्श डल्ला पर विशेष ध्यान दिया गया है। डल्ला पहले पंजाब में था और अब कनाडा से नेटवर्क चला रहा है। इसके अलावा खालिस्तान जिंदाबाद फोर्स के प्रमुख रंजीत सिंह नीता और परमजीत सिंह पम्मा के पोस्टर भी लगे हैं। रिपोर्टों के मुताबिक, ये लोग देश में सांप्रदायिक तनाव फैलाने में सक्रिय हैं। भारतीय सुरक्षा एजेंसियों का फोकस जिहादी नेटवर्क पर भी है। संभल के शरजील अख्तर, आईएस मामलों में मोहम्मद रेहान और अलकायदा से जुड़े झारखंड के मोहम्मद अबू सुफियान के भी फोटो लगाए गए हैं। सुफियान ने भारत में अलकायदा नेटवर्क खड़ा किया और देश के स्लीपर सेल्स को ट्रेनिंग देता है। दिल्ली पुलिस के द्वारा जनता से अपील की गई है कि 26 जनवरी के आसपास विशेष सतर्क रहें। यह पहली बार है जब दिल्ली में संदिग्ध आतंकियों के पोस्टर इस तरह सार्वजनिक रूप से लगाए गए हैं। पूरी सुरक्षा व्यवस्था के तहत निगरानी बढ़ाई गई है ताकि कोई भी आतंकवादी गतिविधि होने से रोकी जा सके।

केजरीवाल ने आतिशी को बचाने पंजाब पुलिस का गलत इस्तेमाल कर पाप किया

दिल्ली के मंत्री बोले-विपक्ष के नेता द्वारा किए गलत काम की अब पुष्टि हो गई

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली विधानसभा स्पीकर विजेंद्र गुप्ता ने आप नेता आतिशी से जुड़े विवादित वीडियो क्लिप से संबंधित फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी की रिपोर्ट पेश की। इस पर दिल्ली सरकार में मंत्री कपिल मिश्रा ने शनिवार को सत्यमेव जयते कहा और दावा किया कि विधानसभा में विपक्ष के नेता द्वारा किए गए गलत काम की अब पुष्टि हो गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल ने आतिशी को बचाने के लिए पंजाब पुलिस का गलत इस्तेमाल करके बड़ा पाप किया है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक कपिल मिश्रा ने एक्स पर एक पोस्ट में लिखा- सत्यमेव जयते। दिल्ली विधानसभा अध्यक्ष को मिली फोरेंसिक रिपोर्ट अब पब्लिक में है। आतिशी ने सदन में जो पाप किया वह अब सत्यापित हो चुका है। उन्होंने आगे लिखा- उससे बड़ा पाप केजरीवाल ने किया, गुरुओं का अपमान करने वाली आतिशी को बचाने के लिए पंजाब पुलिस का दुरुपयोग किया। सत्य को कभी प्रमाण की जरुरत नहीं होती है। आज दूध का दूध पानी का पानी हो गया। इससे पहले स्पीकर विजेंद्र गुप्ता ने असेंबली में एफएसएल रिपोर्ट पेश की और बताया कि वीडियो में कोई बदलाव या छेड़छाड़ नहीं की गई थी।

गुप्ता ने कहा कि 8 जनवरी को दिल्ली असेंबली में, विपक्ष ने असेंबली सेशन के वीडियो फुटेज की जांच की मांग की थी, क्योंकि इसकी प्रामाणिकता को लेकर कुछ सवाल उठाए गए थे। इस मांग पर कार्रवाई करते हुए उस सेशन की रिकॉर्डिंग फोरेंसिक साइंस लेबोरेटरी को भेजी गई थी। उन्होंने कहा कि यह उस दिन का हूबहू रिकॉर्ड है। सभी तथ्यों, नियमों और कानूनों को ध्यान में रखते हुए ऑडियो और वीडियो दोनों एफएसएल को दिए गए थे।

रिपोर्ट के नतीजों का जिक्र करते हुए स्पीकर ने कहा कि वीडियो की प्रामाणिकता और असलियत के बारे में, हमें एफएसएल रिपोर्ट मिल गई है। लैब ने साफ तौर पर कहा है कि वीडियो में कोई बदलाव या छेड़छाड़ नहीं की गई है। उन्होंने कहा कि रिपोर्ट साबित करती है कि गुरुओं के सम्मान और इज्जत के संबंध में, एक राजनीतिक पार्टी ने किसी तरह से सरकारी एजेंसियों का दुरुपयोग किया है और गुरुओं की गरिमा से समझौता किया है। मैं विपक्ष के नेता से आग्रह करना चाहूंगा कि वे आगे आएं और मेरे चैंबर में मुझसे मिलें। नहीं तो, आने वाले समय में इस मामले को बहुत गंभीरता से देखा जाएगा। उन्हें अपनी गलती माननी चाहिए, अपने बयान वापस लेने चाहिए और माफी मांगनी चाहिए।

आम आदमी पार्टी ने शुक्रवार को मंत्री कपिल मिश्रा के खिलाफ विशेषाधिकार हनन की कार्रवाई की मांग की थी, जब पंजाब की एक अदालत ने उनके द्वारा सर्कुलेट किए गए एक वीडियो को फर्जी और गुमराह करने वाला घोषित कर दिया। पार्टी के मुख्य सचेतक संजीव झा ने विधानसभा स्पीकर गुप्ता को लिखे एक पत्र में कहा कि जालंधर कोर्ट ने वीडियो को सोशल मीडिया से तुरंत हटाने का आदेश दिया, जिससे यह सामने आया कि कैसे इसका इस्तेमाल आतिशी की छवि खराब करने के लिए किया गया, जिसमें उन्हें गलत तरीके से सिख गुरु साहिबों के नाम लेते हुए दिखाया गया था।

बांग्लादेश जिहादियों का जंगल बना, कट्टरपंथियों ने व्यवस्था को हाइजैक किया

वरिष्ठ बीजेपी नेता नकवी ने हिंदुओं के खिलाफ हो रही हिंसा पर कही बात

प्रयागराज (एजेंसी)। पूर्व केंद्रीय मंत्री और वरिष्ठ बीजेपी नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने बांग्लादेश में अल्पसंख्यकों के खिलाफ हिंसा को लेकर कहा है कि बांग्लादेश जिहादियों का जंगल बन चुका है। वहां के कट्टरपंथियों ने देश की व्यवस्था को हाइजैक कर लिया है। उन्होंने कहा कि बांग्लादेश में हो रही हिंसा को लेकर भारत का शीर्ष नेतृत्व गंभीर है। भारत बिना किसी शोरगुल के हिंसा के खिलाफ कार्रवाई में जुटा है, आने वाले दिनों में जल्द ही इसका व्यापक असर दिखेगा।

नकवी ने महागठबंधन पर भी जमकर निशाना साधा। उन्होंने कहा कि गठबंधन की गठरी में अनेकों छेद और मतभेद हैं। हर चुनाव में नया गठबंधन तैयार हो जाता है, चुनाव समाप्त होने के बाद गठबंधन समाप्त भी हो जाता है। कांग्रेस जो कभी देश की बड़ी पार्टी हुआ करती थी आज वह मोहल्ले की पार्टी बनकर रह गई है। वहीं, कांग्रेस, सपा समेत अन्य राजनैतिक दल बिना जनाधार के सरकार बनाने की जुगत में लगे रहते हैं। कांग्रेस से कंधे से कंधा मिलाकर चलने वाली पार्टियों को समझना होगा कि कांग्रेस की जमीन जरूर बंजर है फिर भी उसके हाथ में बेवफाई का खंजर है। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक नकवी ने कहा कि कांग्रेस, सपा समेत कुछ अन्य सियासी दल चुनावी मैदान में रण बांकुरी की जगह रण छोड़ बहादुरी की प्रतिस्पर्धा और पराक्रम में जुटे हैं। विपक्षी कुनबे का कुंठित कारवा इस संकल्प को सिद्धि साबित करने वाली तपस्या की ताक़त और परिश्रम के परिणाम से सबक-संदेश लेने के बजाय कुंठा, कटुता, कोलाहल के कबाड़खाने में कैद होता जा रहा है। उन्होंने कहा कि सत्तालोलुप सुल्तानों की संवैधानिक संस्थानों की सामंती लींचिंग की सनक उनका सियासी सूपड़ा साफ कर रही है। बीजेपी के विजय की गिनती ने सामंती सियासत और विरासत का गणित बिगाड़ दिया है।

घने कोहरे और कम दृश्यता के चलते कई उड़ानें प्रभावित, कंपनियों ने जारी की एडवाइजरी

नई दिल्ली (एजेंसी)। उत्तरी भारत में घने कोहरे और कम दृश्यता के चलते हवाई यातायात पर असर पड़ रहा है। मौसम को देखते हुए एयरलाइन कंपनियों ने यात्रियों के लिए एडवाइजरी जारी की है। इंडिगो ने बताया कि लखनऊ में कम दृश्यता के कारण कुछ उड़ानों के समय में बदलाव हो सकता है। वहीं, आकासा एयर ने नेटवर्क की कुछ फ्लाइट्स के समय में बदलाव करने की जानकारी दी है। इंडिगो एयरलाइन ने एक्स पर पोस्ट में कहा कि लखनऊ में कम विजिबिलिटी और कोहरे के कारण फ्लाइट शेड्यूल पर असर पड़ सकता है। इंडिगो ने यात्रियों को सलाह दी है कि वे अपनी उड़ान की अपडेट वेबसाइट या मोबाइल ऐप के जरिए नियमित रूप से चैक करते रहें।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक एयरलाइन ने कहा कि हम आपसे अनुरोध करते हैं कि आप हमारी वेबसाइट या ऐप के जरिए अपनी फ्लाइट का स्टेटस चेक करते रहें। हमारी टीमें हर कदम पर आपकी मदद और सपोर्ट करने के लिए मौजूद हैं। हमें उम्मीद है कि मौसम जल्द ही साफ होगा और हम अपने नियमित शेड्यूल पर वापस लौटेंगे। अकासा एयर ने जानकारी दी कि उत्तरी भारत में कोहरे के कारण, हमारे नेटवर्क की कुछ फ्लाइट्स का समय बदल दिया गया है। एयरलाइन ने कहा कि हमें आपके ट्रैवल प्लान में होने वाली असुविधा के लिए बहुत खेद है और इस समय आपकी समझ के लिए हम आपकी सराहना करते हैं। आपका आराम और देखभाल हमारी प्राथमिकता है। कंपनी ने एक्स पोस्ट में लिखा कि मौसम की स्थिति हमारे कंट्रोल से बाहर है, लेकिन हमारी ग्राउंड पर मौजूद और अकासा केयर सेंटर की टीमें आपकी यात्रा में किसी भी बदलाव के दौरान आपकी मदद करने और सपोर्ट देने के लिए हमेशा मौजूद हैं। ताजा अपडेट के लिए, कृपया एयरपोर्ट जाने से पहले अपनी फ्लाइट का स्टेटस चेक करें। इधर, दिल्ली एयरपोर्ट पर लो विजिबिलिटी प्रोसीजर अभी भी लागू हैं। हालांकि सभी उड़ान संचालन सामान्य रूप से जारी हैं। दिल्ली एयरपोर्ट ने एक्स पोस्ट में लिखा, लो विजिबिलिटी प्रोसीजर अभी भी जारी हैं। सभी फ्लाइट ऑपरेशन सामान्य रूप से चल रहे हैं। यात्रियों को ताजा फ्लाइट अपडेट के लिए अपनी-अपनी एयरलाइंस से संपर्क करने की सलाह दी जाती है।

हार के बाद ठाकरे बंधुओं का संदेश: मराठी अस्मिता की लड़ाई जारी रहेगी

-संघर्ष ही हमारी पहचान, 'हर सांस मराठी के लिए' : राज ठाकरे

मुंबई (एजेंसी)। बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) चुनावों में अपेक्षित सफलता न मिलने के बाद महाराष्ट्र की राजनीति में ठाकरे बंधुओं की प्रतिक्रियाएं सामने आई हैं। महाराष्ट्र नवनिर्माण सेना (मनसे) प्रमुख राज ठाकरे और शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) ने अलग-अलग बयानों में साफ कर दिया है कि चुनावी हार के बावजूद मराठी पहचान, अधिकार और सम्मान की राजनीतिक लड़ाई थमी नहीं है।

मनसे प्रमुख राज ठाकरे ने चुनाव परिणामों के बाद जारी अपने संदेश में मराठी समाज, मराठी भाषा और महाराष्ट्र के विकास के लिए संघर्ष जारी रखने का संकल्प दोहराया। उन्होंने कहा कि चुनाव में अपेक्षित परिणाम न मिलने का अर्थ यह नहीं कि पार्टी या कार्यकर्ता हिम्मत हार जाएं। राज ठाकरे ने कहा कि यह चुनाव पैसों और सत्ता की ताकत के खिलाफ शिवशक्ति की लड़ाई थी, जिसमें मनसे कार्यकर्ताओं ने पूरी मजबूती से मुकाबला किया।

उन्होंने मनसे और शिवसेना के सभी निर्वाचित पार्षदों को बधाई देते हुए कहा कि उनका संघर्ष हमेशा याद रखा जाएगा। राज ठाकरे ने माना कि संगठन से कुछ कमियां भी रहीं, लेकिन उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि इन्हीं अनुभवों से सीख लेकर आगे की रणनीति तय की जाएगी।

राज ठाकरे ने अपने बयान में दो टूक कहा कि उनका संघर्ष मराठी लोगों, मराठी भाषा, मराठी पहचान और समृद्ध महाराष्ट्र के लिए है। उन्होंने निर्वाचित पार्षदों से अपील की कि वे नगर निकायों में मराठी समाज के हितों की मजबूती से रक्षा करें और यदि मराठी लोगों के खिलाफ कोई अन्याय होता है तो उसका जवाब पूरी ताकत से दें। राज ठाकरे ने यह भी कहा कि महाराष्ट्र में सत्ता में बैठे लोग और उनके समर्थक बार-बार मराठी समाज को कमजोर करने की कोशिश करते हैं। ऐसे में मराठी अस्मिता की रक्षा के लिए एकजुट रहना जरूरी है। उन्होंने संगठन को फिर से खड़ा करने और जमीनी स्तर पर काम तेज करने का आह्वान किया।

अपने संदेश के अंत में राज ठाकरे ने भावुक अपील करते हुए कहा कि चुनाव आते-जाते रहेंगे, लेकिन उनकी राजनीति और जीवन का हर पल मराठी के लिए समर्पित है। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि अब निराश होने के बजाय फिर से जुटकर पार्टी को नई दिशा देनी होगी और मराठी समाज के मुद्दों को मजबूती से उठाना होगा।

लड़ाई अभी खत्म नहीं

उधर, शिवसेना (उद्धव बालासाहेब ठाकरे) ने भी बीएमसी चुनावों में हार के बाद पहली प्रतिक्रिया दी है। पार्टी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर पोस्ट कर स्पष्ट किया कि महाराष्ट्र की राजनीतिक लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। शिवसेना (यूबीटी) ने कहा कि यह संघर्ष तब तक जारी रहेगा,

जब तक मराठी समाज को उसका हक, अधिकार और सम्मान नहीं मिल जाता। पार्टी के बयान में संकेत दिए गए हैं कि आने वाले दिनों में शिवसेना (यूबीटी) मराठी अस्मिता, स्थानीय अधिकारों और मुंबई-महाराष्ट्र से जुड़े मुद्दों को और आक्रामक तरीके से उठाएगी।

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

संक्षिप्त समाचार

नेपाल में पलटा ट्रक, पांच की मौत, तीन घायल

ढाका, एजेंसी। नेपाल के सुनसरी जिले में बृहस्पतिवार को एक ट्रक दुर्घटनाग्रस्त होने से पांच लोगों की जान चली गई और तीन अन्य घायल हो गए। यह हादसा भोकराहा नरसिंह ग्रामीण नगरपालिका के सोनयाही इलाके में हुआ। पुलिस के अनुसार, मार्बल से लदा ट्रक कोशी प्रांत के विराटनगर से राजबिराज की ओर जा रहा था। इसी दौरान चालक ने वाहन पर से नियंत्रण खो दिया और ट्रक पलट गया। इसमें पांच लोगों की मौत हो गई। सभी घायलों को प्राथमिक चिकित्सा के बाद इलाज के लिए बिराटनगर के बिराट टीचिंग अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

जुलाई योद्धाओं को राहत अभियोजन से संरक्षण का कानून मंजूर

ढाका, एजेंसी। बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने बृहस्पतिवार को अगस्त 2024 के जनांदोलन में शामिल प्रदर्शनकारियों को अभियोजन से संरक्षण देने के लिए एक अध्यादेश के मसौदे को मंजूरी दे दी। यह आंदोलन तत्कालीन प्रधानमंत्री शेख हसीना की अवामी लीग सरकार के पतन का कारण बना था। कानून मामलों के सलाहकार आसिफ नजरुल ने प्रेस वार्ता में बताया कि मुहम्मद यूनुस की अध्यक्षता में हुई सलाहकार परिषद की बैठक में जुलाई जनउभार संरक्षण और जवाबदेही अध्यादेश को मंजूरी दी गई। इसके तहत उन प्रदर्शनकारियों (जिन्हें आमतौर पर जुलाई योद्धा कहा जाता है) को राजनीतिक प्रतिरोध के उद्देश्य से किए गए कृत्यों के लिए कानूनी संरक्षण दिया जाएगा। नजरुल ने कहा कि अध्यादेश में राजनीतिक प्रतिरोध का अर्थ उस कार्रवाई से है, जो लोकतांत्रिक शासन व्यवस्था की बहाली और फासीवादी सरकार को हटाने के लिए की गई। उन्होंने स्पष्ट किया कि जिन मामलों में अब तक केस दर्ज किए गए हैं, उन्हें सरकार वापस लेगी और भविष्य में जुलाई योद्धाओं के खिलाफ नए मामले दर्ज नहीं किए जा सकेंगे।

नेपाल : मधेश से आरएसपी का चुनावी आगाज, जनकपुर में जुटेंगे रवि-बालेंद्र

काठमांडू, एजेंसी। राष्ट्रीय स्वतंत्र पार्टी (आरएसपी) ने आगामी आम चुनावों के लिए अपने अभियान की शुरुआत मधेश प्रांत से करने का निर्णय लिया है। पार्टी प्रवक्ता मनीष झा ने कहा, 19 जनवरी को जनकपुरधाम में पहली बड़ी राजनीतिक सभा आयोजित होगी। सभा को पार्टी अध्यक्ष रवि लामिछाने व वरिष्ठ नेता बालेंद्र शाह (बालेन) संबोधित करेंगे। आरएसपी ने पहले ही बालेन को भावी पीएम प्रत्याशी के रूप में पेश किया है। बालेन के निर्वाचन क्षेत्र को लेकर पार्टी के भीतर गहन चर्चा जारी है। काठमांडो या झापा के बजाय, उन्हें उनके जन्मस्थान महोत्तरी से चुनाव लड़ने का सुझाव दिया गया है।

नेपाली कांग्रेस में फूट चुनाव चिह्न पेड़ पर दो गुटों ने किया दावा

काठमांडू, एजेंसी। नेपाल की बड़ी पार्टी नेपाली कांग्रेस में औपचारिक विभाजन के बाद अब पार्टी के चुनाव चिह्नपेड़ को लेकर कानूनी जंग शुरू हो गई है। 5 मार्च को होने वाले आम चुनावों से ठीक पहले शेर बहादुर देउबा और गगन थापा-विश्व प्रकाश शर्मा के गुटों ने निर्वाचन आयोग में असली पार्टी होने का दावा किया है।

एआई प्रशिक्षण...विकिपीडिया ने बिग टेक से किया समझौता

वाशिंगटन, एजेंसी। विकिपीडिया की मूल संस्था विकिमीडिया फाउंडेशन ने अपने विशाल डेटाबेस के जरिये आय बढ़ाने के लिए माइक्रोसॉफ्ट, मेटा और अमेजन जैसी दिग्गज टेक कंपनियों के साथ समझौता किया है। इस समझौते के तहत विकिपीडिया का कंटेंट इन कंपनियों के एआई मॉडल्स को प्रशिक्षित करने के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। करीब 300 से अधिक भाषाओं में मौजूद 6.5 करोड़ लेखों के मुफ्त उपयोग से सर्वर लागत बढ़ने के कारण संस्था अब विकिमीडिया एंटरप्राइज को बढ़ावा दे रही है।

अमेरिका : चुनाव लड़ने के लिए आईसीई की शीर्ष अधिकारी ने दिया इस्तीफा

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी आव्रजन और सीमा शुल्क प्रवर्तन एजेंसी (आईसीई) की एक शीर्ष अधिकारी मैडिसन शीहान ने गुरुवार को अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने यह कदम ओहायो से कांग्रेस (संसद) चुनाव लड़ने के लिए उठाया है। उनका लक्ष्य कांग्रेस में सबसे लंबे समय से सेवा दे रहीं डेमोक्रेट सांसद मार्सी कैप्चर को इस साल होने वाले चुनाव में हराना है। एक वीडियो में आईसीई की पूर्व उपनिदेशक शीहान ने कहा कि उन्होंने अपने एक साल से भी कम कार्यकाल में गैरकानूनी आव्रजन को रोकने के लिए उतना काम किया है, जितना मार्सी कैप्चर ने वॉशिंगटन में अपने 43 साल के करियर में नहीं किया।

क्या हमास समर्थक खलील पर अमेरिकी नकेल? ट्रंप प्रशासन बोला- अदालत का फैसला बड़ी जीत

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका की थर्ड सर्किट कोर्ट ऑफ अपील्स के फैसले ने फलस्तीनी समर्थक कार्यकर्ता महमूद खलील के मामले को एक बार फिर सियासी और कानूनी बहस के केंद्र में लाकर खड़ा किया है। अपीलीय अदालत ने महमूद की रिहाई के आदेश को रद्द करते हुए ट्रंप प्रशासन को बड़ी राहत दी है। कोर्ट ने दो के मुकाबले एक के बहुमत से निचली अदालत के आदेश को रद्द कर दिया है। इस फैसले को एक तरफ जहां ट्रंप प्रशासन ने अपनी जीत बताया है। वहीं दूसरी ओर नागरिक अधिकार संगठनों और मानवाधिकार कार्यकर्ताओं ने इसे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर गंभीर आघात करार दिया है। अपीलीय अदालत ने कहा कि जिस फेडरल कोर्ट ने खलील की रिहाई का आदेश दिया था, उसके पास इस मामले की सुनवाई का अधिकार ही नहीं था। अदालत के अनुसार, इमिग्रेशन और डिपोर्टेशन से जुड़े मामलों में अधिकार क्षेत्र केवल इमिग्रेशन कोर्ट के पास होता है, जैसा कि इमिग्रेशन एंड नेशनलिटी एक्ट में स्पष्ट किया गया है।

अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने बताया बड़ी जीत : इस फैसले के बाद अमेरिकी विदेश मंत्रालय ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर बयान जारी करते हुए कहा कि यह ट्रंप प्रशासन की एक बड़ी जीत है और अमेरिका अपनी राष्ट्रीय सुरक्षा से समझौता नहीं करेगा। सरकार ने यह भी स्पष्ट किया कि वह आतंकवादी संगठनों के समर्थकों को

देश के भीतर किसी भी तरह की गतिविधियों की अनुमति नहीं देगी।

अब आगे क्या होगा, समझिए : अपील कोर्ट के फैसले से अब यह रास्ता खुल गया है कि इमिग्रेशन अधिकारी महमूद खलील को दोबारा हिरासत में ले सकते हैं, हालांकि यह आदेश तुरंत प्रभाव से लागू नहीं होगा। खलील ने स्पष्ट किया है कि वे इस फैसले को अंतिम नहीं मानते और आगे कानूनी लड़ाई जारी रखेंगे। उन्होंने कहा कि यह निर्णय निराशाजनक है, लेकिन इससे उनका संघर्ष कमजोर नहीं पड़ेगा और वे न्याय और अपने अधिकारों की रक्षा के लिए हर संभव कानूनी रास्ता अपनाएंगे।

जज ने बहुमत के फैसले से जताई असहमति : इस मामले में एक जज ने बहुमत के फैसले से असहमति जताई। असहमति जताने वाली जज ने कहा कि इमिग्रेशन कोर्ट के पास संवैधानिक अधिकारों से जुड़े मामलों की पूरी तरह सुनवाई करने की क्षमता नहीं है। उन्होंने यह भी माना कि खलील ने अपनी हिरासत के दौरान गंभीर और अपूरणीय नुकसान झेला है, जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

न्यूयॉर्क के मेयर ने फैसले से जताई चिंता : यॉर्क के मेयर जोहरान ममदानी ने भी कोर्ट के इस फैसले पर चिंता जाहिर करते हुए कहा कि महमूद खलील की गिरफ्तारी राजनीतिक दमन का उदाहरण है और उन्हें स्वतंत्र रहना चाहिए। नागरिक स्वतंत्रता संगठनों का कहना है कि यह फैसला फेडरल अदालतों की भूमिका को कमजोर करता है और सरकार को असहमति की आवाजों को दबाने का अधिक अधिकार देता है। दूसरी ओर कानूनी विशेषज्ञों का मानना है कि खलील की कानूनी टीम अब पूरे थर्ड सर्किट कोर्ट में पुनर्विचार की मांग कर सकती है और इसके बाद मामला सुप्रीम कोर्ट तक भी पहुंच सकता है।

कौन है महमूद खलील, गौरतलब है कि महमूद खलील का जन्म सीरिया में हुआ था और वे अल्जीरिया के नागरिक हैं। वे अमेरिका के कानूनी स्थायी निवासी हैं और एक अमेरिकी नागरिक से विवाह कर चुके हैं। न्यूयॉर्क की कोलंबिया यूनिवर्सिटी में स्नातकोत्तर की पढ़ाई के दौरान उन्हें इमिग्रेशन अधिकारियों ने हिरासत में लिया था। उनपर आरोप है कि उन्होंने फलस्तीन और गाजा के समर्थन में प्रदर्शन किए और इस्राइल की आलोचना की। ट्रंप प्रशासन के दौरान ऐसे कई विदेशी छात्रों को निशाना बनाया गया, जिन पर सरकार ने राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए खतरा होने का दावा किया। खलील ने अपनी गिरफ्तारी को राजनीतिक बदले की कार्रवाई बताया है।

उनका कहना है कि उन्हें सिर्फ अपने विचार व्यक्त करने की वजह से हिरासत में लिया गया। हिरासत के दौरान वे अपने पहले बच्चे के जन्म के समय भी परिवार के साथ नहीं रह सके, जिसे उन्होंने अपने जीवन का सबसे दर्दनाक अनुभव बताया।

भूकंप के झटकों से दहला अमेरिका का ओरेगॉन, रिक्टर स्केल पर तीव्रता 6.2 रही

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका के ओरेगॉन इलाके के तटीय क्षेत्र में गुरुवार को भूकंप के झटके लगे। रिक्टर स्केल पर भूकंप के इन झटकों की तीव्रता 6.2 रही। हालांकि इसमें अभी किसी तरह के नुकसान की खबर नहीं हैं। जर्मन रिसर्च सेंटर फॉर जियोसाइंस ने बताया कि भूकंप का केंद्र जमीन के 10 किलोमीटर अंदर था। नेशनल सुनामी वार्निंग सेंटर द्वारा अभी तक सुनामी को लेकर कोई अलर्ट जारी नहीं किया गया है।

ओरेगॉन के इस इलाके में अक्सर आते हैं भूकंप : ओरेगॉन के जिस इलाके में भूकंप के झटके महसूस किए गए, वह ओरेगॉन और कैलिफोर्निया की सीमा पर स्थित है और यहां अक्सर भूकंप के झटके महसूस किए जाते हैं। इस इलाके में आने वाले अधिकतर भूकंप जमीन के भीतर होते हैं और अक्सर धरती पर महसूस नहीं होते। ओरेगॉन के जिस इलाके में भूकंप के झटके महसूस किए गए, वह ओरेगॉन और कैलिफोर्निया की सीमा पर स्थित है और यहां अक्सर भूकंप के झटके महसूस किए जाते हैं। इस इलाके में आने वाले अधिकतर भूकंप जमीन के भीतर होते हैं और अक्सर धरती पर महसूस नहीं होते।

कास्केडिया जोन में आता है ये इलाका : इससे पहले बीते साल सितंबर में भी ओरेगॉन में भूकंप के झटके महसूस किए गए थे। यह इलाका कास्केडिया जोन का हिस्सा है। कास्केडिया जोन उत्तरी वैंकूवर द्वीप से लेकर उत्तरी कैलिफोर्निया तक फैला हुआ है और पृथ्वी के सबसे शक्तिशाली भूकंप क्षेत्रों में से एक माना जाता है। साल 1700 में यहां 9.0 मैग्नीट्यूड का भूकंप आया था, जिससे भयंकर सुनामी आई थी। वैज्ञानिकों ने चेतावनी दी है कि अगर फिर इतनी तीव्रता का भूकंप आया और सुनामी आई तो तटीय इलाकों में भारी तबाही मच सकती है।

फलस्तीन नागरिकों को हथियार तस्करी के आरोप में दो इस्राइली गिरफ्तार : येरुशलम, एजेंसी। इस्राइल की सुरक्षा एजेंसी शिन बेट और इस्राइल पुलिस की संयुक्त कार्रवाई में हथियारों से जुड़े एक गंभीर मामले का खुलासा हुआ है। जांच के तहत दो इस्राइल अरब नागरिकों और एक फलस्तीनी व्यक्ति को आतंकियों तक हथियार पहुंचाने के शक में गिरफ्तार किया गया है। गुरुवार को इस मामले की जानकारी सार्वजनिक की गई। गिरफ्तार किए गए लोगों में लोड शहर के रहने वाले 25 वर्षीय हमदान इस्साम अबू लेबेडा और 25 वर्षीय मोहम्मद हसन खलील अमसाद शामिल हैं। इनके अलावा सामरिया इलाके के उर्ता गांव के निवासी 33 वर्षीय अहमद मोहम्मद सालेह अवाद को भी हिरासत में लिया गया है। जांच की शुरुआत तब हुई जब मोहम्मद अमसाद को यहूदिया और सामरिया क्षेत्र में घुसने की कोशिश करते हुए पकड़ा गया। उसके पास से एम 16 राइफल की 500 से ज्यादा गोलियां बरामद की गईं।

वेनेजुएला: कार्यवाहक राष्ट्रपति रोड्रिगेज ने तेल क्षेत्र से जुड़े कानूनों में सुधार की मांग की

काराकास, एजेंसी। वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिगेज ने गुरुवार को देश की तेल क्षेत्र से जुड़े कानूनों में सुधार की मांग की। उन्होंने संसद से ऐसे सुधारों को मंजूरी देने को कहा, जिससे विदेशी निवेश के लिए रास्ता खुल सके। यह बात उन्होंने अपने संबोधन में कही। उनका यह बयान ऐसे समय में आया है, जब देश के लंबे समय से सत्ता में रहे नेता निकोलस मादुरो को अमेरिका की कार्रवाई के बाद सत्ता से हटा दिया गया है। डेल्सी रोड्रिगेज ने कहा कि वेनेजुएला से होने वाली तेल बिक्री से मिलने वाली आय का इस्तेमाल देश की बदहाल स्वास्थ्य सेवाओं को मजबूत करने, आर्थिक विकास और बुनियादी ढांचे की परियोजनाओं पर किया जाएगा। उन्होंने कहा कि तेल से होने वाली कमाई संकट से जूझ रहे क्षेत्रों के लिए बेहद जरूरी है। अपने भाषण में रोड्रिगेज ने भविष्य को लेकर एक अलग दृष्टिकोण पेश किया। उन्होंने अपने पूर्ववर्ती से अलग रुख अपनाते हुए कहा कि अमेरिका के साथ कूटनीति से डरने की जरूरत नहीं है। रोड्रिगेज ने कहा कि उन्हें अब अमेरिका के ट्रंप प्रशासन और पूर्व राष्ट्रपति निकोलस मादुरो के प्रति वफादार सरकारी तंत्र के बीच संतुलन बनाकर चलना होगा। रोड्रिगेज पहले उपराष्ट्रपति रह चुकी हैं।

खैबर पख्तूनख्वा : सुरक्षा बलों ने मारे 13 विद्रोही : इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के उत्तर-पश्चिमी प्रांत खैबर पख्तूनख्वा में सुरक्षा बलों ने दमनकारी कार्रवाई करते हुए दो अलग-अलग अभियानों में 13 विद्रोहियों को मार गिराया है। यह कार्रवाई 13 और 14 जनवरी की दरम्यानी रात को की गई। पाकिस्तानी सेना की मीडिया शाखा इंटर-सर्विसेज पब्लिक रिलेशंस ने बृहस्पतिवार को इसकी पुष्टि की। आईएसपीआर के अनुसार, मारे गए विद्रोही 'फितना अल खवारिज' से जुड़े थे, जो प्रतिबंधित संगठन तहरीक-ए-तालिबान पाकिस्तान (टीटीपी) के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला शब्द है। खुफिया जानकारी के आधार पर पहला अभियान बन्नू जिले में चलाया गया, जहां आठ विद्रोही ढेर किए गए। दूसरा अभियान कुर्रम जिले में हुआ, जिसमें पांच विद्रोही मारे गए।

चीन के 5 फीसदी विकास लक्ष्य पर संकट, हाईटेक रणनीति से नहीं बन रही बात

बीजिंग, एजेंसी। चीन की अर्थव्यवस्था को रियल एस्टेट संकट से बाहर निकालने के लिए एआई, रोबोटिक्स व इलेक्ट्रिक वाहनों जैसे हाईटेक उद्योगों पर लगाया गया दांव नतीजे देने में सक्षम नहीं हो रहा है। अमेरिकी रिसर्च संस्था रॉडियम ग्रुप के मुताबिक, चीन को 5 फीसदी जीडीपी वृद्धि बनाए रखनी है, तो नए उद्योगों को हर साल निवेश वृद्धि को 2 पॉइंट ऊपर ले जाना होगा। यह मामूली हिस्सा नहीं, बल्कि निवेश वृद्धि दर में बड़ी बढ़ोतरी है, जो मौजूदा हालात में हासिल करना कठिन नजर आता है।

2023 से 2025 के बीच एआई, रोबोटिक्स और इलेक्ट्रिक कारों जैसे नए उद्योगों ने आर्थिक उत्पादन वृद्धि की रफ्तार को मिलाकर सिर्फ 0.8 पॉइंट ऊपर किया। रियल एस्टेट और अन्य पारंपरिक क्षेत्रों की कमजोरी ने आर्थिक वृद्धि को 6 पॉइंट नीचे खींच लिया। यह अंतर दिखाता है

कि हाई-टेक सेक्टर भले ही बढ़ रहे हों, लेकिन वे अभी इतने बड़े और प्रभावशाली नहीं हैं कि प्रॉपर्टी और पारंपरिक उद्योगों में आई गिरावट से पैदा हुए दबाव की भरपाई कर सकें। हाल के वर्षों में बीजिंग ने लगातार करीब 5 फीसदी जीडीपी वृद्धि का लक्ष्य रखा है।

2.8 ट्रिलियन युआन के निवेश का दबाव : इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए इस साल ही 2.8 ट्रिलियन युआन के अतिरिक्त निवेश की जरूरत होगी। यह 2025 के मुकाबले 120 फीसदी अधिक है। एआई या रोबोटिक्स जैसे कुछ सेक्टरों में निवेश तेज हो सकता है, लेकिन उभरते उद्योगों के लिए इतनी तेज और टिकाऊ रफ्तार बनाए रखना मुश्किल होगा। इलेक्ट्रिक वाहन उद्योग सबसे तेज वृद्धि दर पहले ही देख चुका है व आने वाले वर्षों में रफ्तार धीमी पड़ सकती है।

रोजगार संकट और ऑटोमेशन का जोखिम : चीन के नए औद्योगिक सेक्टर कर्मचारियों को उच्च वेतन तो देते हैं, लेकिन वे पारंपरिक उद्योगों की तुलना में काफी कम रोजगार देते हैं। फैक्टरी ऑटोमेशन में वृद्धि और वैश्विक मैन्युफैक्चरिंग में चीन के पहले से मौजूद 30 फीसदी हिस्से के चलते एक दशक में 10 करोड़ तक नौकरियां खत्म होने का खतरा है। पिछले साल चीन की शहरी बेरोजगारी दर अधिकांश समय 5 प्रतिशत से ऊपर रही। युवाओं में बेरोजगारी इससे लगभग तीन गुना अधिक दर्ज की गई।

प्रॉपर्टी: अर्थव्यवस्था पर भारी बोझ : सरकार हाई-टेक विकास को प्राथमिकता दे रही है लेकिन रियल एस्टेट संकट से निपटने के लिए सीमित कदम उठाए हैं। एक समय यह सेक्टर चीन की जीडीपी के एक-चौथाई से अधिक योगदान देता था। पिछले साल नए घरों की बिक्री 2009 के बाद के सबसे निचले स्तर पर पहुंच गई। कुल वृद्धि फिर भी दबाव में : निवेश फर्म केकेआर के अनुसार प्रॉपर्टी सेक्टर की कमजोरी इस साल चीन की जीडीपी वृद्धि से 1.2 पॉइंट घटा सकती है। डिजिटल तकनीकों से अनुमानित 2.6 पॉइंट के योगदान के बावजूद कुल वृद्धि दर 4.6 फीसदी के आसपास रह सकती है। भले ही 2026 के लिए 5 फीसदी का लक्ष्य रखा जाए, लेकिन रियल एस्टेट की सुस्ती और कमजोर रोजगार बाजार इस पर सवाल खड़े करते हैं।

क्या अब थम जाएगा यूक्रेन-रूस संघर्ष?: ट्रंप के शांति वार्ता प्रस्ताव पर मॉस्को सहमत; लेकिन कीव पर लगाए ये आरोप

मॉस्को, एजेंसी। रूस ने यूक्रेन युद्ध को खत्म करने के लिए चल रही शांति वार्ता को लेकर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के रुख का समर्थन किया है। क्रेमलिन ने गुरुवार को कहा कि वह ट्रंप के इस आकलन से सहमत है कि यूक्रेन शांति समझौते की राह में बाधा बन रहा है। इस पर यूरोप की ओर से तीखी प्रतिक्रिया सामने आई है। पोलैंड के राष्ट्रपति ने इसके लिए रूस को जिम्मेदार ठहराया है।

ट्रंप के बयान पर रूस : क्रेमलिन के प्रवक्ता दिमित्री पेस्कोव ने कहा, हां, हम इससे सहमत हो सकते हैं... वाकई ऐसा ही है। उनकी यह टिप्पणी ट्रंप के उस बयान के बाद आई है, जिसमें उन्होंने यूक्रेनी राष्ट्रपति वोलोदिमिर

जेलेंस्की को अमेरिकी नेतृत्व वाली शांति वार्ता में अड़चन बताया था। रूस का यह रुख यूरोपीय नेताओं से अलग है। यूरोपीय नेता लगातार राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन पर बातचीत में देरी करने का आरोप लगाते रहे हैं। उनका कहना है कि एक ओर रूस बातचीत टाल रहा है, तो दूसरी ओर उसकी सेना यूक्रेन के भीतर और आगे बढ़ने की कोशिश कर रही है और यूक्रेनी शहरों पर लगातार हमले हो रहे हैं। रॉयटर्स को दिए एक इंटरव्यू में ट्रंप ने कहा, मुझे लगता है कि पुतिन समझौता करने के लिए तैयार हैं, लेकिन यूक्रेन इसके लिए कम तैयार दिखता है। उन्होंने जेलेंस्की को समझौते में बाधा डालने वाला करार दिया। ट्रंप के इस बयान पर यूरोप की ओर से तीखी प्रतिक्रिया भी सामने आई है। पोलैंड के प्रधानमंत्री टस्क ने एक्स पर लिखा, अमेरिका द्वारा तैयार की गई शांति योजना को रूस ने खारिज किया है, जेलेंस्की ने नहीं। इस बीच रूसी राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन ने भी गुरुवार को संकेत दिए कि किसी भी संभावित शांति समझौते में रूस सुरक्षा गारंटी की मांग करेगा। क्रेमलिन में विदेशी राजदूतों से मुलाकात के दौरान पुतिन ने कहा, सुरक्षा सार्वभौमिक, समान और अविभाज्य होनी चाहिए। किसी की सुरक्षा दूसरों की कीमत पर सुनिश्चित नहीं की जा सकती। उन्होंने चेतावनी दी कि यदि ऐसा नहीं हुआ तो रूस अपने तय लक्ष्यों को हासिल करता रहेगा। हालाकि अमेरिकी प्रशासन का इस मुद्दे पर रुख ट्रंप के विपरीत है। अमेरिका ने सोमवार को रूस पर आरोप लगाया था कि वह युद्ध को खतरनाक और समझ से बाहर तरीके से बढ़ा रहा है, जबकि ट्रंप प्रशासन शांति वार्ता को आगे बढ़ाने की कोशिश कर रहा है।

ट्रम्प ने अमेरिका के मिनेसोटा में सेना तैनात करने की धमकी दी, अप्रवासियों की गिरफ्तारी के बाद हिंसा भड़की

वाशिंगटन, एजेंसी। राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने चेतावनी दी है कि वह मिनेसोटा में अमेरिकी सैनिकों को तैनात करने के लिए सदियों पुराने कानून का सहारा ले सकते हैं। ट्रम्प ने कहा कि 'अगर मिनेसोटा के भ्रष्ट राजनेता कानून का पालन नहीं करते और विद्रोहियों को आईसीई पर हमला करने से नहीं रोकते तो मैं विद्रोह अधिनियम लागू करूंगा।

विद्रोह अधिनियम पहली बार 1792 में पारित हुआ और 1871 में संशोधित किया गया। यह कानून राष्ट्रपति को सैन्य बलों को तैनात करने की अनुमति देता है ताकि विद्रोह या अशांति को कंट्रोल किया जा सके। ट्रम्प का यह बयान मिनियापोलिस में इमिग्रेशन एंड कस्टम्स एनफोर्समेंट (आईसीई) एजेंटों की बढ़ी मौजूदगी और दो फायरिंग घटनाओं के बाद सामने आया है। पहली घटना में एक आईसीई एजेंट ने अमेरिकी नागरिक रेनी गुड को गोली मार दी थी, जबकि दूसरी में एक वेनेजुएलाई नागरिक घायल हुआ। ट्रम्प पिछले कई हफ्तों से मिनेसोटा के डेमोक्रेट नेताओं से नाराज हैं। उन्होंने राज्य में रहने वाले सोमाली मूल के लोगों को कचरा बताते हुए देश से बाहर फेंकने जैसी टिप्पणी भी की है। ट्रम्प प्रशासन पहले ही मिनियापोलिस इलाके में करीब 3,000 अधिकारियों को तैनात कर चुका है, जो हथियारों के साथ सैन्य जैसी वर्दी और मास्क पहनकर गश्त कर रहे हैं। डोनाल्ड ट्रम्प ने 2025 में सत्ता संभालने के बाद बड़े पैमाने पर अवैध अप्रवासियों की गिरफ्तारी और डिपोर्टेशन की सख्त मुहिम शुरू की है। ये एजेंट हजारों लोगों को गिरफ्तार कर रहे हैं। स्थानीय लोग इसे नस्लीय भेदभाव और आतंक मान रहे हैं। इन अधिकारियों के खिलाफ दिन-रात विरोध प्रदर्शन हो रहे हैं। स्थानीय लोग सीटी बजा रहे हैं, ढोल-टैंबरीन पीट रहे हैं और नारे लगा रहे हैं। बुधवार रात उस इलाके में बड़ी भीड़ जमा हुई, जहां वेनेजुएलाई नागरिक को गोली लगी थी। इस दौरान अधिकारियों ने ग्रेनेड छोड़े और आंसू गैस का इस्तेमाल किया। इन घटनाओं के बाद ट्रम्प प्रशासन और मिनेसोटा के नेता एक-दूसरे पर हिंसा भड़काने का आरोप लगा रहे हैं। ट्रम्प पहले भी डेमोक्रेट शासित शहरों में नेशनल गार्ड को फेडरल कंट्रोल में लेकर इमिग्रेशन कानून लागू करवा चुके हैं। लॉस एंजिल्स में की गई ऐसी ही कार्रवाई को एक जज ने दिसंबर में असंवैधानिक बताया था।

मचाडो के प्रेसिडेंट बनने की चर्चा थी, लेकिन ट्रम्प का समर्थन नहीं; अब बोलीं- अमेरिकी राष्ट्रपति पर भरोसा

वॉशिंगटन डीसी, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने गुरुवार को व्हाइट हाउस में वेनेजुएला की विपक्षी नेता मारिया कोरिना मचाडो से मुलाकात की। वेनेजुएला के राष्ट्रपति निकोलस मादुरो को अगवा करने के बाद यह उनकी किसी भी वेनेजुएलाई नेता से पहली आमने-सामने की मुलाकात थी। मुलाकात के बाद माचाडो ने कहा कि उन्होंने ट्रम्प को नोबेल शांति पुरस्कार का मेडल भेंट किया है। उन्होंने कहा, 'मुझे लगता है कि आज हम वेनेजुएलावासियों के लिए एक ऐतिहासिक दिन है।' बैठक के बाद पत्रकारों से बातचीत में मचाडो ने ट्रम्प को अपना पुरस्कार सौंपने के बारे में बताया, लेकिन उन्होंने दूसरी कोई जानकारी नहीं दी। वहीं, व्हाइट हाउस ने भी यह नहीं बताया कि ट्रम्प ने मेडल स्वीकार किया या नहीं। व्हाइट हाउस छोड़ने के बाद मचाडो ने बाहर जुटे समर्थकों से स्पेनिश में कहा, 'हम राष्ट्रपति ट्रम्प पर भरोसा कर सकते हैं।' हालांकि, ट्रम्प ने अब तक माचाडो को वेनेजुएला की नई नेता के रूप में समर्थन नहीं दिया है। इसकी बजाय वे वेनेजुएला की कार्यवाहक राष्ट्रपति डेल्सी रोड्रिग्ज के साथ काम कर रहे हैं। नोबेल संस्थान बोला- पदक के मालिक बदल सकते हैं, लेकिन उपाधि नहीं ट्रम्प हमेशा नोबेल शांति पुरस्कार लेने की इच्छा जताते रहे हैं। जब यह मचाडो को मिला तो उन्होंने नाराजगी जताई। दूसरी ओर नोबेल कमेटी ने पहले कहा था कि नोबेल पुरस्कार की घोषणा हो जाने के बाद इसे रद्द नहीं किया जा सकता। न ही इसे साझा किया जा सकता है और न ही किसी और को हस्तांतरित किया जा सकता है। यह निर्णय अंतिम है और हमेशा के लिए मान्य रहेगा। वहीं, गुरुवार को व्हाइट हाउस में हुई बैठक से पहले नोबेल संस्थान ने ङ्क पर पोस्ट कर बताया कि एक पदक के मालिक बदल सकते हैं, लेकिन नोबेल शांति पुरस्कार विजेता की उपाधि नहीं बदल सकती। अक्टूबर 2025 में मचाडो को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उन्हें 'वेनेजुएला के लोगों के

लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए उनके प्रयासों और तानाशाही से शांतिपूर्ण लड़ाई' के लिए यह सम्मान मिला था।

मचाडो बोली- वॉशिंगटन के उत्तराधिकारी को मेडल लौटाया : मचाडो ने ट्रम्प को नोबेल पुरस्कार देते हुए 1825 में अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के हीरो मार्क्विस डे लाफायेट का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा, '200 साल पहले मार्क्विस डे लाफायेट ने जॉर्ज वॉशिंगटन की तस्वीर वाला मेडल साइमन बोलिवर को दिया था, जो अमेरिका और वेनेजुएला के बीच स्वतंत्रता की लड़ाई में भाईचारे का प्रतीक था। अब, बोलिवर के लोगों ने वॉशिंगटन के उत्तराधिकारी (ट्रम्प) को नोबेल मेडल लौटाया है। लाफायेट ने दक्षिण अमेरिका के आजादी के नेता साइमन बोलिवर को एक खास सोने का पदक भेजा। इस पदक पर अमेरिका के पहले राष्ट्रपति जॉर्ज वॉशिंगटन की तस्वीर बनी हुई थी। यह तोहफा दोनों देशों के बीच भाईचारे और तानाशाही के खिलाफ साझा लड़ाई का प्रतीक था। बोलिवर ने इस पदक को बहुत सम्मान दिया और इसे हमेशा पहनते रहे। वेनेजुएला के लोग खुद को बोलिवर के वंशज मानते हैं। ट्रम्प बोले- मचाडो एक अद्भुत महिला, उनसे मिलना सम्मानजनक ट्रम्प ने सोशल मीडिया ट्रूथ सोशल पर पोस्ट कर मारिया कोरिना मचाडो से मुलाकात को सम्मानजनक बताया। उन्होंने कहा- मचाडो एक अद्भुत महिला हैं जिन्होंने बहुत कुछ बर्दाश्त किया है। मारिया ने मेरे अच्छे कामों के लिए मुझे अपना नोबेल शांति पुरस्कार प्रदान किया। हमारे बीच का यह आपसी सम्मान कमाल का है। नोबेल पुरस्कार गिफ्ट करने को लेकर नियम क्या हैं पुरस्कार की घोषणा के बाद इसे रद्द नहीं किया जा सकता। एक बार विजेता घोषित हो गया, तो फैसला हमेशा के लिए अंतिम होता है। पुरस्कार को शेयर नहीं किया जा सकता। कोई दो या ज्यादा लोग इसे साथ में नहीं ले सकते। पुरस्कार को ट्रांसफर या गिफ्ट नहीं किया जा सकता। इसे किसी दूसरे व्यक्ति को नहीं दिया जा सकता। नोबेल लॉरिएट की उपाधि कभी नहीं बदल सकती। सिर्फ मूल विजेता ही हमेशा 'नोबेल पुरस्कार विजेता' कहलाएगा। पदक सोने से बना पुरस्कार है, जो व्यक्तिगत संपत्ति की तरह है। इसे गिफ्ट किया जा सकता है, बेचा जा सकता है, या उधार दिया जा सकता है। यह नियम नोबेल फाउंडेशन के स्टैट्यूट्स पर आधारित हैं। पुरस्कार देने वाली संस्था के फैसले पर कोई अपील नहीं की जा सकती और पुरस्कार स्थायी होता है। बैठक के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में वेनेजुएला में संभावित चुनावों के लिए कोई समयसीमा तय की गई है।

स्वामी, मुद्रक व् प्रकाशकः सुरेश मौर्या द्वारा अष्ठ विनायक ओफ़्सेट एफपी, 149 प्लोट 26 खोडीयारनगर, सिद्धिविनायक मंदीर के पास ,भाटेना) हो.सो अंजना सुरत गुजरात से मुद्रित एवं 191 महादेव नगर उधना सुरत गुजरात से प्रकाशित संपादक : सुरेश मौया (M) 9879141480 RNI No.:GUJHIN/2018/75100 (Subject to Surat jurisdiction)

Web site : www.krantisamay.com & epaper.krantisamay.com www.facebook.com/krantisamay1 www.twitter.com/krantisamay1

29 नगर निगमों में 17 पर अकेले बीजेपी का कब्जा

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र नगर निगम चुनाव में बीजेपी ने एकतरफा जीत दर्ज की। कुल 29 नगर निगमों में से 17 पर अकेले भाजपा का कब्जा हो गया है। यानी इन निगमों में मेयर बनाने जा रही है। वहीं, उसके नेतृत्व वाले महायुति गठबंधन ने 8 निगमों में जीत हासिल की। इस तरह भाजपा गठबंधन को 25 नगर निगमों में जीत दर्ज हुई है। भाजपा-शिवसेना (शिंदे) के गठबंधन ने उद्धव ठाकरे से बीएमसी छीनकर, उनका तीन दशक पुराना दबदबा खत्म कर दिया है। बीएमसी में भाजपा 89 जीतकर सबसे बड़ी पार्टी बनी है। राज्य चुनाव आयोग की तरफ से घोषित फाइनल रिजल्ट के मुताबिक बीजेपी+ ने 29 नगर निगमों में 2,869 सीटों में से 1,425 सीटें जीती हैं। शिवसेना ने 399,

● महाराष्ट्र नगर निगम चुनाव में बीजेपी ने दर्ज की एकतरफा जीत

कांग्रेस ने 324, एनसीपी ने 167, शिवसेना (यूबीटी) ने 155, एनसीपी (एसपी) ने 36, एमएनएस ने 13, बीएसपी ने 6, एसईसी में रजिस्टर्ड पार्टियों ने 129, गैर-मान्यता प्राप्त पार्टियों ने 196 और 19 सीटें निर्दलीयों ने जीतीं। महाराष्ट्र चुनाव में मिली हार के बाद यूबीटी के संजय राउत ने एकनाथ शिंदे को शिवसेना का जयचंद बताया। उन्होंने लिखा-अगर एकनाथ शिंदे शिवसेना के जयचंद नहीं बनते, तो बीजेपी को मुंबई में कभी मेयर नहीं मिलता। मराठी लोग शिंदे को जयचंद के रूप में याद रखेंगे। राज ठाकरे ने कहा दुख की बात है कि मनसे उम्मीद के मुताबिक कामयाबी नहीं मिली, लेकिन हम हिम्मत हारने वालों में से नहीं हैं। हमारी लड़ाई मराठी लोगों, मराठी भाषा, मराठी पहचान और एक खुशहाल महाराष्ट्र के लिए है। यह लड़ाई हमारे वजूद की है। ऐसी लड़ाइयां लंबे समय तक चलती हैं। उद्धव ठाकरे ने कहा यह लड़ाई अभी खत्म नहीं हुई है। यह तब तक ऐसे ही जारी रहेगी जब तक मराठी व्यक्ति को वह सम्मान नहीं मिल जाता जिसके वे हकदार हैं। संजय राउत ने कहा कि अगर एकनाथ शिंदे शिवसेना के जयचंद नहीं बनते, तो बीजेपी को मुंबई में कभी मेयर नहीं मिलता!

गणतंत्र दिवस से पहले आतंकियों के निशाने पर दिल्ली

● पंजाब के गैंगस्टर हो गए हैं सक्रिय ● खालिस्तानी-बांग्लादेशी आतंकी संगठनों के लिए कर रहे काम

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत की इंटेलीजेंस एजेंसियों ने गणतंत्र दिवस से पहले दिल्ली में आतंकी हमले को लेकर अलर्ट जारी किया है। न्यूज एजेंसी के अनुसार, इंटेलीजेंस ब्यूरो से जुड़े सूत्रों ने बताया है कि प्रतिबंधित खालिस्तानी और बांग्लादेश के आतंकी संगठन दिल्ली समेत देश के कई शहरों को निशाना बनाने की कोशिश कर सकते हैं। सूत्रों ने बताया कि पंजाब के कुछ गैंगस्टर विदेश से संचालित खालिस्तानी और कट्टरपंथी हैंडलरों के लिए फुट सोल्जर की भूमिका निभा रहे हैं। ये हैंडलर अपने एजेंडे को आगे बढ़ाने और भारत की आंतरिक सुरक्षा को बाधित करने के लिए क्रिमिनल नेटवर्क का इस्तेमाल कर रहे हैं। अलर्ट के मुताबिक, ये

गैंगस्टर हरियाणा, दिल्ली-एनसीआर, उत्तर प्रदेश और राजस्थान में ऐक्टिव हैं और धीरे-धीरे खालिस्तानी आतंकी संगठनों से संपर्क बढ़ा रहे हैं। दिल्ली में 10 नवंबर, 2025 को लाल किला के पास एक कार में आत्मघाती आतंकी हमला हुआ था, जिसमें 15 लोगों की मौत हुई थी। इधर, 26 जनवरी को दिल्ली में इंडिया गेट के सामने कर्तव्य पथ पर होने वाली गणतंत्र दिवस परेड से पहले नॉर्थ डिस्ट्रिक्ट पुलिस ने संवेदनशील और भीड़भाड़ वाले इलाकों में मॉक ड्रिल की। इससे पहले रेड फोर्ट, कश्मीरी गेट, चांदनी चौक, मेट्रो स्टेशनों पर भी मॉक ड्रिल की गई। इनका उद्देश्य आतंक हमलों को रोकने की तैयारियों की जांच और संबंधित एजेंसियों, आम लोगों को सतर्क करना था। 26 जनवरी को गणतंत्र दिवस परेड में कर्तव्य पथ पर कम से कम 30 झांकियां निकलेंगी। ये झांकियां 'स्वतंत्रता का मंत्र-वंदे मातरम' और 'समृद्धि का मंत्र-आत्मनिर्भर भारत' थीम पर आधारित होंगी।

दुनिया का सबसे बड़ा शिवलिंग विराट रामायण मंदिर में स्थापित

मोतिहारी (एजेंसी)। विश्व के सबसे बड़े और चर्चित शिवलिंग को 54 दिनों की कड़ी साधना के बाद मोतिहारी में बन रहे विराट रामायण मंदिर में स्थापित कर दिया गया। बनारस और

सीएम नीतिश

डिप्टी सीएम सम्राट और विजय सिन्हा बने गवाह

पटना के पंडितों के वैदिक मंत्रोच्चार के बीच यज्ञ मंडप में विधि-विधान से पूजा के बाद रामायण मंदिर परिसर में शिवलिंग की स्थापना कार्य शनिवार (17 जनवरी 2026) संपन्न हुआ। महावीर मंदिर ट्रस्ट पटना की अगुआई में मोतिहारी के कल्याणपुर पंचायत के कैथवलिया गांव में शिवलिंग स्थापना के ऐतिहासिक क्षणों के गवाह बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार, डिप्टी सीएम सम्राट चौधरी, विजय कुमार सिन्हा समेत लाखों लोग बने।

विश्व के करोड़ों लोगों ने इंटरनेट पर पूरेविधान को ऑनलाइन भी देखा। महावीर मंदिर ट्रस्ट के सदस्य और आचार्य किशोर कुणाल के पुत्र शायन कुणाल और उनकी पत्नी सांसद शाम्भवी चौधरी ने यजमान की भूमिका में भोलेनाथ का आवाहन किया। बनारस, अयोध्या व हरिद्वार से पहुंचे आचार्यों ने विधि- विधान से पूजा संपन्न कराई।

ईरान से लौटे भारतीय दिल्ली एयरपोर्ट पर फूट-फूटकर रोए

कहा-वहां इंटरनेट नहीं, हालात बदतर, हिंसा में 3 हजार+मौतें

नई दिल्ली (एजेंसी)। ईरान में हिंसा के बीच वहां फंसे कई भारतीय नागरिक शुक्रवार देर रात दिल्ली एयरपोर्ट पहुंचे। इनमें ज्यादातर स्टूडेंट्स हैं। इनमें कुछ भारत सरकार के पहल से भारत लौटे, तो कुछ निजी फ्लाइट्स से अपने खर्च पर वापस आए। दिल्ली एयरपोर्ट पर अपने परिवार से गले लगकर कई भारतीय नागरिक फूट-फूटकर रोने लगे। उन्होंने बताया कि हिंसा के दौरान वे किस परिस्थितियों में ईरान में फंसे थे। ईरान से लौटे जम्मू-कश्मीर के एक युवक ने कहा- वहां हालात बहुत खराब हैं। खतरनाक विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं। ईरान से लौटी मेडिकल स्टूडेंट अर्श दहरा ने बताया कि भारतीय दूतावास ने उनसे संपर्क किया था, लेकिन वह एक निजी फ्लाइट से खुद दिल्ली आई हैं। एक अन्य युवक ने कहा- हम वहां एक महीने तक फंसे रहे।एक-दो हफ्तों से ज्यादा परेशानी होने लगी। घर से बाहर निकलते, तो प्रदर्शनकारी गाड़ी के सामने आ जाते थे। ईरान में वहां की करेंसी 'रियाल' के नीचे गिरने से महंगाई चरम पर है।

बंगाल में घुसपैठियों को वोटर बना रही है टीएमसी

● मोदी बोले-इन्हें बसाकर गरीबों का हक छीना जा रहा ● पीएम ने दी चेतावनी, भाजपा इन्हें देश से निकालेगी

कोलकाता/गुवाहाटी (एजेंसी)। पश्चिम बंगाल के मालदा में शनिवार को पीएम मोदी ने कहा कि बंगाल के सामने एक बड़ी चुनौती घुसपैठ की है। बंगाल के कई इलाकों में आबादी का संतुलन बिगड़ रहा है। टीएमसी घुसपैठियों को वोटर बना रही। गरीबों का हक छीना जा रहा है। भाजपा सरकार बनते ही घुसैपठियों पर एक्शन लिया जाएगा। आयुष्मान भारत योजना पर बात करते हुए पीएम ने कहा कि टीएमसी वालों को आपकी तकलीफ की कोई चिंता नहीं है। यहां आयुष्मान योजना लागू नहीं होने दी गई है। ऐसी पत्थर दिल सरकार की बंगाल से विदाई जरूरी है। पीएम ने मालदा में भारत की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन का उद्घाटन किया। यह ट्रेन हावड़ा से गुवाहाटी

के बीच चलेगी। उन्होंने ट्रेन के ड्राइवर से मुलाकात और उसके बारे में जाना। पीएम ने ट्रेन में मौजूद बच्चों से भी बात की।

पत्थरदिल सरकार की बंगाल से विदाई जरूरी- टीएमसी वालों को आपकी तकलीफ की कोई चिंता नहीं है। वो अपनी तिजोरी भरने में जुटे हैं। मैं चाहता हूं कि देश की तरह बंगाल के गरीबों को 5 लाख का मुफ्त इलाज मिले, यहां आयुष्मान भारत योजना लागू हो। बंगाल देश का एक मात्र ऐसा राज्य है। यहां ये योजना लागू नहीं होने दी गई है। ऐसी पत्थर दिल सरकार, ऐसी निर्मम सरकार की बंगाल से विदाई जरूरी है। बंगाल के युवा साथियों, माता-बहनों की बड़ी जिम्मेदारी है। एक महिला पत्रकार के साथ टीएमसी के गुंडों ने कितनी अभद्रता की। स्कूल, कॉलेज, यूनिवर्सिटी में बेटियां सुरक्षित नहीं। निर्ममता ऐसी की बेटियों की सुनवाई नहीं होगी। पीड़ितों को बात-बात पर कोर्ट जाना पड़ता है। इसे बदलना होगा। ये काम कौन करेगा- ये काम आपका एक वोट करेगा।

पूर्वी भारत के लोगों का विश्वास भाजपा के नाम

हमारा देश 2047 तक विकसित होने पर काम कर रहा है। इसलिए लिए पूर्वी भारत का विकास होना जरूरी है। पूर्वी भारत को दशकों तक नफरत करने वालों ने जकड़ रखा था। भाजपा ने नफरत की राजनीति करने वालों से पूर्वी भारत को मुक्त किया है। पूर्वी भारत के लोगों का विश्वास भाजपा के नाम है। उनका विश्वास भाजपा के साथ है। कुछ दिन पहले बिहार में बीजेपी-एनडीए की सरकार बनी है। यानी बंगाल की हर दिशा में बीजेपी के सुशासन की सरकार है। अब बंगाल की बारी है। इसलिए बिहार चुनाव की जीत के बाद मैंने कहा था- मां गंगा के आशीर्वाद से अब बंगाल में भी विकास की गंगा बहेगी। बीजेपी ये काम करके रहेगी।

बंगाल के सामने एक बड़ी चुनौती घुसपैठ की है

आप देखिए दुनिया के जो विकसित देश हैं, समृद्ध देश हैं, जिन्हें पैसों की कमी नहीं, वे भी घुसपैठियों को निकाल रहे हैं। प. बंगाल में भी घुसपैठियों को बाहर करना जरूरी है। एक एक घुसपैठिए को निकालना जरूरी है। टीएमसी के रहते ये संभव नहीं है। ये जमीन-हक, बहन-बेटियों की रक्षा नहीं करेंगे। इन्हें सत्ता से बाहर निकालना चाहिए। मैं मालदा की बाढ़ राहत की रिपोर्ट देख रहा था। टीएमसी के चहेतों के खातों में 40-40 बार बाढ़ राहत का पैसा भेजा गया। जो इसके हकदार नहीं थे, उन्हें लाखों रुपए दिया गया। जिन पर संकट आया उन्हें कुछ नहीं मिला। भाजपा की सरकार बनते ही, टीएमसी के ऐसे सारे काले कारनामें बंद किए जाएंगे। कल ही महाराष्ट्र में शहरी निकाय के नतीजे आए, इसमें बीजेपी को ऐतिहासिक जीत हासिल हुई। खासतौर पर महाराष्ट्र की राजधानी मुंबई में पहली बार बीजेपी को रिकॉर्ड जीत मिली है। जहां कभी बीजेपी के लिए जीतना असंभव था।

दूषित पानी पीकर मरे लोगों के परिजनों से मिले राहुल

● दिया एक-एक लाख रुपए का चेक, एमपी सरकार को घेरा

इंदौर (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी शनिवार को इंदौर पहुंचे और यहां उन्होंने भागीरथपुरा इलाके में दूषित पानी पीने की वजह से मारे गए लोगों के परिजनों से मुलाकात की। इस दौरान उन्होंने ना केवल सरकार की स्मार्ट सिटीज योजना को लेकर तंज कसा, साथ ही सरकार से लोगों को साफ पानी मुहैया कराने की मांग भी की। राहुल गांधी ने गंदे पानी की वजह से जान गंवाने वाले लोगों के परिजनों की आर्थिक मदद करते हुए उन्हें 1-1 लाख रुपए का मुआवजा राशि का चेक भी सौंपा। राहुल से मिलने के बाद इलाके में रहने वाली एक महिला ने बताया कि उनके घरों में अब भी पानी नहीं आ रहा है और वो लोग आरओ का पानी खरीद-खरीदकर पी रहे हैं। पेयजल त्रासदी के पीड़ित लोगों के साथ मिलने के बाद मीडिया से बात करते हुए राहुल गांधी ने कहा, 'देश के लोगों से कहा गया था कि देश को स्मार्ट शहर दिए जाएंगे। लेकिन इंदौर एक नए मॉडल का स्मार्ट शहर है जिसमें पीने का साफ पानी तक नहीं है और लोगों को डराया जा रहा है।' इंदौर में लोगों को पीने का साफ पानी नहीं मिल पा रहा है।

सरकार अपनी जिम्मेदारी निभाने में बिल्कुल नाकाम

लोकसभा में विपक्ष के नेता ने कहा कि लोगों को साफ पानी मुहैया कराना और प्रदूषण कम करना सरकार की जिम्मेदारी है, लेकिन ये जिम्मेदारियां सरकार नहीं निभा रही है। राहुल ने कहा कि आखिर इंदौर की इस पेयजल त्रासदी के लिए सरकार में कोई तो जिम्मेदार होगा, इसलिए सरकार को इसकी कोई न कोई जिम्मेदारी तो लेनी ही चाहिए। आगे उन्होंने कहा, शहर में सरकार की लापरवाही से लोग दूषित पानी पीकर मरे हैं। ऐसे में सरकार को पीड़ितों की पूरी मदद करनी चाहिए और उन्हें पर्याप्त मुआवजा देना चाहिए।

महिला बोली-

राहुल जी ने सहयोग का आश्वासन दिया- उधर राहुल गांधी से मिलने के बाद शानू प्रजापति नाम की महिला ने कहा कि जब वो मुझसे मिले तो मैंने उनको बताया कि मेरी सास सीमा प्रजापति थीं, गंदा पानी पीने की वजह से दो उल्टी-दस्त में ही अचानकर उनकी मौत हो गई, हम लोग उन्हें लेकर अस्पताल भी नहीं पहुंच सके।
महिला ने बताया कि इसके बाद राहुल जी ने हमें सहयोग का आश्वासन दिया और मदद के तौर पर एक लाख रुपए का चेक भी दिया। महिला के अनुसार इससे पहले सरकार की तरफ से दो लाख रुपए का चेक दिया गया था। हालांकि महिला ने यह भी कहा कि एक लाख रुपए से क्या होगा, एक लाख का हम क्या करेंगे। कोई इंसान की कीमत नहीं होती है, एक लाख-दो लाख। हमें तो पानी चाहिए। हमारे वहां अभी भी पानी नहीं आ रहा है, बस टैंकर आ रहा है, लेकिन टैंकर से पानी पूरा नहीं हो पा रहा है। ऐसे में हम आरओ का पानी कब तक खरीदकर पिएंगे।

मैं विपक्ष का नेता, जनता का मुद्दा उठाने आया हूं

राज्य सरकार द्वारा इस मामले में राजनीति करने का आरोप लगाए जाने पर उन्होंने कहा, मैं विपक्ष का नेता हूं, यहां पर लोगों की मौत हुई है, यहां पर लोगों को साफ पानी नहीं मिल रहा है, मैं इनका मुद्दा उठाने आया हूं, इनकी मदद करने आया हूं। इसमें कोई गलत काम नहीं है, यह मेरा काम है। मेरी जिम्मेदारी बनती है कि हमारे देश में लोगों को साफ पानी नहीं मिल रहा है, मैं इनकी मदद करने आया हूं, इनके साथ खड़े होने आया हूं। आप इसको जो भी कहना चाहे कह लीजिए। राजनीति कहना चाहते हैं, या कुछ और कहना चाहते हैं, कह लीजिए। मुझे फर्क नहीं पड़ता है और मैं इनके साथ खड़ा हूं। इनको आप साफ पानी दिलवाइए।

हिमाचल कांग्रेस में राज्यसभा चुनाव से पहले मचा घमासान

● नेताओं में असंतोष, 'ऑपरेशन लोटस-2' की चर्चाएं तेज

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल की सत्तारूढ़ कांग्रेस में राज्यसभा चुनाव से पहले फरवरी 2024 जैसा असंतोष नजर आ रहा है। मंत्री विक्रमादित्य सिंह के बयान के बाद सुक्खू कैबिनेट दो-फाड़ दिख रही है। मंत्री बारी-बारी एक दूसरे पर तीखे जुबानी हमले बोल रहे हैं। बीजेपी इस फूट का फायदा उठाने की तैयारी में है। सियासी गलियारों में 'ऑपरेशन लोटस-2' की चर्चाएं तेज हो गई हैं। इन चर्चाओं को बीजेपी सांसद अनुराग ठाकुर के बयान ने हवा दे दी है। दिशा कमेटी की मीटिंग में आज सुबह ऊना पहुंचे अनुराग ठाकुर ने कहा- जिस तरह मंत्री लड़ रहे हैं, वह बड़ा होने का इशारा है। उन्होंने कहा- कांग्रेस का कुनबा कभी भी इस तरह नहीं बिखरा, जैसा अभी लग रहा है। बता दें कि राज्यसभा सांसद इंदू गोस्वामी का 6 साल का कार्यकाल 10 अप्रैल को पूरा हो रहा है।

भारत में कुछ अच्छा हो या बुरा, हिंदुओं से ही पूछा जाएगा

● महाराष्ट्र के संभाजीनगर से आरएसएस चीफ मोहन भागवत का बड़ा बयान

कहा-भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र का नाम नहीं, बल्कि देश का चरित्र है

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने शुक्रवार को कहा कि अगर भारत के साथ कुछ अच्छा या बुरा होता है, तो उसके लिए हिंदुओं से सवाल किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि भारत सिर्फ एक भौगोलिक क्षेत्र का नाम नहीं है, बल्कि यह देश के चरित्र का प्रतीक है। आरएसएस प्रमुख ने यह बात छत्रपति संभाजीनगर में एक कार्यक्रम के दौरान कही। मोहन भागवत ने कहा कि हिंदू समाज पारंपरिक रूप से समावेशी और सभी को स्वीकार करने वाला रहा है जो रीति-रिवाजों, पहनावे, खान-पान, भाषा, जाति और उपजाति में विविधता को अपनाता है और इन मतभेदों को संघर्ष का कारण नहीं बनने देता। भागवत ने कहा, ''अगर भारत में कुछ अच्छा या बुरा होता है, तो हिंदुओं से पूछा जाएगा। भारत केवल एक भौगोलिक क्षेत्र का नाम नहीं, बल्कि देश का चरित्र है।'' आरएसएस प्रमुख ने कहा, ''जो लोग एकीकरण में विश्वास रखते हैं, वे हिंदू समाज और देश के सच्चे चरित्र का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह परंपरा सदियों से आक्रमणों और विनाश के बावजूद संरक्षित रही है।

● **संघ चीफ ने स्थानीय उत्पादों के इस्तेमाल पर दिया जोर-** भागवत ने आत्मनिर्भरता और स्थानीय उत्पादों को इस्तेमाल करने पर जोर दिया है। उन्होंने कहा, ''हमें स्थानीय वस्तुएं खरीदनी चाहिए। जो चीज यहां नहीं बन सकती, उसे अन्य देशों से खरीदा जा सकता है। हमने आत्मनिर्भरता का रास्ता चुना है और हमें इसी रास्ते पर चलना चाहिए।'' उन्होंने कहा, ''हमें विदेशों में रोजगार सृजन की चिंता नहीं करनी चाहिए, यह उन्हें करना है। जब वैश्वीकरण की बात करते हैं, तो वे वैश्विक बाजार की अपेक्षा रखते हैं हम वैश्विक परिवार की अपेक्षा रखते हैं।'' भागवत ने हिंदुओं में एकता का आह्वान किया।

रेवाड़ी के किसान यशपाल 3 दिन रहेंगे राष्ट्रपति के मेहमान

● गणतंत्र दिवस पर होंगे सम्मानित, कैंसर से पिता को खोया, फिर अपनाई प्राकृतिक खेती

रेवाड़ी (एजेंसी)। रेवाड़ी जिले के गांव कंवाली के किसान यशपाल खोला तीन दिन तक राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू के मेहमान बनेंगे। देश के 77वें गणतंत्र दिवस के अवसर पर सम्मानित किए जाने वाले छह किसानों में यशपाल खोला का नाम भी शामिल है। इसके लिए राष्ट्रपति भवन की ओर से उन्हें आधिकारिक निमंत्रण मिला है। यशपाल खोला 25 जनवरी को अपनी पत्नी अनीता कुमारी के साथ दिल्ली रवाना होंगे और 28 जनवरी को वापस लौटेंगे। यशपाल ने साल 2018 में पिता की कैंसर से हुई मौत के बाद पूरी तरह प्राकृतिक खेती को अपना लिया था। हालांकि, उन्होंने प्राकृतिक खेती की शुरुआत साल 2014 में ही कर दी थी। जानकारी के अनुसार, इन किसानों को कार्यक्रम में शामिल होने के लिए आईसीएआर दिल्ली तक खुद जाना होगा। इससे आगे राष्ट्रपति भवन तक पहुंचाने और वहां रहने की पूरी व्यवस्था सरकार करेगी। डीसी ने बताया कि यशपाल ने न केवल खुद प्राकृतिक खेती को अपनाया, बल्कि एक बड़े रकबे को प्राकृतिक खेती में बदलने में अहम भूमिका निभाई। उन्होंने विभिन्न कृषि संस्थानों के साथ समन्वय स्थापित कर न केवल अपने खेतों, बल्कि अन्य किसानों के खेतों में भी प्राकृतिक उत्पादन को सफलतापूर्वक बढ़ावा दिया है। यशपाल खोला ने प्राकृतिक उत्पादों की रिटेल मार्केटिंग का एक प्रभावी और प्रेरक मॉडल भी विकसित किया है, जिससे किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिल रहा है और उपभोक्ताओं तक शुद्ध, सुरक्षित खाद्यान्न पहुंच रहा है। उनका यह मॉडल आज कई

किसानों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध हो रहा है। यशपाल खोला का कार्य न केवल मिट्टी और कृषि भूमि के स्वास्थ्य को बेहतर बनाने वाला है, बल्कि इससे किसानों की आय में वृद्धि, पर्यावरण संरक्षण तथा आमजन के स्वास्थ्य को सुरक्षित रखने में भी महत्वपूर्ण योगदान मिला है। उनके प्रयासों को राष्ट्रीय निर्माण की दिशा में एक सशक्त पहल के रूप में देखा जा रहा है। जिसकी सराहना समाज, सरकार और प्रशासन द्वारा लगातार की जाती रही है। राष्ट्रपति भवन की तरफ से यशपाल को भेजा गया निमंत्रण पत्र डाक कर्मियों और अधिकारियों ने सौंपा। निमंत्रण पत्र सौंपने वालों मे सहायक अधीक्षक डाकघर उपमंडल रेवाड़ी चरणजीत यादव, पोस्टमैन सोनू यादव, हनुमान, गोविंद (सहायक डाकपाल, डहिना उप डाकघर) तथा पोस्टमास्टर रामेहर शर्मा (कंवाली) शामिल रहे। यशपाल खोला ने कहा कि देश की प्रथम नागरिक से निमंत्रण मिलने मेरे लिए गर्व की बात है। तीन दिन राष्ट्रपति भवन में रहने का सम्मान और भी उत्साहवर्धक है। इससे न केवल मुझे और बेहतर करने की प्रेरणा मिलेगी, बल्कि दूसरे किसान भी प्राकृतिक खेती की तरफ आने को उत्साहित होंगे। यशपाल के परिवार में पत्नी अनीता के अलावा बेटी फलक राव, बेटा आरव और मां सुशीला देवी हैं। यशपाल ने बताया कि उन्होंने प्राकृतिक खेती तो 2014 में ही शुरू कर दी थी। जब 2018 में कैंसर से पिता की मौत हुई तो उसके बाद पूरी तरह से प्राकृतिक खेती करने और दूसरे किसानों को प्रेरित करने का निर्णय ले लिया था। यशपाल खोला अरावली किसान क्लब के प्रधान हैं। इसके साथ ही स्नातक एवं एचएयू से दो साल का डिप्लोमा किया और वे किसान रत्न अवार्डी हैं। वह न केवल प्राकृतिक तरीके से गेहूं और सब्जी और फल की पैदावार करते हैं।